तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-8, अंक - 7- 8, जून-जुलाई 2020, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

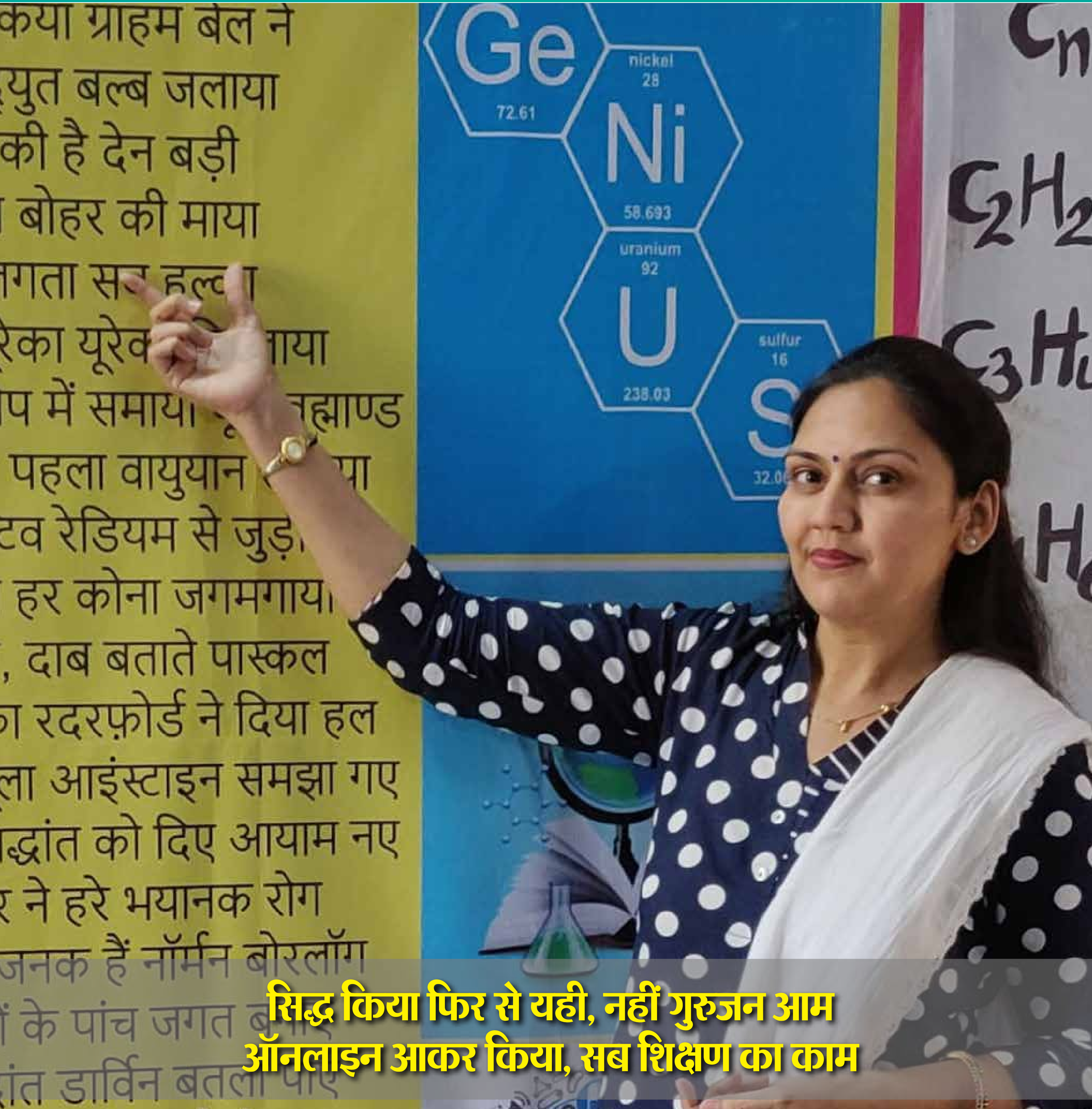

सिद्ध किया फिर से यही, नहीं गुरुजन आम
ऑनलाइन आकर किया, सब शिक्षण का काम

जल्दी से वे दिन आ जाएँ

स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जाएँ।
विद्यालय प्रांगण में फिर से
प्यारे बच्चे खिलखिलाएँ।।
भले ही हम ऑनलाइन पढ़ाते,
छात्रों से बातें कर पाते।।
कक्षा-कक्ष में जो सुकून था,
फोन भला कहाँ दे पाते।
ऑडियो-वीडियो छोड़-छिटक अब,
कर्मभूमि के दर्शन पाएँ।।
स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जाएँ।
कोरोना ने कहर कमाया,
हम सबको है घर में बिठाया,
हमने भी तो फर्ज़ न छोड़ा,
तुम पढ़ते रहे और हमने पढ़ाया,

नियमों की हम करें पालना
कोरोना को जड़ से मिटाएँ।
स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जाएँ।
परम सौभाग्य है हम सबका,
शिक्षा से हम जुड़े हुए हैं।
कठिन समय है भले ही आया,
डरे कहाँ, हम अड़े हुए हैं।
संयम रखकर घर में रहकर,
कुछ दिन शिक्षा घर में पाएँ।
स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जायें।
कठिन स्थितियाँ और चुनौतियाँ
हम सब को मजबूत बनातीं।
चलने की गर आतुरता हो
तो बाधाएँ भी रोक न पातीं।

शैक्षिक पथ को उज्ज्वल करके,
चहुँ ओर ज्ञान प्रकाश फैलाएँ।
स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जायें।।
पंखों पर विराम लगा है,
मगर हौसला कहाँ थका है।
आओ रोज नया कुछ सीखें,
अभी सीखने का मौका है।
होगा अब इक नया आसमाँ ,
पंखों को मजबूत बनाएँ।
स्निग्ध हृदय से करूँ प्रार्थना,
जल्दी से वे दिन आ जायें।

-बिन्दु बाला
प्रवक्ता हिंदी
रावमावि चौटाला, जिला-सिरसा

शिक्षा सारथी

जून-जुलाई 2020

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिजाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती। वह अगस्त्य ऋषि की भांति सागर को पीकर भी शांत नहीं होती।
>
> -प्रेमचंद

» जल्दी से वे दिन आ जाएँ 2
» शिक्षा के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी : कँवर पाल 5
» कोविड जन्य आपदा में भी अनवरत जारी है सीखने-सिखाने की प्रक्रिया 6
» ई-लर्निंग बनी वक्त की माँग 11
» ऑनलाइन शिक्षण को पंख लगाते राजकीय विद्यालयों के शिक्षकगण 12
» लॉकडाउन में घर बने सीखने-सिखाने की प्रयोगशाला 18
» कोरोना वायरस : विद्यालय खुलने पर एक चुनौती 20
» जन-सहयोग से बदली सरकारी स्कूल की तस्वीर 21
» ऑनलाइन पीटीएम : रोमांचकारी अनुभव 24
» स्वर्णिम युग की ओर राजकीय विद्यालय 25
» खेल-खेल में विज्ञान 24
» शिक्षा से वंचित बच्चों का भविष्य सँवारती छात्रा दिव्या 28
» विज्ञान वो नहीं 29
» बाल-सारथी 30
» अपनी साँस का रखें ख्याल 32
» लॉकडाउन में मुस्कराई प्रकृति 33
» CoviDreams – A Vision of Imagination and Adventure 34
» The Earth is not ours; Let us together make it better 36
» Changing Role of Media 37
» Power of Appreciation 38
» I Miss My School 39
» The School Comes Homes 40
» Confinement for Betterment 2020 42
» Compendium of Academic Courses After +2 43
» Shiksha Saarthi Class Room 48
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है।
यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

सरकारी विद्यालय ही हैं 'असरकारी'

कहने की आवश्यकता नहीं कि विगत कुछ दशकों में शिक्षा एक बहुत बड़ा व्यवसाय बन गई है और शिक्षण संस्थाएँ शिक्षा के क्रय-विक्रय की दुकानें। जन मानस की भी सोच बन गई कि उत्तम शिक्षा के लिए आलीशान भवन, पीली बसें, आकर्षक वर्दी, निजी प्रकाशकों की महँगी पुस्तकें, एसी कमरे, मुख्य द्वार पर वर्दीधारी गार्ड, भीतर अंग्रेज़ी में गिटपिटाने वाली रिसेपशनिस्ट का होना अति आवश्यक हैं। निजी विद्यालयों में यह सब कुछ मिलता था, लेकिन राजकीय विद्यालयों में नहीं। यही कारण है कि जिसके पास चार पैसे होते थे, वह राजकीय विद्यालयों से कन्नी काटता हुआ अपने बच्चों को ऐसे संस्थानों में प्रवेश दिलाने को लालायित दिखाई देता था।

लेकिन कोरोना काल ने सब कुछ बदल कर रख दिया। सोचने पर मजबूर कर दिया कि शिक्षा के लिए यह तामझाम जरूरी है क्या ? इसमें कोई दोराय नहीं कि इस सारे तामझाम से शिक्षण कुछ सुविधाजनक बन जाता है (या होगा)। वास्तव में अच्छी शिक्षा के लिए उपरोक्त किसी भी चीज़ की जरूरत नहीं। शिक्षण तो तब भी होता था जब गुरुकुल में किसी वृक्ष के नीचे मिट्टी के चबूतरे पर बैठ कर गुरु जी बगैर पाठ्यपुस्तकों के अपने शिष्यों को श्लोक कंठस्थ करवा कर विविध विषयों में पारंगत बना देते थे। अतः शिक्षण की केवल दो आवश्यक शर्तें हैं- एक समर्पित गुरु और एक जिज्ञासु शिष्य।

कोरोना काल ने आम जन के सामने राजकीय और निजी शिक्षण संस्थाओं का वास्तविक रूप लाकर रख दिया। अब जब बड़े-बड़े तामझाम वाली शिक्षा की बड़ी-बड़ी दुकानों पर ताले जड़े हैं, और वे फोन करके अभिभावकों से शुल्क जमा करवाने का दबाव बना रहे हैं, ऐसे में राजकीय विद्यालयों के अध्यापक अपने शिष्यों के भविष्य की चिंता करते हुए निरंतर 'दूरवर्ती शिक्षा' के माध्यम से उनसे जुड़े हुए हैं। उनके शिक्षण की ही नहीं, उनके दाखिले, उनकी पाठ्य-पुस्तकों, उनके पोषण (मिड-डे मील) आदि की चिंता भी अध्यापक को है। परंपरागत ढंग से कक्षा में पढ़ाने वाला अध्यापक पहले स्वयं नयी तकनीक में अपने आप को पारंगत बना रहा है, फिर विद्यार्थियों को सिखा रहा है। विभाग या सरकार द्वारा लॉकडाउन में सर्वेक्षण आदि जो भी कर्तव्य उसे सौंपे गये थे, उन सभी को निष्ठा से पूर्ण करते हुए वह 24 घंटे समर्पित भाव से काम कर रहा है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय का दूरदर्शिता पूर्ण 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम', विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय एवं उनकी टीम के इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अहर्निश किए गए प्रयास, जिलों के कुशल अधिकारी, कर्मठ विद्यालय मुखिया व कोरोना काल के योद्धा शिक्षणगण के संयुक्त प्रयासों ने आपदा की इस घड़ी में भी प्रदेश में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुभीते से चला कर दिखा दिया है कि वास्तव में सरकारी विद्यालय ही 'असरकारी' हैं।

-संपादक

शिक्षा के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी : कँवर पाल

प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल ने बताया कि शिक्षा के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी। शिक्षा के स्तर में उत्थान के लिए प्रदेश में 98 मॉडल संस्कृति स्कूल खोले जाएँगे। अब हर खंड में ऐसा विद्यालय खोला जाएगा ताकि साधारण व गरीब परिवारों के बच्चों को भी बेहतरीन शिक्षा मिल सके। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार चाहती है कि राजकीय विद्यालयों में शिक्षा का स्तर इतना उन्नत किया जाए कि अभिभावक यह सोचने पर मजबूर हो जायें कि अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजें या राजकीय विद्यालयों में। इसके लिए शिक्षकों को पूरी सक्रियता से प्रयास करने होंगे। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षकगण ठान लें तो कोई भी लक्ष्य अर्जित करना असंभव नहीं है।

शिक्षा मंत्री ने बीते दिनों पंचकूला के सैक्टर 26 में नवनिर्मित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तथा सैक्टर 31 के अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मॉडल संस्कृति स्कूल के भवन पर 7.86 करोड़ रुपए की राशि व्यय की गई है। यह भवन लगभग 4.98 एकड़ पर बनाया गया है। संस्कृति मॉडल स्कूल के कमरे खुले व हवादार हैं। रैंप व स्वच्छ शौचालयों की भी पूरी व्यवस्था की गई है। इसके अलावा मल्टीमीडिया कमरों सहित 30 से अधिक कमरों का निर्माण किया गया है। इसी प्रकार सेक्टर 31 के प्राइमरी स्कूल पर 1.90 करोड़ रुपए की लागत आई है तथा यह लगभग 1.10 एकड़ में विकसित किया गया है।

शिक्षा मंत्री ने लॉकडाउन के चलते सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए दोनों शिक्षण संस्थाओं का लोकार्पण किया। इस अवसर पर विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञानचंद गुप्ता भी उपस्थित थे। शिक्षा मंत्री ने कहा कि प्रदेश में 1405 इंगलिश मीडियम के बैग फ्री प्राइमरी स्कूल खोले जाएँगे, जिनमें से 418 स्कूल खोले जा चुके हैं तथा 987 स्कूलों को खोलने की प्रक्रिया जारी है। उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि प्रदेश का कोई भी बालक अपने शिक्षा के अधिकार से वंचित न हो। उसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले, जो उसके सर्वांगीण विकास में सहायक बने।

यह पूछे जाने पर कि विद्यालयों को कब से खोलने की योजना है, के जवाब में शिक्षा मंत्री ने बताया कि बहुत से निर्णय परिस्थितियों पर निर्भर करते हैं। जिस प्रकार की परिस्थितियाँ होंगी, उसी प्रकार से निर्णय लिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि टीवी के माध्यम से पढ़ाई करवाने की पहल करने वाला हरियाणा पहला राज्य है, जहाँ राजकीय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों को शिक्षा दी

जा रही है। 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' ने कोविड-19 की प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हर विद्यार्थी तक आवश्यक शिक्षा पहुँचाने का कार्य किया है। स्कूली विद्यार्थियों की पढ़ाई का नुकसान न हो, इसलिए हरियाणा सरकार ने विद्यार्थियों को ऑनलाइन तथा टीवी के माध्यम से शिक्षा देने की प्रक्रिया शुरू की है। उन्होंने बताया कि वैसे तो एजुसेट के माध्यम से भी विद्यार्थियों को शिक्षा दी जा रही है, फिर जिस क्षेत्र में केबल टीवी नहीं है उस क्षेत्र के विद्यार्थियों को डिजिटल सेवा प्रदाता कंपनियों डीडी, एयरटेल, टाटा स्काई, वीडियोकोन, डिश टीवी से पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है। इसके अलावा, एनसीईआरटी के माध्यम से स्वयंप्रभा, पाणिनि, किशोर मंच व नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्य चैनलों पर भी स्कूली शिक्षा का प्रसारण किया जा रहा है।

शिक्षा मंत्री ने बताया कि सरकार ने 'रिलायंस जियो टीवी' के साथ भी करार किया है। 'जियो टीवी' के साथ किए करार के तहत एजुसेट के चारों चैनल अब जियो के प्लेटफार्म पर निःशुल्क उपलब्ध हैं। नई पहल से विद्यार्थी टीवी, लैपटॉप, डेस्कटॉप, टेबलेट व मोबाइल के माध्यम से एजुसेट के चारों चैनल देख पा रहे हैं। टीवी पर प्रसारित की गई सामग्री एक सप्ताह तक उपलब्ध रहती है, जिसे विद्यार्थी अपनी सुविधा एवं समय के अनुसार इसको देख सकता है।

उन्होंने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में बताया कि कोविड-19 के कारण बच्चों के परीक्षा परिणामों में विशेष व्यवस्था की गई। पहली से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के वे विद्यार्थी जिनके पास गणित विषय था तथा उनका पेपर नहीं हो पाया, उनका बिना गणित के पेपर के परिणाम जारी किया।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव करके घर पर मूल्यांकन करने की व्यवस्था की गई है। दसवीं कक्षा के चार विषयों के आधार पर ही दसवीं का परिणाम जल्द ही जारी किया जाएगा। इसी प्रकार दस जमा दो कक्षा के सन्दर्भ में यह निर्णय लिया गया कि जितने पेपर हो चुके हैं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन आरंभ कर लिया जाए तथा परिणाम तैयार कर लिया जाए। बचे हुए पेपरों को लेकर जब केंद्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के स्तर पर निर्णय होगा उसी के अनुसार हरियाणा सरकार द्वारा कार्यवाही की जाएगी। शिक्षा मंत्री ने बताया कि दसवीं कक्षा पास करने वाले विद्यार्थियों को चार विषयों के आधार पर ही आईटीआई, हॉस्पिटेलिटी, पॉलिटेक्निक एवं अन्य कोर्सों में दाखिला मिलेगा। विद्यार्थी साइंस स्ट्रीम में भी वैकल्पिक दाखिला ले सकेगा तथा उचित समय पर परीक्षा का आयोजन होने पर उसे साइंस विषय में पास होना अनिवार्य होगा। यदि विद्यार्थी दसवीं की साईंस की परीक्षा में फेल हो जाता है तो ग्यारहवीं कक्षा की बिना साइंस संकाय वाली पढ़ाई जारी रख सकेगा।

-शिक्षा सारथी डेस्क

कोविड जन्य आपदा में भी अनवरत जारी है
सीखने-सिखाने की प्रक्रिया

डॉ. प्रदीप राठौर

कोविड-19 के कारण स्कूल बन्द हुए तथा सोशल डिस्टेंसिंग की शुरुआत हुई। हरियाणा में 12 मार्च को पहले पाँच जिलों में, फिर पूरे हरियाणा में स्कूल बन्द हुए, बोर्ड के पेपर भी स्थगित हो गए तथा औपचारिक स्कूल शिक्षा रुक गई। हरियाणा का शैक्षणिक कैलेण्डर 1 अप्रैल से शुरू होता है। ऐसे में विभाग के सामने अनेक चुनौतियाँ थीं और अनिश्चितता की इस स्थिति में सब कुछ धुँधला था, ऐसे में राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह द्वारा एक टीम का गठन किया गया तथा तत्कालीन महानिदेशक सैकेण्डरी शिक्षा अमनीत पी. कुमार के साथ निदेशक मौलिक शिक्षा प्रदीप कुमार के मार्गदर्शन में कार्य आरम्भ कर दिया गया। इस टीम के माध्यम से डॉ.महावीर सिंह ने अपनी कार्य कुशलता का परिचय देते हुए इस तथ्य को चरितार्थ किया है कि अच्छे प्रशासक संकट की घड़ी में यदि योजना बनाकर, सत्यनिष्ठा से, कर्तव्यपरायणता का परिचय देकर अपनी टीम को प्रोत्साहन देते रहें तो किसी भी चुनौती का सामना किया जा सकता है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा किए गए प्रयासों की जहाँ माननीय शिक्षा मन्त्री महोदय द्वारा प्रशंसा की गई वहीं 28 अप्रैल को मानव संसाधन विकास मन्त्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक ने सभी राज्यों के शिक्षा मन्त्रियों की बैठक के दौरान हरियाणा के प्रयासों के लिए विशेष रूप से बधाई दी। हरियाणा राज्य द्वारा स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में जहाँ बड़ी-बड़ी समस्याओं के हल प्रदान किए गए वहीं विद्यार्थियों के कल्याण के लिए कुछ सूझ-बूझ भरे निर्णय भी लिए गए जिनका अनुसरण मानव संसाधन विकास मंत्रालय के साथ-साथ अन्य राज्य भी कर रहे हैं। मामला चाहे बोर्ड परीक्षा परिणाम का हो, ई-लर्निंग व दूरवर्ती शिक्षा का हो, प्राइवेट स्कूलों की फीस का हो, पुस्तकों की उपलब्धता का हो, मध्याह्न भोजन वितरण का हो, राज्य राहत कोष मे दान देने का हो या फिर संकट की इस घड़ी में मानसिक तनाव से गुजर रहे बच्चों के लिए परामर्श देने का हो, प्रत्येक क्षेत्र में हरियाणा ने अपनी योजना और क्रियान्वयन से अच्छा प्रदर्शन किया है।

शैक्षणिक वर्ष के समाप्त होने पर कोविड-19 से हुए लॉकडाउन के कारण 3 अप्रैल को परीक्षा परिणाम जारी करने बारे योजना पर कार्य हुआ। प्रस्ताव पर माननीय मुख्यमन्त्री महोदय से स्वीकृति उपरान्त 10 अप्रैल को परिणाम जारी हुआ। हरियाणा राज्य के इस फार्मूले का अन्य राज्यों द्वारा अनुसरण किया गया। इसी दौरान कुछ प्राइवेट विद्यालयों द्वारा ई-लर्निंग आरम्भ की गई। विद्यार्थियों के पास इंटरनेट, कम्प्यूटर तथा व्हाट्सएप्प आदि न होने के कारण 90 प्रतिशत विद्यार्थियों तक यह ई-लर्निंग संभव ही नहीं थी। ऐसी अवस्था में सरकारी स्कूलों के बच्चे तथा कुछ प्राइवेट स्कूलों के बच्चे व उनके माता-पिता अपने आप को लाचार अनुभव कर रहे थे, विभाग के सामने यह विकट समस्या थी क्योंकि पूरे प्रदेश के 24 हजार स्कूलों के 52 लाख बच्चों के लिए इंटरनेट के माध्यम से या जूम क्लास के माध्यम से, वेबेक्स तथा यू-ट्यूब पर ऑनलाइन वीडियो के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था करना असंभव था। दो घंटे के इंटरनेट वीडियो डाउनलोड आदि पर प्रत्येक बच्चा प्रतिदिन यदि 2 जीबी डाटा खर्च करे तब 104 लाख जीबी डाटा का प्रबन्ध बहुत बड़ी चुनौती था। विभाग की शैक्षणिक शाखा को माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा डॉ. महावीर सिंह द्वारा यह कार्य सौंपा गया कि कोविड-19 से उपजी आपदा की घड़ी में इस समस्या का ऐसा हल

निकाला जाए जो सबके लिए उपयुक्त हो, सरल हो, जिसमें इंटरनेट की बाधा न हो, अतिरिक्त खर्च न हो और बच्चे को उसके घर से बाहर भी न निकलना पड़े। शैक्षणिक शाखा की टीम द्वारा अनेक संभावनाओं की तलाश की गई तथा इसके लिए इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम मॉडल को आधार बनाने का सुझाव दिया गया। माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की अनुमति से कार्य आरम्भ किया गया। अप्रैल के प्रथम सप्ताह में ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की सीआईईटी शाखा के अधिकारियों के साथ सम्पर्क किया गया। स्वयंप्रभा, किशोरमंच चैनल तथा अन्य रिसोर्स जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद तथा सीआईईटी द्वारा उपलब्ध करवाए जा रहे हैं उन पर ध्यान दिया गया, उनका अध्ययन किया गया। सीआईईटी में उपनिदेशक डॉ. अमरेन्द्र बेहेरा से इस बारे 'ज़ूम' पर चर्चा की गई। इसमें डॉ. बेहेरा द्वारा अवगत करवाया गया कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के चैनल जो स्कूल शिक्षा का कार्यक्रम प्रसारित करते हैं वे डीडी की डिश पर निःशुल्क उपलब्ध हैं तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के माध्यम से इन चारों चैनलों को अन्य प्राइवेट डिश टीवी जैसे- एयरटेल, डिश टीवी, टाटा स्काई, वीडियोकॉन आदि पर भी 'मस्ट कैरी' चैनलों की श्रेणी में रखा गया। 9 अप्रैल को माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा द्वारा राज्य में दूरवर्ती शिक्षा की संभावना पर काम करने के उद्देश्य से राज्य कोर कमेटी की बैठक की गई जिसमें एनसीईआरटी से डॉ.बेहेरा को भी शामिल किया गया। उसमें डॉ बेहेरा द्वारा हरियाणा राज्य को अपने स्कूल शिक्षा के कार्यक्रम के लिए एनसीईआरटी के स्वयंप्रभा चैनल पर प्रतिदिन दो घंटे के प्रसारण तथा दो घंटे के पुनः प्रसारण का समय प्रदान करने की सहमति प्रदान कर दी गई।

हरियाणा एजुसैट चैनल का केबल टीवी पर प्रसारण हो, इसकी संभावना पर भी कोर ग्रुप में विचार किया गया। डॉ. महावीर सिंह द्वारा यह निर्देश दिया गया कि हरियाणा एजुसैट के चारों चैनलों को हरियाणा के सभी केबल आपरेटर के लिए 'मस्ट कैरी' की सूची में डलवाने के लिए कार्यवाही की जाए। इसके लिए शैक्षणिक शाखा तथा उत्कर्ष सोसाइटी मिलकर कार्य करें तथा सम्बन्धित अधिकारियों एवं कार्यालयों से पत्राचार किया जाए, फोन पर बात की जाए, ई-मेल तथा 'ज़ूम' मीटिंग की जाए। हरियाणा उत्कर्ष सोसाइटी जो शिक्षा विभाग के अन्तर्गत गठित है, जो चार चैनलों का संचालन करती है, डीटीएच प्रसारण के माध्यम से तथा ROT के माध्यम से राज्य के स्कूलों, बीआरसी कार्यालयों, डीईओ, डीईईओ तथा डाइट में शैक्षणिक सामग्री का प्रसारण करती है। इसका प्रसारण स्कूलों में लगे टीवी पर दिखाया जाता है जो कक्षावार, विषयवार प्रसारित होता है। यह एक स्मार्ट क्लासरूम की भाँति कार्य करता है तथा विद्यार्थियों के लिए ऑडियो-विजुअल एड उपलब्ध करवाते हुए टीचिंग-

लर्निंग को रुचिकर बनाता है। अब कोविड-19 के कारण स्कूल बन्द थे तो स्कूल में होने वाला यह प्रसारण भी बन्द हो गया। तत्कालीन महानिदेशक सैकेण्डरी शिक्षा अमनीत पी. कुमार ने इसी योजना पर कार्य करने का निर्णय लिया। माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा महोदय ने व्यक्तिगत रुचि लेते हुए मुख्यमन्त्री महोदय को एजुसेट के इन चारों चैनलों को हरियाणा के सभी केबल आपरेटर को 'मस्ट कैरी' की श्रेणी में लाने का आग्रह किया। हरियाणा के टीवी प्रसारण का अध्ययन करने के लिए विभिन्न सर्वे रिपोर्ट देखने पर पाया गया कि कुल हाउस होल्ड का 65 प्रतिशत शहरी और 35 प्रतिशत ग्रामीण केबल टीवी के पास है जिसमें सिटी केबल, डेन केबल तथा फास्टवे मुख्यतः है जबकि 40 प्रतिशत घरों में टाटा स्काई, एयरटेल, डिश टीवी, वीडियोकॉन तथा डीडी है। अतः सबसे पहले इन घरों को जो केबल टीवी से जुड़े हैं, लक्ष्य बनाया गया। मुख्यमन्त्री महोदय के निर्देशन पर निदेशक डीपीआर द्वारा 13 अप्रैल को सभी केबल आपरेटरर्स को आदेश जारी किया गया जिसमें सीधा निर्देश दिया गया कि कोविड त्रासदी आपदा प्रबन्धन में अपना योगदान दें तथा एजुसेट के चारों चैनलों को दिखाएँ। युद्ध स्तर पर कार्यवाही करते हुए जिलों में उपायुक्त की अध्यक्षता में डीपीआरओ, डीईओ, डीईईओ की संयुक्त बैठक का आयोजन हुआ। 14 अप्रैल तक सभी 22 जिलों से विभाग के पास रिपोर्ट प्राप्त हुई जिसमें बड़े शहर, नगर निगम, नगर परिषद, नगर पालिका, महाग्राम, प्रत्येक जिले से कौन-कौन से नंबर पर केबल आपरेटर चैनल प्रसारित कर रहा है, इस पूरी जानकारी को एक कैटेलॉग बनाकर विभाग के ई-संचार माध्यम से प्रत्येक स्कूल मुखिया तक पहुँचाया गया ताकि वह टेस्ट ब्रॉडकास्ट का अवलोकन कर सकें। इस दौरान एजुसैट के चैनल की टेक्निकल कॉनफिगरेशन जैसे डाउनलोड फ्रीक्वेंसी, पोलराइजेशन, एलएनबी फ्रीक्वेंसी, सिंबल रेट तथा सेटेलाइट डाइरेक्शन सभी केबल आपरेटर के साथ साँझी करते हुए उनकी सहायता की और इस प्रसारण को संभव बनाया गया।

14 अप्रैल को माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा महोदय द्वारा कोर कमेटी की वेबनार से बैठक ली गई जिसमें प्रसारण के बारे में जिलों की स्थिति, उत्कर्ष की प्रसारण स्थिति, एससीईआरटी के कंटेंट की समय-सारणी की स्थिति तथा शैक्षणिक शाखा एवं निदेशालय के विभिन्न पत्राचार, सूचनाओं के सम्प्रेषण तथा उद्घाटन के लिए आवश्यक कार्यों की प्रगति को जाँचा गया। इस दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली से डॉ.बेहेरा द्वारा अवगत करवाया गया कि परिषद द्वारा ड्राइव का लिंक उपलब्ध करवा दिया गया है जिस पर कंटेंट, समय-सारणी अपलोड की जानी

है। उद्घाटन के कार्यक्रम के लिए माननीय मुख्यमंत्री महोदय, शिक्षा मन्त्री महोदय एवं अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा के वीडियो सन्देश प्राप्त कर लिए गए। 15 अप्रैल को इसका प्रसारण किया गया।

एजुसैट के चारों चैनलों में आपसी वितरण किया गया जिसमें एक पर मौलिक शिक्षा, दूसरे पर उच्च माध्यमिक तथा तीसरे पर वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा की सामग्री का प्रसारण किया जा रहा है। इसकी विषयवार, कक्षावार समय सारणी बच्चों तक पहुँचाई जाती है। स्कूल के विद्यार्थी अपनी कक्षा के अनुसार अपने अध्यापक से ई-संचार माध्यम से जुड़े रहकर इन प्रसारणों को देखते हैं। फिर अभ्यास के प्रश्नों तथा गृहकार्य की कार्यवाही अध्यापक द्वारा की जाती है। ऐसे विद्यार्थी जो बिजली की आपूर्ति के अभाव में या अन्य कारणों से प्रसारण नहीं देख पाते वह पुनः प्रसारण देखते हैं। दर्शकों की सुविधा के लिए 'अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न' भी बनाये गये हैं ताकि सभी को समुचित कार्यप्रणाली और क्रियान्वयन बारे जानकारी दी जा सके। अध्यापकों के लिए अलग से दिशा-निर्देश बनाए गए हैं ताकि उनकी अनुपालना से यह दूरवर्ती शिक्षा संभव हो। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा जारी किए गए वैकल्पिक कैलेण्डर को अपनाया गया। इसमें होम असाइनमैंट, प्रोजेक्ट वर्क इत्यादि पर भी पूरा ध्यान दिया गया। ऐसी क्रियाओं को बढ़ावा दिया गया जो स्वतंत्र शिक्षण, रचनात्मक सोच, साहित्य पठन और मौलिक लेखन के लिए प्रेरित करें तथा जो सीखने की प्रक्रिया को मनोरंजक ढंग से आगे बढ़ायें। उद्देश्य यही था कि कोविड-19 के दौरान घर पर रहते हुए विद्यार्थी उदास न होकर गतिशील व क्रियात्मक बने रहें।

इस पूरे कार्यक्रम में स्कूल शिक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी का ध्यान रखा गया है। चाहे वे अंग्रेजी माध्यम के हों, हिन्दी माध्यम के हों, हरियाणा बोर्ड के हों, या फिर सीबीएसई, आईसीएसई या किसी अन्य बोर्ड के। गौरतलब है कि प्रदेश में कक्षा छठी से बारहवीं के लिए एनसीईआरटी के पाठ्यक्रम को ही अपनाया जा रहा है। जो विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे जेईई, नीट की तैयारी कर रहे हैं उनके लिए भी व्यवस्था की गई है। प्रसारित होने वाली सामग्री तथा समय-सारणी ट्विटर तथा फेसबुक पेज पर डाली जा रही है। पूरे प्रसारण की वीडियो यू-ट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध करवाई जा रही है।

इस पूरे कार्यक्रम के पर्यवेक्षण की व्यवस्था भी बनाई गई है जिसमें जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना संयोजक (समग्र शिक्षा) इसके लिए कार्य कर रहे हैं। डाइट प्राचार्य अपने जिले के अकेडमिक प्रभारी हैं जो अपने विषय विशेषज्ञ की सहायता से खण्ड स्तर पर तथा कलस्टर स्तर पर सूचना का आदान-प्रदान, प्रगति रिपोर्ट, क्रियान्वयन रिपोर्ट ले रहे हैं। इसमें सीआरसी स्तर पर एबीआरसी तथा बीआरपी उनकी मदद कर रहे हैं। एससीईआरटी के विषय विशेषज्ञों की टीम कक्षावार/विषयवार पाठ्यक्रम की मासिक बाँट के अनुसार एनसीईआरटी से ई-पाठशाला, स्वयं पोर्टल तथा हरियाणा एजुसैट द्वारा बनाई गई ई-कंटेंट सामग्री में से प्रसारण हेतु चयन करते हैं तथा प्रसारण की समय-सारणी बनाते हैं। शैक्षणिक शाखा के अधिकारी पूरे कार्यक्रम की योजना निर्माण, क्रियान्वयन, सूचनाओं के सम्प्रेषण, शंकाओं के समाधान, समन्वय इत्यादि का कार्य करते हैं। कंटेंट की माँग की पूर्ति के लिए विभिन्न संस्थाओं से पत्राचार किया गया। इसमें प्रथम, एससीएफ, सम्पर्क फाउंडेशन जैसी संस्थाओं द्वारा निःशुल्क कंटेंट प्रसारण करने हेतु उपलब्ध करवाया गया।

यह पूरी योजना मुख्यमन्त्री महोदय की दूरदर्शिता तथा शिक्षामन्त्री महोदय की कर्मठता तथा त्वरित एवं सटीक फैसले लेने की प्रवृत्ति के कारण सिरे चढ़ी है। विभिन्न विभागों से समन्वय कर शिक्षामन्त्री महोदय द्वारा इसे अति आवश्यक समझते हुए क्रियान्वित करवाया गया। इसमें राज्य के सूचना, जन-सम्पर्क एवं भाषा विभाग की भूमिका भी महत्त्वपूर्ण रही। पूरे राज्य के 52 लाख बच्चों के लिए हर जाति, वर्ग, समुदाय के विद्यार्थी के लिए बनाई गई यह व्यवस्था 'सबका साथ-सबका विकास' के सिद्धांत पर आधारित है।

टीवी के माध्यम से चलाये जा रहे 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' ने सफलता की नई गाथा लिखी है। प्राइवेट स्कूलों के विद्यार्थियों से लेकर दूर-दराज के ग्रामीण इलाकों के बच्चों तक इस शिक्षण कार्यक्रम को पहुँचा कर वास्तव में 'अंत्योदय' अवधारणा को साकार रूप दिया गया है। अब इस कार्यक्रम द्वारा उन सभी विद्यार्थियों को इसका सीधा लाभ मिल रहा है जो ई-लर्निंग से ढाँचागत सुविधा के कारण वंचित रह जाते थे। दूरवर्ती शिक्षा के इस कार्यक्रम ने इस बात को भी उजागर किया है कि यह व्यवस्था जो पहले कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय स्तर पर लागू थी, अब विद्यालय स्तर पर भी उतनी ही उपयोगी है। आपदा के समय में की गई यह व्यवस्था इतनी व्यापक, लाभदायक होगी इसका आभास किसी को नहीं था। 'स्मार्ट क्लासरूम' की अवधारणा पहले स्कूल के क्लासरूम तक सीमित थी, अब तो हर घर 'स्मार्ट क्लासरूम' बन गया है। ई-लर्निंग की व्यवस्था जो बहुत महँगी थी वह अब सरल और सहज होकर सबसे सस्ती उपलब्ध हो गई है।

कोविड-19 के दौरान जहाँ सारी प्रक्रियाएँ बन्द हैं,

वहीं घर पर शिक्षा जारी है। अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण दिव्यांग (सीडब्ल्यूएनएन) विद्यार्थी भी आज घर पर ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। यह शिक्षा मल्टीग्रेड टीचिंग और मल्टी लेवल टीचिंग में बहुत कारगर है। जो विद्यार्थी कक्षानुरूप योग्यताएँ प्राप्त करने में असमर्थ रहते हुए भी अगली कक्षा में अपग्रेड किए गए, उनके लिए अपनी कक्षा से पिछली कक्षा का प्रसारण देखने की सुविधा उपलब्ध है ताकि पिछली कक्षा के कौशलों को ग्रहण किया जा सके।

इस दूरवर्ती शिक्षा से जेईई, नीट के विद्यार्थी भी लाभ ले रहे हैं। हालांकि यह व्यवस्था इस आपदा प्रबन्ध के दौरान बनाई गई है, परन्तु इसकी उपयोगिता को देखते हुए इसका सामान्य स्थिति में चलाना भी लाभदायक है। बहुत बड़ी समस्या का यह सस्ता, सरल, सहज हल उपलब्ध है जो अब जनप्रिय होता जा रहा है। विद्यालय शिक्षा विभाग इस प्रबन्ध से उत्साह तथा सन्तुष्टि का अनुभव कर रहा है कि आपदा में अनेक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, सृजनशीलता बन रही है, उदासी तथा नकारात्मकता से बचाव हो रहा है।

इसके अतिरिक्त अन्य ऐसे क्षेत्र, जिनमें डॉ.महावीर सिंह की टीम द्वारा माननीय मुख्यमन्त्री जी के मार्गदर्शन में तथा शिक्षामन्त्री जी के निर्देशन में कार्य करके उचित व्यवस्था और समाधान देकर विद्यार्थी कल्याण के अनेक कार्य किए गए। उनमें से कुछ निम्नांकित हैं-

1.बिना परीक्षा के विद्यार्थियों को अगली कक्षा में अपग्रेड किया गया- कोविड-19 के कारण बच्चों के परीक्षा परिणामों में विशेष व्यवस्था की गई। पहली से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों को बिना परीक्षा के पास किया गया। कक्षा ग्यारहवीं के वे विद्यार्थी जिनके पास गणित विषय था तथा उनका पेपर नहीं हो पाया, उनका बिना गणित के पेपर के परिणाम जारी किया। इसका अनुसरण अन्य राज्यों द्वारा भी किया गया तथा सीबीएसई द्वारा भी हरियाणा के इस प्रयास को अपनाया गया।

2.बोर्ड परीक्षाओं को लेकर विशेष योजना- बोर्ड परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया 'ऑन द स्पॉट' में बदलाव करके घर पर मूल्यांकन करने की व्यवस्था की गई। दसवीं कक्षा के चार विषयों के आधार पर ही दिनांक 20 मई को दसवीं का परिणाम जारी करने का लक्ष्य रखा गया। बारहवीं कक्षा के सन्दर्भ में यह निर्णय लिया गया कि जितने पेपर हो चुके हैं उनकी उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन आरम्भ कर लिया जाए तथा परिणाम तैयार कर लिया जाए। बाकी बचे पेपरों को लेकर जब एमएचआरडी के स्तर पर निर्णय होगा, उसके अनुसार कार्यवाही कर ली जाएगी। घर से मूल्यांकन करवाने की व्यवस्था करने वाला हरियाणा पहला राज्य है। सीबीएसई के साथ अन्य बोर्ड इसका अनुसरण कर रहे है एवं मार्गदर्शन ले रहे हैं।

3.पुस्तकों की आपूर्ति परस्पर आदान-प्रदान से- राज्य में निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की आपूर्ति लॉकडाउन के कारण बाधित हो गई थी। पुस्तकों की कमी को पूरा करने के

लिए विभाग द्वारा प्रयास किए गए। विद्यार्थियों ने पुरानी पुस्तकों का परस्पर आदान-प्रदान किया। स्कूल प्रबन्धन समिति, पंचायत, अभिभावकों एवं अध्यापकों की देखरेख में यह कार्य हुआ। पूरे समाज द्वारा अध्यापकों, स्कूल मुखियाओं तथा विद्यार्थियों के सहयोग से चली इस योजना से राज्य के लाखों विद्यार्थी लाभान्वित हुए। इससे जहाँ संकट की घड़ी में पुस्तकों की आपूर्ति संभव हुई तथा पठन-पाठन में बड़ी बाधा समाप्त हुई, वहीं पर्यावरण के लिए भी यह योजना लाभकारी सहायक हुई। भविष्य में इस मॉडल को अपनाकर पैसे की बचत भी की जा सकती है।

4.प्राइवेट स्कूलों की फीस एवं दाखिले- कोविड-19 के कारण अभिभावकों को फीस अदायगी में आ रही दिक्कतों को ध्यान में रखते हुए विभाग द्वारा दिशा-निर्देश जारी किए गए कि स्कूल लॉकडाउन की अवधि में अभिभावकों को तीन महीने का अग्रिम शुल्क देने के लिए बाध्य न करें, केवल मासिक फीस ली जाए। यातायात शुल्क भी न लिया जाए। फीस देने में असमर्थ अभिभावकों पर फीस देने का दबाव न बनाया जाए। फीस के अभाव में बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाई से वंचित न किया जाए तथा उनका नाम न काटा जाए। यदि अभिभावक मासिक शुल्क स्थगित करने का आग्रह करता है तो स्कूल प्रबन्धन उनके आग्रह पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करके राहत प्रदान करे। प्राइवेट स्कूलों के संगठनों से तथा अभिभावकों के संगठनों से चर्चा करके बनाई गई इस नीति का सबको लाभ मिला।

5.मध्याह्न भोजन का वितरण- लॉकडाउन के कारण विद्यालय बन्द कर दिए गए। विद्यार्थियों की कुपोषण की समस्या को हल करने के लिए तथा आहार की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा मिड-

डे मील की व्यवस्था को बनाए रखने का प्रयास किया गया। इसमें अध्यापकों द्वारा सूखा अनाज घर-घर जाकर बाँटा गया तथा कुकिंग का खर्च बच्चों के बैंक खाते में डाल दिया गया। शिक्षा विभाग का यह प्रयास बहुत ही सराहनीय रहा।

6. राज्य कोरोना राहत कोष में योगदान- माननीय मुख्यमंत्री जी के आह्वान पर विद्यालय शिक्षा विभाग के कर्मचारियों द्वारा अपने वेतन में से राहत कोष में अपना स्वैच्छिक अंशदान दिया गया। प्रदेश के कुल कर्मचारियों में स्कूल शिक्षा विभाग की हिस्सेदारी 35.55 प्रतिशत है जबकि पूरे राज्य के कर्मचारियों के स्वैच्छिक अंशदान का अवलोकन किया जाए तो विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा 77.85 प्रतिशत अंशदान किया गया है, जबकि राज्य के दूसरे विभागों का अंशदान 59.38 प्रतिशत है। दान की गई कुल राशि 64.23 करोड़ में से 37.39 करोड़ स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा दी गई है। कुल स्वैच्छिक अंशदान का 58.21 प्रतिशत शिक्षा विभाग के कर्मचारियों द्वारा किया गया है जो राज्य कर्मचारियों की कुल संख्या का 35.55 प्रतिशत है। कुछ कर्मचारियों द्वारा अपने वेतन का शत-प्रतिशत भी दान में दिया गया है।

7. माननीय मुख्यमंत्री के तीन मंत्र- शिक्षा विभाग के प्रयासों की सराहना करते हुए मुख्यमंत्री महोदय द्वारा प्रदेश के विद्यार्थियों को टेलीविजन के माध्यम से सम्बोधित करते हुए ट्रिपल 'एस' यानी स्टे एट होम, स्कूल एट होम, स्टडी एट होम का मंत्र दिया गया जिसको सभी ने अपनाया। मुख्यमंत्री जी के आह्वान पर प्रदेश के लाखों विद्यार्थी कोरोना राहत कोष में अपना आर्थिक योगदान देकर संकट की घड़ी में राज्य के साथ खड़े होने का परिचय दिया।

8. शंका समाधान कार्यक्रम- प्रसारण देखने के उपरान्त कुछ ऐसी अवधारणाएँ विद्यार्थियों के सामने होती हैं जिन्हें वे समझ नहीं पाते तथा कुछ शंकाएँ रहती हैं, उसके लिए विभाग द्वारा शंका समाधान कार्यक्रम चलाया गया। फेसबुक, टवीटर, ई मेल, वेबसाइट तथा व्हाट्सएप्प के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा अपने ऑडियो, वीडियो तथा टेक्स्ट सन्देश भेजे गए। उन प्रश्नों का विभाग के विशेषज्ञ अध्यापकों के माध्यम से उत्तर रिकॉर्ड करवाकर प्रत्येक रविवार को दोपहर बाद 1 बजे प्रसारित किया गया।

9. परामर्श एवं मार्गदर्शन- इस घड़ी में विद्यार्थी तनाव में न आएं, अवसाद के घेरे में न आएँ, उनकी मानसिक समस्याओं को सुनने के लिए, उनको परामर्श देने के लिए जिलावार परामर्श केन्द्रों की स्थापना की गई तथा परामर्शदाताओं/विशेषज्ञों के मोबाइल नम्बर साँझे किए गए। इन समूहों ने हजारों बच्चों को अपनी सेवायें प्रदान कीं। इतना ही नहीं इन समूहों द्वारा बच्चों को उच्च शिक्षा के क्षेत्र चुनने की करियर काउंसलिंग भी दी गई।

10 प्रवेश/दाखिला व्यवस्था को सरल बनाना- पहली कक्षा में विद्यार्थी नया दाखिला करवाते हैं। इसके अतिरिक्त पाँचवीं व आठवीं पास होने के उपरान्त विद्यार्थियों का विद्यालय बदलता है तो उन्हें दाखिला लेने में समस्या न आए, इसके लिए सभी प्रकार के दस्तावेज की अनिवार्यता समाप्त की गई। सभी प्रकार के शुल्क से छूट प्रदान की गई तथा विद्यार्थियों के दाखिले ऑनलाइन करवाकर माता-पिता को ई-संचार से सन्देश भेजा गया। घर-घर जाकर सर्वेक्षण किया गया ताकि कोई बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे।

11. प्रवासी मजदूरों से सम्पर्क- शहरी क्षेत्रों में रह रहे प्रवासी मजदूर अपने गाँव को लौटे। यमुनानगर, पंचकूला, पानीपत तथा दिल्ली-एनसीआर के जिलों में यह संख्या अधिक रही। इसके लिए कक्षा अध्यापक द्वारा/स्कूल मुखिया द्वारा इन बच्चों के माता-पिता से दूरभाष पर सम्पर्क करके जानकारी एकत्रित की जा रही है। ड्रॉपआउट रेट को रोकने के लिए ऐसे कदम अत्यावश्यक थे।

12. विभिन्न संस्थाओं से समन्वय- डॉ.महावीर सिंह द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा में काम करने वाली विभिन्न संस्थाओं से जो इस क्षेत्र में विशेषज्ञता रखती हैं और इस परिस्थिति में मदद कर सकती हैं, सम्पर्क स्थापित किया गया तथा सहयोग प्रदान करने का आग्रह किया गया। एजुसेट प्रसारण के लिए कंटेंट उपलब्ध करवाने में, ऑनलाइन शिक्षण अधिगम प्रबन्धन में, मूल्यांकन और पर्यवेक्षण में सहायता प्राप्त की गई। सैन्ट्रल स्क्वेयर फाउंडेशन, दिल्ली संपर्क फाउंडेशन, रोटरी इंटरनेशनल, अपराजिता फाउंडेशन, ह्यूमाना-पीपल टू पीपल आदि ऐसी कुछ संस्थाएँ थीं।

13. विद्यालय के कार्यालयों को आरम्भ करना- राज्य में सरकारी और प्राइवेट विद्यालयों के प्रशासनिक खंडों को खोला गया। स्कूलों के प्रधानाचार्यों द्वारा दाखिले के कार्य, विद्यालयों के गैर शैक्षणिक कार्य आरम्भ किए गए। विद्यालय प्रबन्धन समितियों की बैठकों में शैक्षणिक कार्यक्रम चलाने के लिए बैठकें आरम्भ हुए। स्कूलों को खोलने के लिए क्या-क्या कदम उठाये जाने हैं, उन पर कार्य आरंभ हुआ। इस बात पर विशेष ध्यान दिया गया कि विद्यार्थी डॉपआउट न हों, आउट ऑफ स्कूल न हों।

उपरोक्त सभी प्रयास यह बताते हैं कि आपदा काल में भी सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को जारी रखने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग ने व्यापक व दूरदर्शिता पूर्ण योजना बनाते हुए, समय-सारणी बनाकर, समूहों का गठन करके, विभिन्न विभागों से समन्वय करके, विशेषज्ञों से परामर्श लेकर, संसाधनों का वर्गीकरण, क्षमताओं का दोहन करके संकट की इस घड़ी में उत्साहवर्धक कार्य किया है। ये प्रयास प्रदेश के अन्य विभागों के साथ-साथ देश के अन्य राज्यों के लिए मार्गदर्शक बन रहे हैं। डॉ. महावीर सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा महोदय की पूरी टीम बधाई की पात्र है।

drpradeeprathore@gmail.com

ई-लर्निंग बनी वक्त की मांग

सत्यवीर नाहड़िया

कोरोना के कठिन काल में देश और दुनिया को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिनसे शिक्षा जगत भी अछूता नहीं रहा है। 'घर से पढ़ो' अभियान के अंतर्गत ऑनलाइन शिक्षा का महत्त्व उभर कर सामने आया है। गाँव देहात के बच्चों ने भी पहली बार इस प्रारूप को अपनाकर न केवल नए प्रेरक संकेत दिए हैं अपितु यह सिद्ध कर दिया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। चुनौतीपूर्ण समय में अध्यापकों विद्यार्थियों तथा अभिभावकों को अध्ययन-अध्यापन तथा विमर्श के माध्यम से कुछ नए रोचक अनुभव भी हुए हैं, जो उनके मानसपटल पर अनूठी छाप छोड़ गए।

बात रविवार, 17 मई की है। लॉकडाउन के दौरान प्रदेश सरकार के शिक्षा विभाग की देखरेख में पहली ई-पीटीएम का आयोजन होना था। इससे पहले शिक्षा विभाग के सभी शिक्षक ऑनलाइन अध्ययन अध्यापन प्रक्रिया से जुड़े हुए थे। एजुसेट, टीवी चैनल व्हाट्सएप समूह आदि विभिन्न माध्यमों से सभी स्कूलों में कक्षावार पढ़ाई जारी थी। इस ई-पीटीएम में सभी विषय अध्यापकों, कक्षा प्रभारियों, मुखियाओं तथा शिक्षा अधिकारियों को अभिभावकों से दूरभाषिक संपर्क करके ऑनलाइन कक्षाओं की फीडबैक लेने के अलावा उनके विचार एवं सुझाव भी प्राप्त करने थे। बातचीत के बाद सभी को गूगल शीट पर संबंधित जानकारी भी डालनी थी। यह प्रयोग बेहद प्रभावी एवं रचनात्मक रहा। विद्यालयों में प्रतिवर्ष होने वाली मेगा पीटीएम आदि में भी अभिभावकों ने इतनी प्रतिभागिता व रुचि नहीं दिखाई, जितनी ई-पीटीएम में प्रदर्शित की। अभिभावकों के सुझाव थे कि इन व्हाट्सएप समूहों को लॉकडाउन खुलने के बाद भी विभिन्न रचनात्मक प्रारूपों के लिए जारी रखा जाए तथा मासिक पीटीएम की बजाय ई-पीटीएम आयोजित की जाए। शायद यह पहला अवसर था जब शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक के बीच ई-लर्निंग के माध्यम से बेहद रचनात्मक गंभीर विमर्श भी हुआ है। इतना ही नहीं विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी ई-लर्निंग के माध्यम से अपनी प्रतिभा एवं आत्मविश्वास को प्रदर्शित किया। विभिन्न विषयों पर एससीईआरटी, गुरुग्राम द्वारा आयोजित निबंध, भाषण, पोस्टर, कोलाज, काव्यपाठ, गायन तथा फैमिली रोलप्ले जैसी बहुआयामी प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों ने रचनाओं के अलावा अपनी छायांकन तथा फिल्मांकन के जौहर दिखाए। व्हाट्सएप समूह के पटल पर विद्यार्थियों द्वारा होमवर्क डालना, सवाल पूछना, शंका समाधान के बाद आभार ज्ञापित करना, ऑनलाइन टेस्ट देना आदि अनेक ऐसे प्रकल्प हैं जिनसे शैक्षणिक माहौल में बहुआयामी गुणात्मक सुधार भी हुआ है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नारा 'भारत पढ़े ऑनलाइन' अब जीवंत होता दिख रहा है। कोरोना काल में महसूस की गई इस नवाचारी जरूरत को ध्यान में रखकर केंद्र सरकार ने भी ई-विद्या नाम से एक नया ऑनलाइन प्लेटफॉर्म आरंभ करने का प्रारूप तैयार किया है, जिसमें स्कूली शिक्षा को ऑनलाइन तथा डिजिटल माध्यम से जोड़ने के लिए बारह नए चैनल शुरू किए जाएँगे। पहली से बारहवीं तक हर कक्षा का एक अपना चैनल होगा। इसी प्रकार वन नेशन वन डिजिटल पोर्टल के तहत दीक्षा पोर्टल को और ज्यादा प्रासंगिक एवं प्रभावी बनाए जाने की प्रेरक पहल की जा रही है, जिसमें हिंदी तथा अंग्रेजी के अलावा 15 अलग-अलग भारतीय भाषाओं में क्यूआर कोड के साथ सभी विषयों से संबंधित किताबें उपलब्ध होंगी। इतना ही नहीं ई-लर्निंग के इस प्रारूप में टेलीविजन और अन्य ऑनलाइन माध्यमों के अलावा रेडियो तथा कम्युनिटी रेडियो के जरिए भी विद्यार्थियों तक पहुँचने का प्रारूप तैयार तैयार किया जा रहा है।

इस पहलू को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता कि आज भी समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग ई-लर्निंग के लिए स्मार्टफोन जैसी मूलभूत जरूरतों से वंचित है, किंतु अब जब अभिभावकों को ई-लर्निंग के महत्त्व का प्रत्यक्ष प्रमाण मिल चुका है तो वे समय के साथ कदमताल करते हुए इस दिशा में अपने बच्चों के भविष्य के लिए इसे प्राथमिकता देंगे।

रेवाड़ी के जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार का मानना है कि कोरोना के कठिन काल के अलावा सामान्य काल में भी ई-लर्निंग के बहुआयामी लाभ को नकारा नहीं जा सकता। खंड शिक्षा अधिकारी डॉक्टर खुशीराम यादव का कहना है कि ई-लर्निंग शिक्षा विभाग में आज के समय की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्राचार्य टेकचंद का विचार है कि इस तकनीक को चल को सभी शिक्षकों को प्राथमिकता के आधार पर सीखना होगा। ई-लर्निंग में निपुण गणित प्राध्यापक यशवंत राव के अनुसार डिजिटल क्रांति के माध्यम से समय एवं ऊर्जा को बचाया जा सकता है। अभिभावक गोबिंद राम कहते हैं कि हर माध्यम की अच्छाई तथा बुराई होती है हमें उसकी अच्छाइयों को लेना होगा। मेधावी छात्रा पूजा यादव का कहना है कि इस माध्यम से उन्हें गुणात्मक दृष्टि से बेहतर सामग्री तथा मंच मिला है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि डिजिटल क्रांति के इस युग में ही ई-लर्निंग आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है। आइए, हम सब मिलकर इस नवाचारी प्रकल्प को मन, वचन तथा कर्म से अपनाएँ तथा समय के साथ कदमताल करते हुए हरियाणा प्रदेश को ई-लर्निंग के माध्यम से नई ऊँचाइयों तक ले जाएँ।

प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी (रेवाड़ी) हरियाणा

ऑनलाइन शिक्षण को पंख लगाते राजकीय विद्यालयों के शिक्षकगण

डॉ.सुमन कादयान

कोरोना वायरस के संकट काल में मजबूरी में शिक्षण संस्थाओं को बंद किया गया और सरकार व विभाग द्वारा 'मुख्यमंत्री दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' का आरंभ किया गया, ताकि इस संकट काल में शिक्षण संस्थानों के बंद होने से विद्यार्थियों की पढ़ाई बाधित न हो। टेलीविजन के जरिये रोजाना शिक्षण कार्य हुआ, अध्यापकों ने विद्यार्थियों के कक्षावार व्हटसएप्प समूह बनाए, उन्हें रोजाना अभ्यास-कार्य दिया तथा दूर-संचार के विविध तरीकों का इस्तेमाल करके विद्यार्थियों से संपर्क बनाए रखा।

निश्चित तौर पर यह हरियाणा सरकार व विद्यालय शिक्षा विभाग का एक बहुत ही सराहनीय कदम है। मुख्यमंत्री महोदय व शिक्षा मंत्री महोदय ने बड़ी सूझबूझ से जो दिशा-निर्देश विभाग के अधिकारियों को दिये, अधिकारियों ने अपनी कर्मठता से उन्हें लागू करने के भरसक प्रयत्न किए। अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय, महानिदेशक विद्यालय शिक्षा विभाग, व निदेशक मौलिक शिक्षा विभाग ने फील्ड के सभी अधिकारियों से निरंतर संपर्क साधते हुए उन्हें लगातार प्रेरित करते हुए दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जी-जान से मेहनत की। पूरे कार्यक्रम की लगातार मोनिटरिंग भी अधिकारियों के द्वारा की गई।

जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी, खंड शिक्षा अधिकारी पूरी सक्रियता से लगे हुए हैं। ये अधिकारी प्राचार्य, शिक्षकों, विद्यार्थियों से फोन पर आवश्यक जानकारी लेते रहते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं

यू-ट्यूब चैनल 'शिक्षा-आपके द्वार' बनाया अध्यापक सबरेज़ अहमद ने

जिला करनाल के खंड इंद्री में स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला पंजोखरा के जेबीटी अध्यापक सबरेज़ अहमद पूरी लगन से शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं। वे प्रतिदिन पाठ्यक्रम की विषय वस्तु पर आधारित वीडियो बनाकर यूट्यूब के माध्यम से सोशल मीडिया पर और विद्यालय के छात्रों के व्हाट्सएप ग्रुप पर उनका लिंक भेज कर बच्चों की पढ़ाई जारी रखे हुए हैं। उनके इस कार्य और पढ़ाने के तरीके को लेकर कई साथी अध्यापक तथा उनके खंड के बीआरपी भी उनकी तारीफ करते हैं। जिन बच्चों के घर पर स्मार्टफोन की सुविधा उपलब्ध नहीं है, उन्हें वह प्रतिदिन एसएमएस के माध्यम से कार्य भेजते हैं और अभिभावकों से फोन पर बातचीत करके फीडबैक भी लेते हैं तथा एजुसेट कार्यक्रमों को देखने के लिए भी प्रेरित करते हैं। इन्होंने अपना यूट्यूब चैनल 'शिक्षा-आपके द्वार' नाम से बनाया है ताकि देश भर के छात्र उनके द्वारा बनाए गए वीडियो से लाभान्वित हो सकें।

स्वयं के वीडियो लेक्चर तैयार किए नरेश जांगड़ा ने

कोविड-19 के चलते शिक्षण संस्थान बंद होने से जो चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई है उसमें सकारात्मकता ढूंढने वाले शिक्षकों में से एक नाम है नरेश जांगड़ा का,जो फतेहाबाद जिले के गाँव एमपी रोही के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में गणित प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं और इसी विद्यालय के मुखिया के जिम्मेदारी भी आजकल उन्हीं के पास है। नरेश लगभग 11 वर्ष से शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। शुरू से ही अध्यापन के नवाचारी तरीकों को खोजने व उनके क्रियान्वयन में इनकी विशेष रुचि रही है। अपने विद्यार्थियों को पुस्तकों से बाहर निकालकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाना, कक्षा कक्ष में कंप्यूटर-प्रोजेक्टर आदि के प्रयोग से बच्चों की अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर व प्रभावी बनाना उनकी विद्यालय की दिनचर्या में शामिल है। अब कोविड-19 के कारण उत्पन्न विषम परिस्थिति की नकारात्मकता में उन्होंने कुछ सकारात्मक खोजने का प्रयास किया। केवल अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को ही नहीं, अपितु हरियाणा के सभी राजकीय राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को दृष्टिगत रखते हुए उन्होंने यूट्यूब के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण की शुरुआत की। उन्होंने बताया कि समय की आवश्यकता अनुसार ई-लर्निंग ही ऐसा उपाय है जिससे छात्र व शिक्षक एक दूसरे के साथ संपर्क में रहकर शिक्षण अधिगम को सफल बना सकते हैं। ऐसे में एक तरीका तो छात्रों को नोट्स या अन्य लिखित सामग्री उपलब्ध करवाना हो सकता है, जबकि गणित जैसे विषय में यह तरीका अधिक कारगर नहीं है। गणित को समझने के लिए छात्र व अध्यापक के बीच दो तरफा मौखिक संवाद अनिवार्य है। परंतु ग्रामीण परिवेश के छात्रों के पास सीमित संसाधनों के चलते द्विपक्षीय संवाद कठिन था। ऐसे में उन्होंने अप्रैल के प्रथम सप्ताह में ही दसवीं व बारहवीं के छात्रों को व्हाट्सएप के माध्यम से ऑनलाइन कक्षा कक्ष का रूप देते हुए स्वयं के वीडियो लेक्चर तैयार किए तथा अपने छात्रों को उपलब्ध करवाए। इसका परिणाम यह हुआ कि अधिकांश बच्चे अपने आप प्रश्न हल करने लगे। परंतु आप यहीं नहीं रुके, आपने वीडियो के लिंक उन्होंने सोशल मीडिया पर शेयर किए तो उनके पास विभिन्न जिलों के प्रवक्तागण एवं प्राचार्य के फोन आए कि उन्हें नियमित रूप से वीडियो भेजी जाए ताकि वे अपने-अपने विद्यालयों में भी सामग्री उपलब्ध करवा सकें। इसके लिए उन्होंने व्हाट्सएप पर कुछ ग्रुप बनाए जिसमें कक्षावार अपने वीडियो लिंक भेज रहे हैं और लगभग 2,000 से अधिक छात्र-छात्राएँ व शिक्षक उनके लेक्चर देख पा रहे हैं।

के बीच शिक्षक अपनी अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए बहुत अच्छा काम कर रहे हैं तथा विद्यार्थियों को ऑनलाइन पढ़ा रहे हैं। इसके साथ-साथ सरकार ने शिक्षकों की ड्यूटीज़ अन्य कार्यों में भी लगा रखी है, जिन्हें वे पूरे मनोयोग से कर रहे हैं। कर्मठ योद्धा शिक्षक विद्यार्थियों को प्रतिदिन पढ़ाई का कार्य देते हैं। कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं जो अपनी बेहतर कार्य शैली, कर्तव्य परायणता, समर्पण भावना से प्रेरणादायक, सार्थक तथा लीक से हटकर कार्य करते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों, अभिभावकों, अधिकारियों व समाज के लोगों के विश्वास पात्र होते हैं। उनकी अपनी पहचान सामान्य शिक्षकों से अलग होती है। वे सदैव बच्चों के उज्ज्वल भविष्य, विद्यालय के विकास के लिए अपनी ऊर्जा सकारात्मक कार्यों में लगाते हैं ताकि एक साफ-सुथरे समाज का निर्माण हो सके। ऐसे शिक्षक हर स्थिति में बढ़िया काम करते हैं। आज जब संकट के इस दौर में विद्यालयों को कुछ माह के लिए बंद करना पड़ा है विद्यार्थियों को घर

डॉ.विजय चावला ने तैयार की एनिमेटिड वीडियो सीरिज

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योडक में कार्यरत हिंदी प्राध्यापक डॉ.विजय कुमार चावला ने हिन्दी भाषा को रुचिकर बनाने के लिए व्याकरण की एनिमेटिड कार्टून मूवीज तैयार की हैं। उन्होंने बच्चों को व शिक्षकों को सभी व्हाट्सप्प ग्रुप्स में तथा 'घर से पढ़ाएँ ' अभियान के तहत इसे निःशुल्क प्रदान किया है। सभी ओर से व्याकरण की एनिमेटिड वीडियो की खूब प्रशंसा हो रही है। सरकारी ही नहीं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के द्वारा भी इन्हें अपने-अपने ग्रुप्स में साझा करना शुरू कर दिया गया है।

डॉ. चावला ने बताया कि उनका मकसद है कि बच्चों को हिन्दी भाषा में सक्षम बनाया जाए। बच्चों को हिन्दी भाषा रुचिकर बनाते हुए पढ़ानी चाहिए। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मोबाइल एप्प के माध्यम से हिन्दी व्याकरण के उपविषय वर्ण विचार, शब्द विचार, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अविकारी शब्द, वाक्य तथा कारक आदि उपविषयों की एनिमेटिड वीडियो तैयार की हैं। इस वीडियो का प्रयोग 'घर से पढ़ाओ' अभियान के तहत सफलतापूर्वक हो रहा है। चावला ने बताया कि इन वीडियो में उन्होंने कार्टून पात्रों निक, जो तथा पिंकी आदि पात्रों का सफल प्रयोग किया है। कार्टून पात्रों ने अध्यापक व बच्चों की भूमिका अदा की है। वीडियो में आवाज़ उनकी स्वयं की है। विषयवस्तु व संवाद योजना उनके द्वारा खुद लिखी गई है। वीडियो को रोचक व सार्थक बनाने के लिए वातावरण कक्षा-कक्ष का ही लिया गया है। साउंड एफेक्ट्स में विद्यालय व कक्षा-कक्ष के वातावरण को ध्यान में रखा गया है। उन्होंने बताया कि एनिमेटिड कार्टून मूवीज़ जो दृश्य-श्रव्य माध्यम का नवाचारी प्रयास है, वह बच्चों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है।

डॉ. चावला 'घर से पढ़ाओ अभियान' नामक फ़ेसबुक पेज बना रखा है, जिस पर वह प्रतिदिन डिजिटल कंटैंट पोस्ट कर रहे हैं। उनका मानना है कि सभी अध्यापकों को बच्चों को अपने-अपने विषयों से संबधित नोट्स बनाकर बच्चों को प्रदान करने चाहिएं। उन्होंने बताया कि उनके कंटैंट को लगभग सत्रह हज़ार लोगों ने देखा है और इसका लाभ भी उठाया है।

पाठ्यक्रम के ही नहीं, अनेक प्रेरक वीडियो भी तैयार किए अरूण कैहरबा ने

यमुनानगर के अरुण कैहरबा ने सिलसिलेवार वीडियो बनाकर यूट्यूब के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षण सामग्री भेजी। भक्तिकाल के कवि सूरदास के पद, तुलसीदास के प्रसिद्ध ग्रंथ रामचरितमानस के अंश राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद की चौपाइयाँ और दोहे, रीतिकालीन कवियों के कवित व सवैये, गद्य खंड से स्वयं प्रकाश की कहानी 'नेता जी का चश्मा', रामवृक्ष बेनीपुरी का रेखाचित्र बाल गोबिन भगत, पूरक पुस्तक कृतिका भाग-2 से शिवपूजन सहाय के आत्मकथात्मक उपन्यास का अंश 'माता का अंचल', कमलेश्वर की कहानी 'जॉर्ज पंचम की नाक, मधु कांकरिया का यात्रा-वृत्तांत 'साना साना हाथ जोड़ि' का पाठ, व्याख्या, काव्य सौंदर्य, चर्चाएँ आयोजित कीं। कक्षा नौवीं की पुस्तकों से प्रेमचंद की कहानी 'दो बैलों की कथा' राहुल सांकृत्यायन का यात्रा वृतांत 'ल्हासा की ओर', फणीश्वर नाथ रेणु का रिपोर्ताज 'इस जल प्रलय में' मृदुला गर्ग की प्रेरणादायी रचना 'मेरे संग की औरतें', अन्य कक्षाओं से भगवतीचरण वर्मा, केदारनाथ अग्रवाल की कविताओं पर वीडियो बनाई। इसके अलावा गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के जीवन व साहित्य और ओरिगेमी, लॉकडाउन में विद्यार्थियों की स्थिति, अध्यापकों की भूमिका आदि विषयों पर वीडियो तैयार की गई। वीडियो का फायदा उनके विद्यालय के अलावा अन्य विद्यालयों के विद्यार्थियों को भी हुआ। अन्य शिक्षकों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं ने निरंतर उनका उत्साहवर्धन किया।

बैठकर घर बैठने पर मजबूर होना पड़ा है तो सरकार ने बच्चों की पढ़ाई की चिंता करते हुए ऑनलाइन शिक्षा का प्रावधान किया। हालांकि इस कार्य की कुछ सीमायें भी रहीं, फिर भी संकट की स्थिति में ये प्रयास काफी कारगर रहे। ऑनलाइन शिक्षा को सफल करने के लिए वैसे तो सभी शिक्षक अपने अपने हिसाब से प्रयासरत हैं, किंतु इन्हीं शिक्षकों में से कुछ ऐसे शिक्षक भी हैं इनका तरीका इस योजना को पंख लगाने का कार्य कर रहा है। प्रदेश भर से कुछ ऐसे ही शिक्षा जगत के कर्मठ योद्धाओं का जिक्र करना चाहेंगे जिनके ऊपर शिक्षा जगत को नाज है। हम यहाँ यह बताना चाहेंगे कि वे किस तरह से ऑनलाइन शिक्षा को गति देने का सार्थक कार्य कर रहे हैं। वैसे तो समर्पण भाव से लगे शिक्षकों की संख्या बहुत अधिक है किंतु कुछ शिक्षक जिन की जानकारी हमें मिली उनके माध्यम से हम यह बताना चाहेंगे कि हरियाणा के सरकारी विद्यालयों में कार्यरत ऊर्जावान शिक्षक अपनी योजनाओं अपनी कारगर कार्यशैली से किस तरह बेहतरीन कार्य कर के विद्यार्थियों का भला कर रहे हैं तथा शिक्षा को नयी उड़ान दे रहे हैं। हम यहाँ जिन शिक्षकों से मिलवा रहे हैं उनके नाम हैं -श्रीभगवान बव्वा रेवाड़ी, पूनम फरीदाबाद, मनोज पवार कैथल, नरेश जांगड़ा फतेहाबाद, ज्योत्स्ना कलकल गुरुग्राम, अरुण कैहरबा यमुनानगर, प्रदीप कुमार बालू अंबाला, डॉ. ओम प्रकाश कादियान फतेहाबाद, प्रदीप मलिक पानीपत, सर्वेश अहमद करनाल, बलवान सिंह भिवानी ।

प्राथमिक कक्षाओं का मनोरंजक डिजिटल कंटेंट तैयार किया शिक्षक प्रदीप कुमार ने

इस कार्यक्रम को पूर्ण रूप से गति देने में जिला अंबाला के खंड अंबाला-2 में स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला सेक्टर-9 के प्राथमिक अध्यापक श्री प्रदीप कुमार बालू जी-जान से लगे हुए हैं। प्राथमिक कक्षाओं के सभी स्तरों के लिए वे प्रतिदिन एक नया टॉपिक लेकर घर से वीडियो शूट करके डिजिटल कंटेंट तैयार करते हैं। इसके पश्चात बच्चों तक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से पहुँचा देते हैं। उनके इस कार्य को देखते हुए उन्हें स्टार टीचर भी चुना गया है। उनका मानना है कि हम सभी की जिम्मेदारी, बेहतर को शिक्षा सरकारी और इसके लिए वे लगातार प्रयासरत रहते हैं। कई अध्यापक साथियों से चर्चा करके वे सभी कक्षाओं के विषयों की वीडियो बना रहे हैं ताकि किसी भी विद्यार्थी की पढ़ाई में बाधा न आए। इनके कार्यों को देखते हुए 'मंथन' नामक गैर सरकारी संस्था ने जो सरकारी शिक्षकों का एक साझा समूह है,ने इन्हें 'घर से पढ़ाओ' अभियान के तहत ही प्रोग्राम कोऑर्डिनेटर भी बनाया है। जिन विद्यार्थियों के पास एंड्रॉयड फोन उपलब्ध नहीं हैं, उन्हें एसएमएस के माध्यम से गृह कार्य करवाया जाता है। प्रतिदिन बच्चों से व अभिभावकों से यह बात करते हैं उनसे फीडबैक लेते हैं रविवार के दिन बच्चों के मनोरंजन के लिए शैक्षणिक व शैक्षणिक गतिविधियों की वीडियो बनाकर बच्चों को उनके लिंक भेजते हैं। हरियाणा ही नहीं बल्कि विभिन्न राज्यों में भी यह इनके द्वारा बनाई गई वीडियो को सराहना मिल रही है।

ई-लर्निंग के लिए 'फोर-सी' का तरीका अपनाया ज्योत्स्ना ने

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बादशाहपुर जिला गुरुग्राम में रसायन विज्ञान प्रवक्ता ज्योत्स्ना कलकल ने ई-लर्निंग प्रणाली को कामयाब करने के लिए 'फोर-सी' तरीका अपनाया है, वह है- कन्वींस, कनेक्ट, कंबाइन और केयर। इस तरीके से इन्हें कामयाबी भी मिली है। ज्योत्स्ना कलकल ने सबसे पहले अभिभावकों व विद्यार्थियों का भरोसा दिलवाया कि टेलीविजन पर आने वाली शिक्षा सामग्री तथा मोबाइल के माध्यम से पढ़ाई हो सकती है। इन्होंने यह तरीका भी अपनाया कि वर्कशीट, कविता, वीडियो की मदद से बच्चे शीघ्रता से सीखेंगे। वे

कठिन विषयों पर रोचक तरीके से वीडियो बनाती हैं तथा बच्चों के ग्रुप में डालती हैं। यह एक बेहतरीन तरीका है कि इन्होंने कविताओं के माध्यम से भी रोचक तरीके से बच्चों को सिखाया है। ज्योत्स्ना एक अच्छी कवयित्री भी हैं, उसका फायदा विद्यार्थियों को मिल रहा है। विज्ञान विषय को कविताओं के माध्यम से विद्यार्थी तक पहुँचाना इनकी सार्थक पहल कही जा सकती है। इसके साथ-साथ यह बराबर विद्यार्थियों के संपर्क में रहकर दिए गए कार्यों की जाँच करती हैं। वे फोन पर विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करती हैं तथा अभिभावकों से भी पूछताछ करती रहती हैं। इनका लक्ष्य है यह ज्यादा से ज्यादा वीडियो बनाकर विद्यार्थी तक पहुँचायें ताकि घर बैठे विद्यार्थियों की पढ़ाई

ऑनलाइन कला-प्रतियोगिताएँ करा रहें है कला-अध्यापक प्रदीप मलिक

पानीपत के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इसराना के कला अध्यापक प्रदीप मलिक ने बताया कि उनके विद्यालय में छात्रों के कक्षावार ग्रुप बनाए हुए हैं जहाँ प्रत्येक विषय अध्यापक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराता है। बच्चों में रचनात्मक व क्रियात्मक अभिरुचि पैदा करने के लिए व्यक्तिगत स्तर पर भी 'बेस्ट आउट ऑफ वेस्ट' से संबंधित वीडियो भी व्हाट्सएप ग्रुप में भेजी गई जिससे बच्चों को घर पर पड़े खराब, अनावश्यक वस्तुओं से फोटो फ्रेम, सजावटी गमले व सुंदर शो-पीस बनाना सिखाया गया इसके साथ ही छात्रों की रुचि अनुसार दृष्टि क्रम सिद्धांत व ज्यामिति से संबंधित वीडियो भी समय-समय पर भेजकर उन्हें शिक्षण करवाया गया। विद्यार्थियों से निरंतर संपर्क रखते हुए उनसे शिक्षण कार्य बारे में चर्चा की गई ताकि उन्हें कोई परेशानी न हो। इसके साथ ही छात्रों के माता-पिता व अभिभावकों से भी ऑनलाइन वीडियो कॉल करके बात की गई ताकि बच्चों को पढ़ाने में उनका भरपूर सहयोग मिल सके। प्रतिक्रिया-प्रपत्र में बच्चों से ऑनलाइन शिक्षण अनुभव भी लिए गए ताकि उनके मनोभावों से अवगत हो सकें। 'घर से पढ़ाओ' अभियान के तहत छात्रों की ऑनलाइन पोस्टर प्रतियोगिता भी कराई गई ताकि उनमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का संचार हो सके। इसके अलावा उनके द्वारा किए गए शिक्षण कार्य में से ही साप्ताहिक स्तर पर बेस्ट स्टूडेंट अवार्ड घोषित किया गया ताकि विद्यार्थियों में शिक्षण कार्य करने की रुचि बढ़ती रहे। इसके साथ ही बच्चों के घर-घर जाकर पुरानी पाठ्य-पुस्तकों का आदान-प्रदान भी करवाया गया ताकि वे घर बैठकर अपना शिक्षण कार्य करते रहें। इन्होंने स्वयं भी घर बैठकर समाज को सकारात्मक संदेश देने का प्रयास किया है।

कोरोना काल में भी विद्यार्थियों से लगातार जुड़े रहे शिक्षक ओमप्रकाश कादयान

फतेहाबाद के गाँव मोहम्मदपुर रोही के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत कला शिक्षक तथा जाने माने साहित्यकार डॉ ओमप्रकाश कादयान साहित्य, छायांकन चित्रकारी व शिक्षा को समर्पित ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्होंने पिछले 22 वर्षों से विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य के लिए मन लगाकर काम किया है। कोरोना के संकट में भी यह सार्थक प्रयास कर रहे हैं। ई-लर्निंग प्रणाली को कामयाब करने तथा विद्यार्थियों को लगातार पढ़ाई से जोड़े रखने को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने के लिए डॉ. ओम प्रकाश कादयान समय निकालकर अलग-अलग विषयों पर वीडियो बनाते हैं तथा व्हाट्सएप के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाते हैं। इसके साथ-साथ बच्चों से फोन पर बात करके ऊर्जा देने का कार्य करते हैं। यही नहीं, बीच-बीच में गाँव में घर-घर जाकर बच्चों का काम देखते हैं तथा उनकी समस्याएँ पूछते हैं। विद्यार्थी घर बैठे-बैठे ऊबें नहीं, इसके लिए डॉ. कादयान ने बच्चों के लिए विभिन्न ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ करवाई। पढ़ाई के साथ-साथ साहित्य से जुड़े रखने तथा बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिए पेंटिंग बनाओ, कविता लिखो, स्लोगन व पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें बच्चों ने उत्साह से भाग लिया। विद्यार्थी ऑनलाइन जुड़ें, इसके लिए अपने साथियों के साथ घर-घर गए तथा बच्चों के व्हाट्सएप नंबर जुटाकर उन्हें ग्रुप से जोड़ा। जिन बच्चों या अभिभावकों के पास स्मार्टफोन नहीं हैं उन्हें पड़ोस के बच्चों के साथ जुड़ने की प्रेरणा दी ताकि उनकी पढ़ाई सुचारू रूप से हो सके।

लॉकडाउन के दौरान 'ई-पत्रिका' निकाली प्राध्यापक श्रीभगवान बव्वा ने-

रेवाड़ी जिले के लुखी गाँव में स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में अंग्रेजी प्राध्यापक के रूप में कार्यरत श्रीभगवान बव्वा ने लॉकडाउन लागू होने से पहले ही अपने प्राचार्य कँवर सिंह यादव के नेतृत्व में न केवल व्हाट्सएप ग्रुप तैयार किए, अपितु 22 मई को पहला लेक्चर इन ग्रुप्स तथा यूट्यूब पर अपलोड कर दिया, जिसे मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी सौम्या गुप्ता तथा जिला शिक्षा अधिकारी राजेश गुप्ता ने विशेष रूप से सराहा। अंबेडकर जयंती पर उन्होंने खंड स्तरीय पेंटिंग प्रतियोगिता का सफल ऑनलाइन आयोजन करवा कर इस दिशा में नए आयाम रचे। इतना ही नहीं, उन्होंने 4 मई को विद्यालय में ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी तथा 9 मई को होमवर्क दिखाओ-नोटबुक सजाओ प्रतियोगिता का न केवल आयोजन किया, अपितु विजेताओं को ही प्रमाण-पत्र भी दिए। इसी प्रकार उन्होंने 25 अप्रैल से ही नामांकन प्रक्रिया ऑनलाइन प्रारंभ कर दी जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए। उनकी प्रेरणा से विद्यालय तथा शिक्षकों को नई ऊर्जा मिली तथा 16 मई को मेगा ई-पीटीएम बेहद सफल रही। इसी दौरान उनकी एक अन्य विशेष उपलब्धि विद्यालय की ई-पत्रिका का संपादन करना रहा। उनका मानना है कि कोरोना के कठिन काल में ही नहीं, अपितु दैनिक जीवन में भी ई-लर्निंग को प्राथमिकता से अपनाना चाहिए।

निरंतर जारी रहे।

कुछ सीमाएँ भी रहीं 'दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम' की-

इस संकट काल के दौरान अपने अपने अभिनव प्रयासों से बच्चों को ज्ञान-दान देने का कार्य अनेक शिक्षकों ने किया। लेकिन यह मानने में भी कोई हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए कि इन प्रयासों की कुछ सीमाएँ भी रहीं। नव संचार माध्यमों का पूरा ज्ञान विद्यार्थियों को नहीं था। अनेक विद्यार्थी ऐसे भी हैं जिनके पास स्मार्ट फोन नहीं है, व्हट्सएप्प की सुविधा नहीं हैं। इस कारण वे अपने अन्य साथियों की भाँति अध्यापकों द्वारा दिया गया कार्य न कर पाए। ऐसे वक्त में अन्य सहपाठियों के घर जाने की अनुमति भी संभवतः उनके अभिभावकों ने नहीं दी होगी। दूसरी बात यह है कि जिन घरों में स्मार्ट फोन हैं भी, वह फोन एक ही होने के कारण बच्चों के पिता या बड़े भाई अपने साथ ले जाते हैं। शाम को उनके घर लौटने तक बच्चे फोन पर दिए गए कार्य या अध्यापकों द्वारा भेजे गए पाठ से संबंधित वीडियो या अन्य शिक्षण सामग्री देखने में असमर्थ रहे। फोन की उपलब्धता होने पर उसमें इंटरनेट डाटा न होने या उसकी उचित स्पीड न होने की समस्या भी सामने आई। ज्यादा शिक्षण सामग्री डाउनलोड करके फोन में स्टोर होने से फोन की मैमोरी बहुत कम रह गई, जिस कारण से नयी शिक्षण सामग्री विद्यार्थी न देख पाए। घरों के मोबाइल फोन काफी व्यस्त हो गए। अलग-अलग विषयों के अध्यापकों, विद्यालय के

नवाचार से ई-लर्निंग को बनाया रोचक

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एनएच-तीन फरीदाबाद में शिक्षक ई-शिक्षण में नवाचार अपना कर शिक्षण में रोचकता लाने का प्रयास कर रहे हैं और बच्चों की उत्सुकता और ग्राह्यता को बढ़ाने में शिक्षण में सहायक सामग्री का उपयोग कर रहे हैं। विद्यालय के प्राचार्य रविन्द्र कुमार मनचन्दा ने बताया कि सभी विषयों को नवाचार द्वारा रुचिकर पाठ्य सामग्री एवं टीचिंग लर्निंग मैटिरियल से आसानी से सीखा जा सकता है। अंग्रेजी, गणित तथा विज्ञान शिक्षण में सहायक सामग्री की भूमिका और भी बढ़ जाती है। उन्होंने आगे कहा कि अनुसंधान पर आधारित नवाचारों से शैक्षिक स्तर को रूपांतरित ही नहीं बल्कि शैक्षिक चिंतन से कर्म का चरित्र बदलने की कोशिश की जा रही है। शिक्षा में नवाचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। नवाचार बच्चों के सहज विकास की प्रकिया के साथ ताल-मेल बिठाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हम यह देखने की कोशिश करते हैं कि बच्चा अपनी गतिविधियों से क्या सीख पा रहा है। यदि हम यह देख पाएँ तो ढेरों नवाचार और शिक्षण विधियाँ अपने आप जन्म लेती हैं, जिनसे हम बच्चों को जटिल, उबाऊ और अरुचिकर शिक्षण से हटाकर, सरल आनंददायी और रुचिकर शिक्षा दे सकते हैं। नवाचार अपने काम के प्रति रचनात्मक, जिम्मेदार, ठोस व व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने का एक सशक्त माध्यम होता है। मनचन्दा ने कहा कि विद्यालय की गणित प्राध्यापिका जसनीत कौर, एसएस मिस्ट्रेस अंशुल, विज्ञान अध्यापिका साधना, गृह विज्ञान अध्यापिका रेखा, प्राइमरी अध्यापिका अमृत कौर सहित अन्य अध्यापक शिक्षण को खेल-खेल में सीखने तथा रुचिकर पाठ्य सामग्री ई-शिक्षण के माध्यम से ग्रुप में प्रेषित कर रहे हैं। प्राध्यापिका जसनीत कौर और विज्ञान अध्यापिका साधना को खंड शिक्षा अधिकारी डॉ.इंदु गुप्ता द्वारा 'स्टार टीचर ऑफ द वीक' पुरस्कार से अलंकृत भी किया गया है। एसएस मिस्ट्रेस अंशुल ने बच्चों को खेल-खेल में और सरलता से एक्शन वर्डस, प्रिपोजिशन, कंपाउंड वर्ड्स, पोजिशनल वर्ड्स, एडजेक्टिव्स आदि के सुंदर पोस्टर बना कर रोचक और आकर्षक तरीके से ग्रुप में शेयर किए और बच्चों से फीडबैक भी लिया, बच्चों का फीडबैक बहुत ही उत्साहवर्धक आया तथा उन्होंने सभी टॉपिक्स को आसानी से सीख लिया। प्राचार्य ने कोरोना महामारी के कारण विद्यालय बंद होने पर अध्यापकों द्वारा नई विधियों से ई-शिक्षण को रोचकता देने के लिए सराहना की तथा कहा कि सीमित संसाधनों के बाद भी उनके विद्यालय के सभी अध्यापक बच्चों को बेहतरीन शिक्षा देने के लिए कर्तव्यबद्ध और प्रयासरत हैं।

प्रभावी नवाचारी शिक्षण गतिविधियों के लिए प्रेरित कर रहे हैं विद्यालय प्रभारी बलवान सिंह

भिवानी जिले के खंड बवानीखेड़ा में स्थित राजकीय उच्च विद्यालय मिलनपुर के मुख्याध्यापक प्रभारी व हिंदी प्रवक्ता बलवान सिंह मुवाल जी-जान से समर्पित भाव कोरोना-काल में भी दूरवर्ती शिक्षण में जुटे हुए हैं। बलवान सिंह प्रतिदिन नया टॉपिक लेकर सरल व रोचक तरीके से घर से पढ़ाते हुए की वीडियो बनाकर उनके लिंक बच्चों तक व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से पहुँचाते हैं। उनका मानना है कि वैसे तो सोशल मीडिया पर हर विषय की सामग्री उपलब्ध है, लेकिन हमारे सरकारी स्कूलों के बच्चे हमारे स्वयं के तरीके से अच्छी तरह समझते हैं। वे अन्य अध्यापकों से चर्चा करके इस प्रकार की सभी विषयों की वीडियो बनाकर रोज सभी के साथ साझा करते हैं जिससे उनकी यह दृश्य श्रव्य सामग्री हरियाणा के अतिरिक्त अन्य राज्यों के विद्यार्थियों को भी लाभान्वित कर रही है। जिन बच्चों के पास एंड्रॉयड फोन नहीं है उन्हें भी दूसरे बच्चों के साथ बैठकर पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है। समय-समय पर अभिभावकों को भी अपने बच्चों को ई-लर्निंग प्रणाली से जोड़ने की प्रेरणा देते हैं, पुस्तकों का आपसी आदान-प्रदान करने में सहयोग करते हैं। विद्यालय मुखिया के तौर पर वे उन अध्यापकों को प्रशंसा-पत्र देकर प्रेरित करते हैं जो प्रभावी व नवाचार विधियों से ऑनलाइन पढ़ाने में निष्ठा रखते हैं। प्रत्येक बच्चे से पढ़ाई संबंधी फीडबैक लेते हैं ताकि हर बच्चा ऑनलाइन पढ़ाई से जुड़ा रहे। जिले के शिक्षा अधिकारियों ने उनके इस कार्य को सराहा है।

मुखियों या अन्य अधिकारियों द्वारा बार-बार फोन करके शिक्षण कार्य की प्रगति या मोनिटरिंग की गई। घर में मौजूद इकलौता मोबाइल फोन घर का मुखिया अपने कार्य-क्षेत्र पर ले गया, ऐसी अवस्था में वह दिन भर यही कहता रहा- 'जी, मैं तो काम पर आ गया हूँ। बच्चा तो घर पर है, उससे बात नहीं हो सकती।' कुछ बच्चों से बात करने पर यह भी पता चला कि सभी विषयों के अध्यापक बहुत-बहुत होमवर्क दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि इतना होमवर्क तो तब भी नहीं मिलता था, जब नियमित तौर पर विद्यालय में जाते थे। तब सप्ताह में एक दिन रविवार का तो आता था, अब तो सातों दिन अध्यापक काम में व्यस्त रखते हैं। टेलीविजन पर शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रसारण भी हुआ। अग्रिम रूप से प्रसारित होने वाले पाठों की जानकारी भी विभाग ने अध्यापकों के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाई। गर्मी के मौसम में अक्सर गाँवों में लगने वाले बिजली के कट टेलीविज़न प्रसारण देखने के मार्ग में बाधा बने। शिक्षण के प्रति उदासीन रवैया रखने वाले लापरवाह विद्यार्थी इस दौरान भी काफी लापरवाह बने रहे। अध्यापक द्वारा एक-एक विद्यार्थी के साथ लगातार संवाद स्थापित न कर पाने के कारण इन्होंने उनके द्वारा दिए गए गृह-कार्य को पूर्ण करने में भी कोई रुचि नहीं दिखलाई।

कुछ भी हो, अचानक आई इस आपदा के समय शिक्षा विभाग व शिक्षक वर्ग द्वारा जिस प्रकार पूरी निष्ठा व कर्मठता से कार्य किया गया, वह बहुत सराहनीय रहा। ई-लर्निंग शिक्षा प्रणाली प्रदेश में बहुत कामयाब रही।

-डॉ.सुमन कादयान
बी-180, मार्बल सिटी, बरवाला रोड़, हिसार
हरियाणा

लॉकडाउन में घर बने सीखने-सिखाने की प्रयोगशाला

प्रमोद कुमार

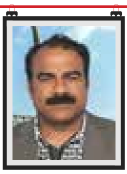

राष्ट्र में कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण लॉकडाउन चला। जिसके कारण विद्यालय जो औपचारिक शिक्षा के केन्द्र थे, बंद रहे। प्रदेश के 22,000 स्कूलों में पढ़ने वाले 52 लाख बच्चे घरों में बंद रहे और परपंरागत ढंग से अध्यापक के सीधे संपर्क में रहकर शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए।

इस समय मन में एक विचार आ रहा है कि शिक्षा अर्थात विद्या क्या है? यह एक ऐसा साधन है जो हमारे अन्दर स्वास्थ्य, विवेक, अनुशासन, विनय, सहयोग, सद्भाव, उत्साह, वीरत्व, सेवा के भाव जगा सके तथा ज्ञान, मूल्य और कौशल का रसपान करवा सके। सृष्टि के आरम्भ से ही यह शिक्षा आज की तरह औपचारिक तथा तोता रटंत न होकर अनुभव आधारित, गतिविधि आधारित, खेल-कूद तथा प्रत्यक्ष प्रमाण आधारित हुआ करती थी। विज्ञान, गणित, खगोल, रसायन, चिकित्सा, शिल्प, वास्तु, नीति, धर्म आदि के विद्वान घर-घर में होते थे तथा इन विषयों में क्रियात्मक एवं अनुभवपूर्ण शिक्षा ग्रहण करते थे। कालांतर में जो शिक्षण संस्थान औपचारिक शिक्षा के केन्द्र बने, वहाँ शिक्षा, ज्ञान एवं जानकारी तो प्रदान की गई, परंतु वे कौशल विकास के केंद्र नहीं बन पाए। स्कूली शिक्षा को देखें तो विद्यार्थियों को परीक्षा में अंक तो शत प्रतिशत प्राप्त हो रहे हैं परन्तु रचनात्मकता के सृजन का विकास नहीं हो पा रहा है। स्कूली शिक्षा का अथवा पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन का व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन से समन्वय नहीं है। विद्यार्थी बिना रुचि के विषयों को पढ़ते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005, सभी प्रकार के पॉलिसी के दस्तावेज, सभी रिपोर्ट, पाठ्यक्रम इस बात पर दबाव डालते हैं कि शिक्षा गतिविधि आधारित, बाल मित्रवत, बाल केन्द्रित, रुचिकर, व्यावहारिक, प्रयोगात्मक, कौशलपूर्ण तथा रोज़गार उन्मुख होनी चाहिए, परन्तु ऐसा नहीं हो रहा है। हालांकि पूरे संसार में जो पाठ्यक्रम है, हमारा पाठ्यक्रम उससे अलग नहीं है, परन्तु पढ़ने और पढ़ाने के तरीकों में बहुत भेद है। हम पढ़ाने पर पूरी ऊर्जा लगाते हैं जबकि विकसित देशों में पूरा ध्यान सिखाने पर दिया जाता है। हम ज्ञान पर जोर दे रहे हैं, वहाँ ज्ञान के प्रयोग पर जोर दिया जा रहा है। अब ज्ञान के केन्द्र तो विद्यालय हैं, परन्तु ज्ञान के प्रयोग के केन्द्र तो आपके घर पर भी हो सकते हैं। आप पाठ्यक्रम पूरा करने के दबाव में और समय के अभाव में अपने उन गुणों, रुचियों का विकास नहीं कर पाते। परन्तु कोरोना काल ने इन सबके लिए आपको काफी समय दिया।

शैक्षणिक सत्र का आरम्भ कुछ अलग ढंग से हुआ। अधिकतर विद्यार्थी अगली कक्षा में चले गए। घर पर रहते हुए भी वे बहुत कुछ सीख रहे थे। वास्तव में घर से बड़ी प्रयोगशाला कहीं नहीं है। यहाँ पर प्रयोग के अनेक साधन उपलब्ध हैं। इसे पूरा लर्निंग का केन्द्र बनाया जा सकता है। जिन बच्चों के पास ई-लर्निंग के साधन उपलब्ध हैं उनको ई-कक्षाएँ, प्रोजेक्ट, गतिविधियाँ बनाने, अपने वीडियो बनाने का सुनहरा अवसर मिला। अभिभावकों ने इस समय का उपयोग बच्चों के साथ खेलने में, उन्हें अपने बचपन के किस्से कहानियाँ सुनाने में, रिश्तों के बारे में जानकारी देने में, रसोई में खाना बनाना सिखाने में, कपड़े धोने, बरतन साफ करने, अच्छी आदतों का विकास करने में लगाया। अनुशासन, संस्कृति, संस्कार, समन्वय, सहनशीलता, सहयोग, समर्पण जैसे मानवीय गुणों का विकास करने का यह सुनहरा अवसर बना। बच्चों को अपने चित्रकला के, संगीत के, नृत्य एवं वादन के, कविता एवं साहित्य लेखन के गुणों को निखारने का अवसर और प्रोत्साहन मिला।

धार्मिक पुस्तकों का वाचन एवं सत्प्रसंग व्याख्या भाषा कौशल के विकास का महत्त्वपूर्ण साधन है। इसमें बच्चों ने अपने बुजुर्गों दादा-दादी, नाना-नानी के सान्निध्य में बैठकर वाचन किया। उनके माध्यम से सत्प्रसंग व्याख्या समझी-जानी, वृत्तांत सुने, वेद-शास्त्रों, उपनिषदों-पुराणों के साथ-साथ गुरुओं की वाणी, सूफियों-संतों की वाणी, भक्तिकाल के साहित्य तथा साहित्यकारों की जानकारी ग्रहण करने का सुअवसर मिला। कहानी कहने की कला विलुप्त होती जा रही थी, परन्तु परिवार के बुजुर्गों के पास कहानी सुनाने की इस प्रक्रिया का नई पीढ़ी में स्थानान्तरण अनिवार्य है। लॉकडाउन का समय इसके लिए काफी अच्छा रहा। पंचतन्त्र की कहानियाँ, गुलीवर की यात्रायें, सिंधबाद जहाजी, अरेबियन नाइट्स, बेताल पच्चीसी, न्याय प्रिय राजा विक्रम जिनकी अमिट छाप आज भी हमारे मन में है, वह हमें इस प्रकार दादा-दादी से सुनकर ही प्राप्त हुई है। हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश का मालव क्षेत्र तो सांग के लिए विख्यात है। ये विधायें भी लुप्त हो रही हैं। दादा लख्मी चन्द, माँगे राम, मेहर सिंह, बाजे भगत की रागनी

और प्रमुख सॉंग, नल दमयंती, सरवर वीर, मीरा बाई, सत्यवान सावित्री, सेठ तारा चन्द आदि आज भी उतने ही प्रासंगिक है। बहुत से घरों में ऐसे किस्से बच्चों को सुनाए गए। वास्तव में इन किस्सों, कहानियों के माध्यम से संस्कृति, संस्कार और साहित्य से रूबरू करवाने का यह सुनहरा अवसर मिलता है। भाषा के कौशलों (सुनने, बोलने, पढ़ने) के लिए ये महत्त्वपूर्ण हैं। यह सब इतना रुचिकर तथा आनन्ददायी होता है कि यह बच्चों को कल्पनालोक में ले जाता है। उनके पात्र उनकी कल्पना के अनुसार बनते हैं। यह उनके कहानी लेखन के गुणों तथा प्रदर्शन मूलक कलाओं का विकास करता है।

बहुत से घरों में सुबह का आरम्भ योग, ध्यान, प्राणायाम, व्यायाम, सूर्य नमस्कार से किया गया। इससे जहाँ शरीर को लाभ तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है वहीं एकाग्रता, रचनात्मकता, अनुशासन, धैर्य एवं स्मरण शक्ति के विकास में सहायता मिलती है तथा निराशा, नकारात्मकता, उदासीनता, चिड़चिड़ापन अपने आप गायब हो जाता है। बच्चों को घर का कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। सच तो यह है कि ये कौशल उनके जीवन यापन के लिए बड़े महहवपूर्ण हैं। छोटी अवस्था से ही अपने हाथ से कार्य करने की दक्षता प्राप्त करना बहुत ही लाभदायक है। कार्य कोई भी हो सकते हैं, जैसे- झाडू लगाना, पोंछा लगाना, सफाई करना, बरतन साफ करना, कपड़े धोना उन्हें प्रेस करना, बटन लगाना, जूते पालिश करना, कापी-किताबों को सहेजना आदि। इन कार्यों का कौशल प्राप्त होने पर बच्चों में श्रम के प्रति सम्मान का भाव जागृत होता है और आत्मनिर्भरता के अनुभव का विकास होता है।

लॉकडाउन के दौरान जब बाहर से मँगाई जा सकने वाली पकी-पकाई भोज्य सामग्री घर में आनी बंद हो गई तो हमारी रसोई अनेक प्रकार के प्रयोग करने का स्थान बनी। वास्तव में हमारी रसोई एक बहुत बड़ी प्रयोगशाला है, बड़ों के लिए ही नहीं, बच्चों के लिए भी। सब्जी काटने से लेकर भोजन बनाने और परोसने में बच्चे को गणित, विज्ञान जैसे गणना, आकलन, आकार, गुणा-भाग, इकाई, नाप-तोल के साथ-साथ अनुपात, मात्रा आदि का ज्ञान मिलता है, वहीं विज्ञान में ऊर्जा, ऊष्मा, रंग, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान से परिचय मिलता है। रसोई में भोजन बनाने की विधि (रेसिपी) को लिखने में भाषा विकास होता है तथा इसका वीडियो बनाने में भाषण, वाचन, प्रदर्शनमूलक कलाओं, कौशलों क्षमताओं, दक्षताओं का विकास होता है। यह पूर्णतः रचनात्मक है, सृजनात्मक है, प्रयोगशीलता को बढ़ावा देती है। परीक्षाओं के उपरान्त वैसे भी विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के समर कैम्प आदि में भाग लेते हैं और नृत्य, वादन, गायन, चित्रकला, ड्रामा आदि सीखते हैं। बहुत से विद्यार्थियों ने इन गतिविधियों में यह समय लगाया। शहरी क्षेत्र के बहुत से विद्यार्थी ऐसे भी थे जिनके पास ऑनलाइन कक्षाओं की सुविधा थी, उन्होंने नृत्य, गायन, वादन, थियेटर, मेकअप, ड्रेस डिजाइनिंग, इंटिरियर डिजाइन, होम डेकोरेशन, ड्राइंग, पेंटिंग, कविता, कहानी लेखन आदि पर प्रशिक्षण लिया और अपने वीडियो बनाकर दूसरों को भेजे, ताकि अन्य भाई-बहन व दोस्त भी सीख सकें। कुछ विद्यार्थियों ने साहित्य प्रतिभा के विकास में इस समय का सदुपयोग किया। कविताएँ, उपन्यास, कहानी लेखन से लेकर नाटक, एकांकी, संस्मरण, डायरी, पत्र लेखन, भाषण, गीत, चुटकुले आदि पर कार्य किया। प्रतिभा की तो विद्यार्थियों के पास पहले ही कमी नहीं होती, बस समय, प्रोत्साहन, अवसर आदि का अभाव था, जो लॉकडाउन के समय में प्रचुर मात्रा में मिला। ये सभी गतिविधियाँ संवेदनशीलता, सृजनात्मकता, क्रियाशीलता, सहनशीलता, उत्सवधर्मिता, रचनात्मकता एवं मनुजता को तो बढ़ाती ही हैं, साथ में स्वस्थ चिंतन, मनन, स्मरण को भी मजबूती प्रदान करती हैं। ये हिंसा, तनाव, कुंठा, अवसाद, निराशा से दूर रखती हैं। बच्चे का केवल अच्छे अंक लेकर उत्तीर्ण होना ही अनिवार्य नहीं है, उसमें स्कूल के दिनों में ही साहित्यकार, शिल्पकार एवं कलाकार के गुणों का विकास होना भी अनिवार्य है। यह सदी ज्ञान और सूचना की सदी नहीं है, यह कौशल की सदी है। आज प्रत्येक कम्पनी बहुमुखी प्रतिभा के कर्मचारी को प्राथमिकता देती है। उसके पास अच्छी अंकों की डिग्री होना ही काफी नहीं है, अपितु उसमें प्रबन्धन कौशल, रचनात्मकता, क्रियाशीलता, वाकपटुता, भाषण शैली, विश्लेषण का कौशल, नेतृत्व का कौशल, नवाचार का कौशल तथा जीवन कौशल भी होना चाहिए। इस वैश्विक आपदा के कठिन समय को अवसर में बदलने की आवश्यकता है। केवल किताबी ज्ञान और स्कूल ही सब कुछ नहीं है, कौशल और दक्षता भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। अतः माता-पिता और अभिभावक अपने बच्चों में उपरोक्त गुणों के विकास पर सदा बल दें। शिक्षण संस्थान बंद होने से बच्चों की कोई हानि नहीं हुई। पाठ्यक्रम की चिंता सरकार और विभाग को है। सरकार पाठ्यक्रम को छोटा कर सकती है। शैक्षणिक वर्ष को घटाया जा सकता है, बढ़ाया जा सकता। इसके लिए चिंता करने की आवश्यकता नही है। फ़िनलैंड जैसे देश में वार्षिक कैलेण्डर 170 दिन का है जबकि शिक्षा का अधिकार अधिनियम में न्यूनतम 200 से 220 दिन का है। हरियाणा राज्य में यह कैलेण्डर 231 दिन का होता है। अतः शैक्षणिक सत्र को लेकर माता-पिता और विद्यार्थी चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

घर में रहते हुए जब भी आपके पास समय हो तब आप अपने माता-पिता और परिवार के सदस्यों के साथ रोल प्ले, अन्ताक्षरी (विभिन्न प्रकार की दक्षताओं, जैसे- शब्दकोश, शहरों, महाद्वीपों, नगरों के नाम) खेल सकते हैं। बेटा पापा बने और पापा बेटा बने। घर की दैनिक समय सारणी, कार्यों का आबंटन, समय प्रबन्धन आदि सीखने का पूरा स्थान उपलब्ध है। घर में पंचायत, कमेटी की कार्यवाही, लघु संसद, प्रेस कॉन्फ्रेंस, पंचायत, चौपाल, अस्पताल, बैंक, डाकघर, पुलिस स्टेशन आदि के सीन बनाकर नाटक अथवा रोल प्ले किये जा सकते हैं। बहुत घरों में ऐसी गतिविधियाँ की भी गई हैं। पारिवारिक भजन संध्या का आयोजन किया जा सकता है। बच्चों को क्रय-विक्रय, लाभ-हानि सिखाई जा सकती है। घर पर नल ठीक करना, पंखे, कूलर, एसी साफ करना, खराब उपकरणों की मरम्मत करना सिखाया जा सकता है। घरों में लगाए गए पौधों की देखभाल करना, क्यारियों में आने वाले समय के लिए कद्दू, तोरी इत्यादि के बीज बोना, घर के पशुओं की देखभाल करना, उनके बारे में जानकारी दी जा सकती है। फसल चक्र, मिट्टी के प्रकार, पैदावार,

क्षेत्र की फसलें, अनाजों के प्रकार, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन, मधुमक्खी पालन, खुंब उत्पादन, नकदी फसल, कम्पोस्ट खाद, विभिन्न प्रकार के उर्वरक, कीटनाशक, आरगेनिक फसलों का उत्पादन और लाभ, फसलों का भण्डारण एवं अनाज का संरक्षण, जानवरों में प्रजनन और जनन प्रक्रिया, फूड प्रोसेसिंग जैसे अचार, चटनी, जैम बनाना, बड़ियाँ, पापड़, आलू के चिप्स बनाना, इन सबके लिए घर से बड़ी प्रयोगशाला कहाँ है। खाट बुनना, दरी बनाना, खेस, चद्दर, खड्डी, कपड़े पर कढाई, पेंटिंग, सूत एवं अन्य धागों की रंगाई, चंगेरी बनाना, पंखे, मूढ़े बनाना ये सभी हुनर हैं जिन्हें आज भी गाँवों और देहात में रहने वाले बच्चों को सिखाया जा सकता है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हुनर के स्थानान्तरण की व्यवस्था है। यहाँ मेरे पूरे कथन का अभिप्राय यही है कि घर और परिवार सम्पूर्ण प्रयोगशाला है। हमारे घरों में अनेक ऐसे उपकरण हैं जिनमें विज्ञान है। रसोई का गैस बर्नर, चिमटा, प्रेशर कुकर, सिरका, तेल, हल्दी, नमक, मसाले, रसायन, फ्रिज, मिक्सी, ओवन, माइक्रोवेव के अलावा बिजली उपकरण जैसे टयूब, बल्ब, एसी, एलईडी, डिश ऐंटिना, रिमोट, आयरन, हेयर ड्रायर, वाशिंग मशीन के अलावा दीवार घड़ी, केलकूलेटर, स्टेपलर, डोर बैल, मोबाइल, कम्प्यूटर, टेबलेट, लैपटॉप, फर्नीचर आदि के माध्यम से इनकी संरचना, आकार, निर्माण, इनके भाग-उपभाग आदि के माध्यम से बच्चों को अनेक प्रकार की जानकारी दी जा सकती है।

विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा NCERT के साथ ई-कक्षाओं अथवा टेलीविजन प्रसारण के माध्यम से शिक्षा व्यवस्था बारे कार्यक्रम बनाया गया तथा कुछ मोबाइल एप्लिकेशन भी इस सन्दर्भ में तैयार की गईं जो आपके साथ सांझा की गईं। आशा है आप सभी विद्यार्थी, अभिभावक, एवं स्कूल मुखिया उपरोक्त विषयों पर ध्यान देंगे तथा घर जो एक संस्कार की प्रयोगशाला है, मानव निर्माण का केन्द्र है, रिश्तों का आलय है उसका उपयोग करेंगे तथा इन दिनों का उपयोग करते हुए एक संवेदनशील समाज के निर्माण में सहयोग देंगे। ऐसे नागरिक तैयार करेंगे जो 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्' के सिद्धांत को मानता हो। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत को मानता हो, जो हिंसा से परे हो, मानवतावादी, उदारवादी, सहनशील, अनुशासन पालन करने वाला, प्रकृति और पर्यावरण का रक्षक, श्रम के प्रति सम्मान करने वाला, दयावान, सहयोगात्मक आचरण वाला तथा सम्पूर्ण कौशलों में दक्ष हो तथा इस संसार, प्रकृति एवं ब्रह्माण्ड के प्रति समर्पण भाव रखता है। आज इस लॉकडाउन ने आपको एक अवसर दिया है, जब हम बाहर नहीं जा सकते तो अपने अन्दर जाने का।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

कोरोना वायरस : विद्यालय खुलने पर एक चुनौती

यह बात बिल्कुल सत्य है कि कोरोना वायरस की दवाई आपके शरीर में ही है। अब तक जो भी कोरोना से स्वस्थ हुए हैं वे अपनी इम्युनिटी (शरीर की स्वयं रोगों से लड़ने की ताकत) से ही ठीक हुए है। मतलब यह हुआ कि हमारे शरीर की इम्यूनिटी कोरोना की दवाई है तो हमें सारा ध्यान अपनी इम्युनिटी बढ़ाने पर ही देना चाहिए।

विद्यालय आखिर कब तब बंद रहेंगे? आज नहीं तो कल खुलेंगे ही। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को जागरूक करना हम शिक्षकों का कर्तव्य ही नहीं नैतिक जिम्मेदारी भी है। क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को ही इस घातक वायरस से सुरक्षित रहने के लिए सचेत रहना है। सावधानी और सतर्कता ही इस वायरस से बचने का सुरक्षा कवच है। सर्वप्रथम विद्यार्थियों को प्रतिदिन स्वच्छता के विषय में इम्यूनिटी कैसे बढ़ेगी? योग का महत्त्व आदि महत्त्वपूर्ण बातों का विद्यालयी दिनचर्या का आवश्यक हिस्सा होना चाहिए। अक्सर देखा जाता है कि सरकारी विद्यालयों के बच्चे जंक फूड की तरफ ज्यादा आकर्षित होते हैं। ऐसी स्थिति में उन्हें पौष्टिक आहार के संदर्भ में जानकारी देते हुए गतिविधियों के माध्यम से इसके प्रति जागरूक करना चाहिए। योग की महत्त्वपूर्ण भागीदारी होनी चाहिए। योग को अक्सर विद्यालयों में औपचारिकता वश किया जाता है लेकिन इस बदलते परिवेश में इसका सख्ती से पालन होना चाहिए। साँसों का सही उतार-चढ़ाव इस बीमारी से बचने का मुख्य आधार है। शारीरिक शिक्षा के पीरियड में योग-व्यायाम के विषय में विस्तृत जानकारी दी जानी चाहिए। कहते हैं न- 'करत-करत अभ्यास के जड़मति, होत सुजान', तो छात्र भी जैसे-जैसे इससे लाभान्वित होंगे वैसे-वैसे इसे अपनी दिनचर्या में शामिल कर लेंगे।

यदि कोरोना वायरस को मात देनी है तो हमें इन सारी बातों को विद्यार्थियों को समझाना पड़ेगा। छात्रों को यह सिखाना अति महत्त्वपूर्ण है कि किन चीज़ों से हमारी इम्युनिटी बढ़ती है और किनसे घटती है? पहले इम्युनिटी बढ़ाने वाली चीज़ों पर ध्यान दें-

1. योग
2. व्यायाम या कोई खेल
3. घर का बना शुद्ध भोजन
4. आँवला (किसी भी रूप में खाएँ)
5. फल (खासकर खट्टे फल)
6. हरी सब्जियाँ
7. दालें
8. गुड
9. तुलसी एवं अन्य आयुर्वेदिक पेय पदार्थ
10. दूध दही, लस्सी, घी इत्यादि।

शरीर की इम्युनिटी घटाने वाली चीज़ें

1. मैदा (किसी भी रूप में जैसे ब्रेड, नान, भटूरे, बर्गर, पिज्जा, जलेबी, समोसा, कचौरी इत्यादि बिल्कुल न खाएं।
2. रिफाइंड आयल
3. चीनी (गुड़ शक्कर, खांड न खाएँ)
4. मैदा और चीनी से बनी चीज़ें
5. कोल्ड ड्रिंक पीना छोड़ दें।
6. पैकिंग वाली चीज़ न खाएँ।

इस तरह से बातों को बताते हुए उन्हें हैंडवॉश के सही तरीकों को सिखाया जाए। ये छोटे-छोटे नियम अपनाकर हम अपने तथा अपने विद्यालय को कोरोना के भय से मुक्त कर सकते हैं (जैसे-जैसे हम सावधान एवं सतर्क रहेंगे, वैसे-वैसे कोरोना हमसे दूर भागेगा। क्योंकि स्वस्थ बालक ही विद्यालय की नींव हैं। इसलिए अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ उपर्युक्त बातों पर ध्यान रखकर हम विद्यालय खुलने पर कोरोना वायरस की इस चुनौती को जीत सकेंगे।

डॉ वंदना दूबे
प्राध्यापिका हिन्दी
गुरुग्राम, हरियाणा

जन-सहयोग से बदली सरकारी स्कूल की तस्वीर

सुरेश राणा

कौन कहता है आसमाँ में सुराख नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो। सचमुच, तबियत से उछाले गए हर पत्थर ने विस्तृत आसमान को छेदकर अपना लक्ष्य पाया है। यह पत्थर है- दृढ़ आत्मविश्वास का, कड़े परिश्रम का और सतत लगन का। यदि कुछ कर गुज़रने का जज्बा है तो कोई भी कार्य कठिन नहीं होता, बस आवश्यकता होती है थोड़ा सा लीक से हटकर चलने की। यदि मनुष्य में हौसला और जनून है तो वह कुछ भी कर सकता है। कैथल जिले में सांख्य दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कपिल मुनि की तपोस्थली, देवभूमि कलायत की राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला की यात्रा करें, आपकी ये बातें सौ फीसदी सच सबित होंगी।

सरकारी स्कूल का नाम सुनते ही हमारे मस्तिष्क में टूटे-फूटे कमरे, मैले-कुचले बच्चे, अव्यवस्था का माहौल एक परंम्परागत स्कूल की तस्वीर उरभती है। लेकिन यह सरकारी विद्यालय थोड़ा हटकर है, जो नामी गिरामी प्राइवेट स्कूलों पर भारी है। विद्यालय का भव्य प्रवेश द्वार, स्मार्ट कक्षा-कक्ष रंगों व चित्रों से सजा भवन, प्रेरक नारे, उद्धरण, व्यवस्थित ढंग से बनी क्यारियाँ, पुस्तकालय, सभी भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता अनायास ही आगतुकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती हैं। विद्यालय को देखकर हर कोई दंग रह जाता है कि कोई भी सरकारी स्कूल इतना सुंदर, सुव्यवस्थित भी हो सकता है जिसके सामने प्राइवेट स्कूल भी बौने नजर आते हैं। ऐसा नहीं है कि यह विद्यालय हमेशा से ही आधुनिक सुविधाओं ने सुसज्जित, आकर्षक एवं सुन्दर था, लेकिन ग्रामवासियों के जुनून व जज्बे ने इस विद्यालय की काया पलट दी है।

जर्जर भवन, उखड़ा हुआ कमरों का पलास्टर, ऊबड़ खाबड़ स्कूल प्रांगण, साधारण मुख्य द्वार, कूड़े-कचरे के ढेर, मूलभूत सुविधाओं का अभाव यही पहचान तो थी इस विद्यालय की। नगर के युवा जोशीले क्रांतिकारी

विचार धारा के पोषक व्यवसायी प्रदीप गुप्ता विद्यालय के जीर्णोद्धार बीड़ा उठाते हैं। उनके नेतृत्व में सरकारी स्कूलों में घटते नामांकन एवं बिगड़ती व्यवस्था को सुधारने के लिए नगरवासी एकजुट होते हैं। बदलते परिवेश, प्राइवेट स्कूलों की लूट, गुणात्मक शिक्षा, सरकारी विद्यालय में भौतिक सुविधाओं पर चिंतन-मंथन करते हैं। सरकारी विद्यालयों की स्थिति में बदलाव लाने हेतु बैठकों का दौर निरंतर चलता है और गठन होता है रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत, कैथल (रजि़) का। परिवर्तन समाज का नियम है और कारवाँ निकल पड़ता है राजकीय प्राथमिक पाठशाला कलायत की सूरत एवं सीरत बदलने के लिए। प्रधान प्रदीप गुप्ता, धर्मपाल मास्टर, नरेन्द्र राणा, अजय शर्मा, अमित गर्ग, संदीप, राजेन्द्र राणा, जगत सिंह, नीरज कुमार, राजा यादव, रिंकू शर्मा, ईश्वर शर्मा, सुनील शर्मा, राजेश राणा, कुँवर रविन्द्र सूर्यवंशी आदि समिति के सदस्य जी जान से जुट जाते हैं। देखते ही देखते एक ही वर्ष में पेश की जाती है समुदाय के सहयोग की एक अनूठी मिसाल। प्रदीप गुप्ता के नेतृत्व में पाठशाला के जीर्णोद्धार पर खर्च की जाती है लगभग 32 लाख रुपए की राशि। विद्यालय को आधुनिक स्मार्ट स्कूल बनाने के लिए सब मूलभूत सुविधाएँ जुटाई जाती हैं।

समिति के प्रधान प्रदीप गुप्ता से जब इस 'बदलाव की बयार' विषय पर बातचीत की गई तो उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या लगातार घटती जा रही है। कुछ सरकारी स्कूल बंद हो गए हैं, कुछ बंद होने के कगार पर हैं। यदि ऐसा हुआ तो आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाएँगे। वे कहते हैं कि समिति का उद्देश्य है कि ऐसे सरकारी स्कूल तैयार किए जाएँ जिनमें सभी सुविधायें उपलब्ध हों और अमीर-गरीब के बच्चे ऊँच-नीच के बंधन को तोड़ते

हुए एक साथ पढ़ें व एक आदर्श समाज की स्थापना हो। शुरुआती तौर पर राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला कलायत का सुधार समिति द्वारा किया गया है। इस तर्ज पर कलायत नगर के सभी सरकारी स्कूलों के उद्धार के लिए समिति कृतसंकल्प है। प्रदीप गुप्ता कहते हैं कि सरकारी स्कूल हम सब के स्कूल हैं, समुदाय को इनके विकास एवम् उत्थान हेतु अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। सबको अच्छी एवम् गुणात्मक शिक्षा मिलनी चाहिए। सरकारी स्कूल बच्चों का सर्वांगीण विकास करते हैं। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे केवल किताबी ज्ञान ही नहीं अपितु मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक रूप से विकसित हों। ये नौनिहाल आने वाले भारत का उज्ज्वल भविष्य हैं। अच्छी व गुणात्मक शिक्षा ही एक सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण कर सकती है। जैसे संस्कार समाज व शिक्षक विद्यार्थियों में डालेंगे वैसे ही नागरिक तैयार होंगे। सरकारी शिक्षा बेहतर और सर्वसुलभ है, सरकारी विद्यालयों में सुशिक्षित एवं प्रशिक्षित अध्यापक कार्यरत हैं। बस आवश्यकता है उनको अभिप्रेरित करने की। वे कहते हैं कि हमें अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना होगा कि ये सरकारी स्कूल हम सबके हैं, सारे समाज के हैं। प्राइवेट स्कूलों की भारी भरकम फीस गरीब आदमी वहन नहीं कर सकता। कुछ लोग अपनी प्रतिष्ठा दिखाने के लिए प्राइवेट स्कूलों के मोहजाल में फँसे हुए हैं। उन्होंने बताया कि अगले सत्र से वे स्वयं अपने बच्चों को सरकारी स्कूल में दाखिल करवाने जा रहे हैं। समिति भी यह अभियान चला रही है कि नगर के सभी अभिभावक अपने बच्चों को कलायत के सरकारी स्कूलों में दाखिल करवाएँ, जिसकी शुरूआत कन्या पाठशाला से हो रही है।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत ने राजकीय प्राथमिक पाठशाला के जीर्णोद्धार पर लगभग 32 लाख रुपये की राशि खर्च की है। समिति ने लगभग ग्यारह लाख रुपये की लागत से विद्यालय के भव्य एवं आकर्षक मुख्यद्वार का निर्माण करवाया है। विद्यालय मुख्यद्वार की भव्यता देखकर ऐसा लगता है मानो हम किसी बडे निजी संस्था के मुख्यद्वार को निहार रहे हों। संगमरमर पत्थर से बने आकर्षक मुख्यद्वार पर विद्या की देवी माँ सरस्वती, रानी झाँसी लक्ष्मीबाई, शहीद उधम सिंह की प्रतिमाएँ स्थापित की गईं। मुख्य द्वार के साथ ही गेट कीपर रूम बनाया गया है।

विद्यालय के अंदर प्रवेश करते ही शानदार ढंग से सजे हुए स्कूल के कमरे नजर आते हैं। कमरों और दीवारों पर जीवन मूल्यपरक संदेश, देशभक्त व महापुरुषों के चित्र, समाज सुधारकों के संदेश व उद्धरण, प्रेरक सूंक्तियाँ एवं विचार, शिक्षण अधिगम सामग्री प्रचुर मात्रा में उकेरी गई है। दीवारों व छत की मरम्मत करवाने के उपरांत विद्यालय में रंग-रोगन व सफेदी का कार्य

समिति ने विद्यालय में करवाया है। स्कूल का भवन आज दूर से ही चमकता नजर आता है। प्रत्येक कक्षा कक्ष व बरामदे में सुंदर चित्रकारी कराई गई है जिससे यह आकर्षण का केन्द्र बन गई है। विद्यालय की दीवारों पर शिक्षण अधिगम सामग्री बनवाई गई है। जिसका उपयोग पठन-पाठन में किया जाता है। दीवारों पर जो पेंटिंग की गई है उस पर लगभग तीन लाख रुपये की लागत आई है, जिसका वहन समिति द्वारा किया गया है। बच्चे खेल खेल में रुचिकर एवं गुणात्मक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

पहले जहाँ यह विद्यालय अपनी बदहाली पर आँसू बहा रहा था, ऊबड़-खाबड़ मैदान था। बारिश के दिनों में बच्चों के लिए प्रार्थना स्थल के लिए कोई जगह नहीं थी। समिति के जुझारू युवाओं ने विद्यालय प्रागंण में मिट्टी-भराव का कार्य करवाया, प्रार्थना स्थल, विभिन्न मार्गों पर ब्लॉक लगवाने के साथ-साथ प्रार्थना व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए मंच का निर्माण करवाया

व विद्यालय के लिए माइक सिस्टम की व्यवस्था की।

विद्यालय में दो सुंदर पार्कों का भी निर्माण करवाया गया है। जिसमें लगी हरी-भरी घास सबका मन मोह लेती है। क्यारियों में खिले रंग-बिरगें फूल उड़ती तितलियाँ फूलों की भीनी-भीनी सुगंध विद्यालय के वातावरण को मनमोहक बनाती है। विद्यालय में रेन-वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपनाकर बारिश के पानी का संरक्षण किया जा रहा है। विद्यार्थियों को भी इस बारे विस्तृत जानकारी दी जा रही ताकि वे जल संरक्षण के महत्त्व को समझें उसके प्रति जागरूक हो।

समिति द्वारा विद्यालय के शौचालयों का जीर्णोद्धार करवाया गया है, उनमें टाइल्स लगवाई गई हैं, वॉशबेसिन व पानी की उचित व्यवस्था की है। पूरे विद्यालय में बिजली फिटिंग का कार्य करवाया गया है। विद्यालय प्रांगण में छह फोक्स लाइट, एलईडी बल्ब व पंखों की व्यवस्था की है। रसोई घर व स्टोर का मरम्मत का कार्य करवाया गया है। विद्यालय में पीने के पानी की व्यवस्था हेतु एक सबमर्सीबल बोर व पानी की टंकियाँ लगवाई गई हैं। पुस्तकालय के लिए लोहे की अलमारी व दो लोहे के रैक की व्यवस्था की गई है। कूडे कचरे के उचित निपटान एवं व्यवस्था हेतु विद्यालय में कूड़ादान रखवाए गए हैं, जिससे विद्यालय साफ सुथरा एवं स्वच्छ दिखाई देता है। समिति द्वारा विद्यालय में 350 पौधे लगवाए हैं एवं साठ फूलदान गमलों की व्यवस्था की है। बंदरों की समस्या से निजात पाने के लिए पानी टंकियों पर बंदर जाल लगवाने का कार्य भी किया गया है।

विद्यालय मुख्य शिक्षिका किरण बाला का कहना है कि समुदाय सहयोग की यह एक अनूठी मिसाल है। समिति द्वारा विद्यालय में सभी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई है। विद्यालय के शिक्षक समिति के योगदान की सराहना करते हैं। समिति की अथक मेहनत व निरंतर प्रयास के कारण ही विद्यालय की तस्वीर बदली है। पहले जहाँ विद्यालय में अनेक मूलभूत सुविधाओं का अभाव था, लेकिन आज इस विद्यालय में सब प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। सुविधाओं के मामले में यह हाइटेक विद्यालय शहरी स्कूलों को मात दे रहा है। दूसरे ग्रामवासियों को भी इस कार्य से प्रेरणा लेनी चाहिए और सरकारी स्कूलों को हम सबका अपना स्कूल समझना चाहिए। विद्यालय ने भी सरकारी ग्रांट से वॉटर हार्वेस्टिंग सिस्टम व झूले लगवाए हैं। पूरा स्टाफ कर्तव्यनिष्ठा से अपने दायित्व का निर्वहन कर रहा है।

वरिष्ठ समाज सेवी कुँवर रविन्द्र सूर्यवंशी का कहना है कि शिक्षा व्यवस्था को सुधारने की जिम्मेवारी केवल सरकार की ही नहीं है बल्कि समुदाय को भी अपनी अहम् भूमिका निभानी चाहिए। यदि समुदाय सरकार के साथ मिलकर विद्यालयों मे मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध करवाते हैं तो सरकारी स्कूल बेहतर व गुणात्मक शिक्षा दे सकेंगे। पूरे देश में एक ही तरह की शिक्षा व्यवस्था लागू होनी चाहिए। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ग्राम सेवा समिति कलायत की यह सराहनीय पहल शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव हेतु एक क्रांतिकारी कदम साबित होगी।

समुदाय सहयोग से हुए विकास कार्यों का जीता जागता उदाहरण बन गया है कलायत का यह विद्यालय। आप अगर इस विद्यालय में एक वर्ष पहले आते तो आपका मन जरूर निराश होता कि स्कूल की स्थिति अच्छी नहीं थी । नगर के लोगों ने दिल खोलकर चंदा

दिया समिति के प्रयासों से बेकार सा दिखने वाला स्कूल आज शानदार विद्यालय बन चुका है। अन्य स्कूलों को भी इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। दिल से सलाम है सेवा समिति के हौसले व जज्बे को।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कमालपुर
जिला कैथल, हरियाणा

ऑनलाइन पीटीएम : रोमांचकारी अनुभव

कोरोना वायरस से फैल रहे संक्रमण के इस दौर में पूरा विश्व थम सा गया है। हम सबका किसी भी कार्य के लिए बाहर निकलना लगभग मुश्किल हो गया है। स्कूल कॉलेज बंद पड़े हैं। चारों ओर घोर निराशा का माहौल बना हुआ है। जहाँ पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा है, वहीं हरियाणा सरकार द्वारा ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रम चलाया गया है, जिसका उद्देश्य विभिन्न ऑनलाइन माध्यमों से पाठ्यक्रम पूरा करना है। इस विकट दौर में ऑनलाइन शिक्षा का महत्त्व बहुत बढ़ जाता है।

कोविड-19 ने हमारी जीवन शैली, हमारे सामाजिक व्यवहार को ही नहीं बदला अपितु हमारी शिक्षण प्रणाली पर भी गहरा प्रभाव डाला है। शिक्षण के तौर तरीकों में बदलाव आया है। इस ऑनलाइन शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाने के लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के आदेशानुसार राज्य के सभी विद्यालयों में ऑनलाइन ई-पीटीएम का आयोजन किया गया। इस निराशा एवं आशंका के दौर में अभिभावक अध्यापक बैठक भी नए रूप में अवतरित हुई और एक हल्की सी आशा की किरण, कुछ उम्मीदें, नव ऊर्जा संचरण लेकर आई। यह एक अनूठी एवं एक रोमांचकारी पहल थी।

जैसा कि विदित है कि लोकडॉउन की वजह से सभी विद्यालय लम्बे समय से बंद पड़े थे। हालांकि अभी भी बच्चों की उपस्थिति बहुत दूर की कौड़ी प्रतीत होती है फिर भी बच्चों की पढ़ाई में किसी प्रकार का कोई व्यवधान न आए, उनकी शिक्षा नियमित चलती रहे, इसलिए हरियाणा सरकार ने मुख्यमंत्री ऑनलाइन शिक्षण कार्यक्रम की शुरुआत करके विद्यार्थियों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था की है। इस कार्यक्रम की प्रगति का मूल्यांकन, अभिभावकों को शिक्षण कार्यक्रम बाबत जागरूक करने हेतु तथा घर पर बच्चों की पढ़ाई किस तरह चल रही है? बच्चे पढ़ाई को कितना समय दे रहे हैं? क्या उन्हें नियमित रूप से गृह कार्य मिल रहा है? आदि बिंदुओं को जानने के लिए शिक्षा विभाग की ओर से पहली बार मेगा ई-पीटीएम का आयोजन किया गया। शिक्षक फोन कॉल, वीडियो कॉल, विभिन्न एप आदि माध्यमों से अभिभावकों और विद्यार्थियों से जुड़े, उनसे बातचीत की गई। शिक्षकों ने अभिभावकों के सामने बच्चों की पढ़ाई, उनके द्वारा किये गृह कार्य, उनकी प्रगति रिपोर्ट को रखा तो वहीं अभिभावकों ने इस दौरान आ रही परेशानियों को सांझा किया। शिक्षकों द्वारा अभिभावकों की समस्याओं एवं शंकाओं का निवारण किया गया।

इस ऑनलाइन ई-पीटीएम में सरकार द्वारा चलाए गये कार्यक्रम 'घर से पढ़ाओ ' अभियान की समीक्षा की। पीटीएम में बताया गया कि सभी विद्यार्थियों को व्हट्सएप्प समूह से जोड़ा गया है। जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्ट फोन नहीं हैं, उनको साधारण फोन के माध्यम से करवाये गये शिक्षण कार्य के बारे में एसएमएस के माध्यम से सूचित किया जाता है। एजुसैट, स्वयंप्रभा आदि चैनलों, किशोर मंच द्वारा प्रसारित होने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों के बारे में भी चर्चा की गई। सभी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ फोन के माध्यम से सम्पर्क बनाए हुए हैं और नियमित रूप से उनका शिक्षण कार्य में मार्गदर्शन करते हैं। पढ़ाई में आने वाली समस्याओं का निदान किया जाता है। गृह कार्य भी ऑनलाइन जाँचा जाता है। शिक्षण कार्य उबाऊ और बोझिल न बने इसलिए ऑनलाइन आनंदायक गतिविधि और क्रियात्मक कार्य भी बच्चों को करवाया जाता है। इसके अतिरिक्त ऑनलाइन शिक्षण में आ रही समस्याओं के बारे में भी चर्चा की गई। पीटीएम के बाद सभी शिक्षक, अभिभावक एवं विद्यार्थी उत्साहित नजर आये। उनकी सभी शंकाओं का समाधान किया गया सभी शिक्षकों ने विश्वास जताया कि वे पूरी लगन और मेहनत से काम करेंगे।

इस प्रकार इस नए माहौल में नए ढंग से पीटीएम आयोजित करना आश्चर्यजनक एवं बहुत ही उत्साहवर्धक रहा। सबके लिए यह एक विशिष्ट रोमांचकारी अनुभव था। इस कठिन दौर में ऑनलाइन ई-पीटीएम बहुत ही कारगर साबित हुई। अभिभावक शिक्षा विभाग और समर्पित एवं कर्मठ शिक्षकों द्वारा किये गए प्रयासों से संतुष्ट नजर आए।

जैसा कि हम जानते हैं कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अभिवावकों, विद्यार्थियों और शिक्षकों को साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। अभिभावक अक्सर अपने बच्चों की शैक्षणिक प्रगति रिपोर्ट जानने हेतु विद्यालय में आते रहते हैं। पीटीएम में अध्यापक छात्रों के शैक्षिक उन्नयन के लिए योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाने में मार्गदर्शन एवं सहयोग करते हैं। अभिभावक बैठक में अनेक मुद्दों को पारस्परिक समझ द्वारा सुलझाने का प्रयास किया जाता है। इसके लिए जरूरी है कि अध्यापक और अभिभावक अधिक से अधिक एक दूसरे के सम्पर्क में आएँ क्योंकि अध्यापक और अभिभावक का सही तालमेल ही बालक के स्वर्णिम भविष्य का निर्माण कर सकता है।

विद्यालय के शैक्षिक एवं भौतिक विकास के लिए सामाजिक सहभागिता जुटाने के उद्देश्य से अध्यापक अभिभावक बैठकों की उपयोगिता महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से शैक्षिक सुधार, आर्थिक सुधार, विद्यार्थियों में प्रेरणा एवं अभिभावकों में आत्मीयता तथा अध्यापकों का आत्मविश्वास जागृत होता है। इन बैठकों का सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि विद्यार्थी विद्यालय के कठोर अनुशासन और पारिवारिक परिस्थितियों की विषमता से संघर्ष जनित तनाव से मुक्ति पा जाता है। पीटीएम से विद्यार्थी को दोनों पक्षों की सहानुभूति और साधनों का सामंजस्य प्राप्त हो जाता है। जिसके कारण न ही वह अभिभावकों से विद्रोही हो पाता है और न ही अध्यापकों के प्रति अनुशासनहीन। वह तनाव रहित वातावरण में अपना अध्ययन और शैक्षिक विकास प्राप्त कर लेता है। दोनों पक्षों का प्रोत्साहन, प्रेरणा और सहानुभूति उसके सर्वांगीण विकास को गति देती है और उसमें जूझने की क्षमता उत्पन्न होती है।

अतः इस कठिनाई के दौर में अध्यापक-अभिभावक बैठक की उपयोगिता और भी सार्थक सिद्ध होती है। हरियाणा सरकार का यह कदम अत्यंत ही सराहनीय है और यह पहल ऑनलाइन शिक्षण में नए आयाम स्थापित करेगी।

सुरेश राणा, हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
कमालपुर, जिला- कैथल, हरियाणा

स्वर्णिम युग की ओर राजकीय विद्यालय

हाल ही में आई एक न्यूज रिपोर्ट के अनुसार केवल हरियाणा में एक लाख से भी ज्यादा निजी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों में दाखिला लेने के लिए अपने-अपने स्कूलों में स्कूल छोड़ने के प्रमाण पत्र के लिए आवेदन किया है। एक लाख का आँकड़ा स्वयं में कम नहीं, लेकिन गौर करने की बात यह है कि यह तो अभी शुरुआत है। सरकार ने भी सोने पर सुहागा जैसा काम कर दिया है, आदेश हो चुके है कि हरियाणा के सरकारी स्कूलों में दाखिला लेने के लिए स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट की अनिवार्यता को भी खत्म कर दिया है या दाखिला लिया जा सकता है, स्कूल छोड़ने का प्रमाण-पत्र बाद में जारी हो सकता है। ऐसे में सरकारी स्कूलों में छात्र संख्या में एक बड़ा इजाफा देखने को मिलेगा, इस बात में कोई संदेह नहीं। कुछ विश्लेषकों का कहना है कि लॉकडाउन के कारण लगभग सभी आर्थिक गतिविधियों को विराम मिल गया था और अब लोगों के पास निजी स्कूलों को देने के लिए भारी भरकम फीस नहीं है। यह रुझान स्थाई नहीं है। आर्थिक तंगी के कारण लोगों का सरकारी स्कूलों की ओर रूख हुआ। बेशक इस तथ्य में सच्चाई ही निहित हो, लेकिन सरकारी स्कूलों को एक मौका तो मिला है और सरकारी शिक्षक इस को भुनाने में भी जी-जान से लगे हुए हैं।

अब स्थिति यह है कि जो लोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में दाखिला दिलाने की बात मात्र करने से चिढ़ते थे, आज वही लोग सरकारी स्कूलों के शिक्षकों के साथ मिलकर नामांकन अभियान चलाए हुए हैं। वहीं बहुत से शिक्षकों ने भी अपने बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूलों में करवा कर समाज के सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया है।

लॉकडाउन के चलते सरकारी स्कूलों के शिक्षकों ने बहुत सी सरकारी योजनाओं, कई प्रकार के सर्वेक्षण, मध्याह्न भोजन सामग्री वितरण, पुस्तक वितरण, नामांकन अभियान आदि के चलते अभिभावकों से लगातार सपर्क बनाए रखे। गुणवत्तापूर्ण ऑनलाइन पढ़ाई ने भी अभिभावकों को बहुत प्रभावित किया है। एजुसेट टेलीविजन, व्हाट्सएप, यूटयूब, गूगल फोन, क्विज प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, कविता लेखन प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता, पेंटिंग कम्पीटीशन, स्कूल ई-मैगजीन, ई-पीटीएम आदि कार्यक्रमों का ऑनलाइन आयोजन कर हरियाणा शिक्षा विभाग ने यह साबित कर दिया कि कोई वायरस शैक्षणिक गतिविधियों को नहीं रोक सकता। और समाज ने यह सब बहुत नजदीक से देखा कि शिक्षक वर्ग इस महामारी के समय किस तरह अपने विद्यार्थियों का ध्यान रख रहा है। सिर्फ शिक्षकगण द्वारा ही नहीं, जिले के अन्य शिक्षा अधिकारियों द्वारा भी उनसे संपर्क साध कर पूछा गया कि किसी तरह की दिक्कत तो नहीं? दूसरी तरफ निजी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी इन सब चीजों से पूरी तरह से वंचित रहे। महामारी के समय अभिभावकों को सरकारी स्कूलों के शिक्षकों की ये सब बातें बहुत पसंद आईं और उनका रुझान सरकारी स्कूलों की ओर हो गया। जिन विद्यार्थियों के पास पुस्तकें नहीं थीं, शिक्षकों ने उनके घर द्वार पर जाकर पुस्तकें पहुँचाई, ताकि उनकी पढ़ाई बाधित न हो। दूसरी तरफ निजी स्कूल किस लिए फोन करते हैं यह सभी को पता ही है। यह ही नहीं समाज आज इस बात के प्रति भी जागरूक हो गया है कि देश पर जब भी समस्या आती है तो उससे लड़ने के लिए शिक्षक वर्ग पहली पंक्ति में खड़ा मिलता है। कोविड-19 के कारण समाज और शिक्षकों बीच आई इन नजदीकियों के कारण ही अनुमान है कि सरकारी स्कूलों की छात्र संख्या में लाखों का इजाफा देखने को मिलेगा।

श्रीभगवान बव्वा, अंग्रेजी प्राध्यापक
रावमा विद्यालय लूखी, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

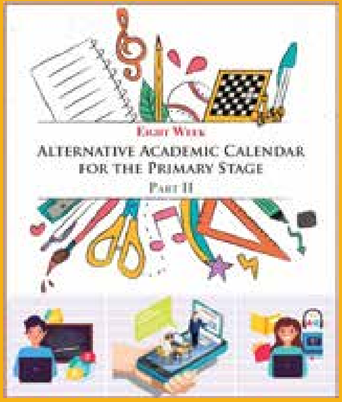

एनसीईआरटी ने जारी किया वैकल्पिक अकादमिक कैलेंडर का दूसरा भाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद ने प्राथमिक कक्षाओं के लिए शैक्षणिक कैलेंडर जारी किया है। यह कैलेंडर एनसीईआरटी की आधिकारिक वेबसाइट ncert.nic.in पर उपलब्ध है। एनसीईआरटी ने प्राथमिक छात्रों के लिए आठ सप्ताह के शेड्यूल के साथ एक वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर जारी किया है। चार सप्ताह का वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर मानव संसाधन और विकास मंत्री द्वारा पहले ही जारी कर दिया गया था और एनसीईआरटी वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया था। गौरतलब है कि इस कैलेंडर को हरियाणा प्रदेश में पहले ही लागू किया जा चुका है।

8 मई, 2020 को माननीय डॉ. महावीर सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव विद्यालय शिक्षा महोदय की अध्यक्षता में हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया था कि इस कैलेंडर को संपूर्णता से राज्य में अपनाया जाए। क्योंकि देखने में आया था कि अध्यापक स्वेच्छा से विद्यार्थियों को पठन-पाठन करवा रहे थे, जिसमें एकरूपता का अभाव था और एससीईआरटी द्वारा की गई पाठ्यक्रम की मासिक बाँट का ध्यान भी नहीं रखा जा रहा था। विभाग द्वारा 11 मई को जारी पत्र में उक्त वैकल्पिक कैलेंडर को अपनाए जाने संबंधी दिशा निर्देश जारी किए गये थे।

बता दें कि हाल ही में जारी हुआ कैलेंडर अगले आठ हफ्तों के लिए प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिए वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर का दूसरा भाग है। कैलेंडर के माध्यम से मानव संसाधन विकास मंत्री यह संदेश भी देते हैं कि इसका अनुसरण करने से छात्र अपने घरों में स्कूल की शिक्षा तब तक प्राप्त कर सकेंगे, जब तक स्कूल फिर से खुल नहीं जाते।

- डॉ. प्रदीप राठौर

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में विद्यार्थियों को करवायी जा सकने वाली कुछ विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी विज्ञान नियम सिद्धांतों संबंधित उपजी विभिन्न जटिलताओं का सरलीकरण कर सकेगा और उसको लाभ होगा। खेल खेल में विज्ञान शृंखला के अंतर्गत इस अंक में प्रस्तुत है कम लागत की कुछ अन्य विज्ञान गतिविधियाँ, जो कक्षा में विद्यार्थियों को करवा कर उनको पाठ रुचिकर तरीके से समझाया जा रहा है। प्रस्तुत हैं कुछ प्रभावी विज्ञान गतिविधियाँ। हम आशा रखते हैं कि आप यहाँ इन गतिविधियों को सीख कर जरूर लाभान्वित होते होंगे।

1. परजीवी अमरबेल को जानो-

कक्षा 6, 7 के विद्यार्थियों को जब अमरबेल दिखाई गयी तो उन्हें याद आ गया कि उन्होंने इसको पहले भी देखा हुआ है और उन्होंने आसपास बहुत सी जगह (लोकेशन) भी बताई जहाँ अमरबेल लगी है। उन्होंने कहा कि इसे तो (अमरबेल को) हमने बहुत बार देखा है। एक बालक ने तो यह भी दावा किया कि वह रोज स्कूल से आते जाते पार्क के कोने में एक पेड़ पर इसको देखता है। उसे पता नहीं था कि ये क्या है? इस घटना से यह साबित हुआ कि पुस्तक में चित्र देखकर व अध्यापक के जुबानी बताने से अमरबेल बारे अधिगम का उच्च बिंदु प्राप्त नहीं हुआ। यह स्थिति तब आई जब उन्हें अमरबेल दिखाई गई।

अमरबेल, एक शाकीय परजीवी (पेरासाइट) है जिसमें पत्तियाँ और क्लोरोफिल नहीं होता है। यह अपने पोषी (होस्ट) पौधे के ऊपर रह कर उसी से पोषण प्राप्त करके उसे ही धीरे-धीरे नष्ट कर देती है।

बच्चों को ये सब सुन कर बहुत अच्छा लगा और स्कूल की छुट्टी के समय वे अमरबेल पर चर्चा करते हुए घर जा रहे थे।

व्याख्याः

परजीवी पोषणः परजीवी पोषण, पोषण की वह विधि है जिसमें एक जीव अन्य जीव से अपना भोजन व आवास लेते हैं और उन्हीं के पोषण स्रोत का अवशोषण करते हैं।

इस प्रक्रिया में दो तरह के जीवों की भूमिका होती है।

पोषी (होस्ट) : जिस जीव/पौधे पर रहते हुए उससे खाद्य का अवशोषण अन्य जीव/पौधे करते हैं, उसे पोषी कहते हैं।

परजीवी (पैरासाइट) : परजीवी वह जीव/पौधा है जो पोषियों (होस्ट) के शरीर में या ऊपर रहकर उनसे ही भोजन और आवास प्राप्त करते हैं। जैसे मादा मच्छरों में पाया जाने वाला प्रोटोजोआ प्लाजमोडियम, मनुष्य के आंत्र में पाया जाने वाला परजीवी फीता कृमि, गोल कृमि, बालों में जू आदि व पौधों में अमरबेल।

2. गेंदे आयें पास-पास-

आवश्यक सामग्रीः एक लकड़ी या पाइप का टुकड़ा, दो छोटी गेंदें (भार में हल्की), धागा, सेलोटेप।

वायु की गति बढ़ी तो गेंदों के बीच दबाव घटा पर आधारित इस गतिविधि को बनाने के लिए एक पाइप या लकड़ी के टुकड़े पर एक 1 फुट के दो धागे 4 या 6 इंच दूरी पर सेलो टेप से चिपका लेते हैं। इन धागों के निचले सिरे पर सेलोटेप या फेविकोल की मदद से दो छोटी-छोटी (भार में हल्की) पिंगपांग गेंदे चिपका लेते हैं। अब हमारी गतिविधि तैयार है।

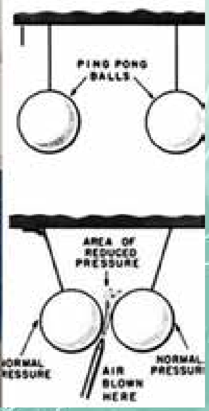

एक हाथ से लकड़ी या पाइप को पकड़ने पर दोनों गेंदें नीचे लटकती नजर आएँगी। दोनों गेंदों के बीच की जगह में से मुँह द्वारा फूँक मारने से हम देखते हैं दोनों गेंदे पास-पास आ जाती है। जब गेंदों के बीच से हवा तेजी से गुजरती है तो दोनों गेंदों के बीच कम दबाव का क्षेत्र बनता है और गेंदों के दूसरी तरफ सामान्य दबाव का क्षेत्र गेंदों को अंदर की ओर पुश करता है। ऐसा बरनौली

सिद्धांत के कारण होता है।

3. रेशम के कीट का कोकून देखा-

प्राकृतिक रेशों के बारे में पढ़ाते हुए जब रेशम के कीट का ज़िक्र आता है तो विद्यालय प्रांगण में खड़ा हुआ शहतूत का पेड़ उन्हें दिखाया जाता है कि ऐसे वाले शहतूत के पेड़ों पर रेशम के कीटों का पालन किया जाता है। बच्चे फिर उसी पेड़ पर सिल्क वार्म का कोकून खोजने का प्रयास करते हैं।

बच्चों के भोलेपन के मद्देनजर मैंने स्पेक्स, देहरादून के सचिव बीएम शर्मा से रेशम के पाँच कोकून भेंट में प्राप्त किये। अब मैं बच्चों को रेशम के कीट का एक साबुत कोकून व एक विच्छेदित कोकून दिखाता हूँ, जिसमें मृत अवस्था में जीव भी है। बच्चे रेशम के कोकून पर रेशम के रेशे को स्पर्श करके बहुत खुश होते हैं और कहते हैं कि अब हमने रेशम देख लिया।

4. आओ टिकटिकी बनायें-

ध्वनि पाठ पढ़ाते हुए बच्चों को बताया जाता है कि जब दो ठोस वस्तु आपस में टकराती हैं तो उनके टकराने से कंपन उत्पन्न होता है और परिणाम स्वरूप ध्वनि सुनाई देती है। इसको समझने के लिए बचपन का एक मशहूर खिलौना टिकटिकी बनाना सिखाया गया।

इसको बनाने के लिए एक कोल्ड-ड्रिंक की काँच वाली बोतल का ढक्कन (क्राउन), धागा, कमीज़ पर लगाने वाला बटन, रबर बैंड लेते हैं। जैसा कि यह गतिविधि दो वस्तुओं के टकराने (कम्पन) से ध्वनि उत्पन्न होना पर आधारित है तो हमें यहाँ बटन का ढक्कन से बार-बार टकराव कराना है।

बटन के एक छिद्र में रबर बैंड पिरो लें। बटन के दूसरे सुराख़ में एक 12 इंच (1 फीट) लम्बा धागा पिरो कर गाँठ लगा लें। रबर बैंड को क्राउन के पीछे गाँठ लगा कर बाँध दें। अब धागे पर 1-1 इंच के बाद 8 गाँठे लगा दें। चित्रानुसार दोनों ढक्कन व धागे को पकड़ लो, अँगूठे और उँगली से धागे को पकड़ कर पीछे खींचो और छोड़ो। बटन बार-बार क्राउन से टकराएगा और टिक-टिक की ध्वनि पैदा करेगा और तुम खुश होगे।

5. दिशाओं का पता लगाना-

आमतौर पर दिशाओं का पता लगाने के लिए बच्चे इतना जानते हैं कि जब सूरज निकलता है तो वह पूर्व दिशा से निकलता है और छिपता है तो पश्चिम दिशा में छिपता है। कुछ बच्चों को ध्रुवतारा पहचानना आता है तो वह रात्रि को बता सकते हैं कि ध्रुव तारा उत्तर दिशा की तरफ होता है। परंतु यदि बीच दिन के समय दिशा पूछी जाए तो विद्यार्थी सही रूप से नहीं बता सकते।

कुछ विद्यार्थियों ने बड़ों को यह कहते सुना है पहाड़ कन्नी, जिसका मतलब कि उत्तर की तरफ पहाड़ (हिमालय) होने की वजह से यह पता है कि वह दिशा उत्तर है। इन सब तरीकों के बावजूद वैज्ञानिक विधि से विद्यार्थियों को दिशाओं का ज्ञान कराना आवश्यक था।

इसके लिए उन्हें दिक्सूचक यंत्र दिखाया गया, जो कि विज्ञान किट में उपलब्ध है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को दिशाओं का ज्ञान सिखाया गया। बच्चों ने इसकी सहायता से विद्यालय में पूर्व,पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की मार्किंग भी की।

अध्यापक साथियो इसी के साथ अब अनुमति दीजिए, अगले अंक में आपसे फिर भेंट होगी, नई-नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर, हरियाणा

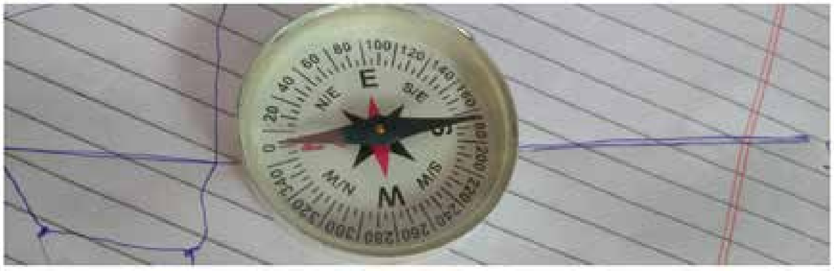

शिक्षा से वंचित बच्चों का भविष्य सँवारती छात्रा दिव्या

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

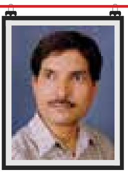

गहन अध्ययन करने, देखने, परखने से मालूम होता है कि सरकारी विद्यालयों के बच्चों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं। यह ठीक है कि परिस्थितिवश कुछ बच्चे कमजोर रह जाते हैं, किन्तु इन्हीं के बीच में बहुत से ऐसे बच्चे हैं जो अपनी-अपनी रुचि अनुसार प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए कमाल का काम करते हैं। कोई पढ़ाई में, खेल में, कला में इतना गज़ब का कार्य करता है कि हमें सुखद आश्चर्य होता है। स्कूल स्तर पर ही बच्चों ने बड़े-बड़े काम किये हैं। ग्लेशियरों की ऊँची चोटियाँ भी फतह की हैं, नृत्य गायन, पेंटिंग, लेखन, रंगमंच, एडवेंचर, विज्ञान आदि क्षेत्रों में अपना, विद्यालय का, प्रदेश का नाम रोशन किया है, वहीं बहुत से बच्चों में देशभक्ति, समाज सेवा-भाव भी भरा पड़ा है। स्काउट्स, एनसीसी, रेडक्रॉस के माध्यम से या निजी तौर पर ये बच्चे अपनी सेवाएँ देते रहते हैं। इन्हीं में कुछेक ऐसे विद्यार्थी भी होते हैं जो इससे भी बड़ा सोचते हैं। ऐसे विद्यार्थी देश के हीरे होते हैं।

ऐसी ही एक छात्रा का नाम है - दिव्या बरार। राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, फतेहाबाद की बारहवीं कक्षा की छात्रा दिव्या अपने सहयोगी साथियों के साथ शिक्षा से वंचित गरीब बच्चों को पढ़ाने व उन्हें सरकारी विद्यालयों में भेजने का सराहनीय कार्य कर रही है। झुग्गी-झोंपड़ियों में रहने वाले, शिक्षा से वंचित गरीब बच्चों, अपने परिवार के निर्वाह के लिए पार्कों में, बाजारों में गुब्बारे या अन्य सामान बेचने वाले बच्चों, विद्यालय छोड़ चुके बच्चों, पढ़ाई में रुचि नहीं लेने वाले बच्चों, बाल मजदूरी करने वाले बच्चों की पहचान कर, उन्हें तथा उनके माँ-बाप को समझाकर इन बच्चों का विद्यालयों में दाखिला करवाने का उत्तम कार्य यह अपनी टीम के साथ कर रही है। पहले तो जगह-जगह जाकर ऐसे बच्चों की पहचान कर, उन्हें एकत्रित कर खुद पढ़ाती है, फिर उन्हें विद्यालय में जाने के लिए प्रोत्साहित करती है। दिव्या व उनकी टीम शिक्षा से वंचित बच्चों के माँ-बाप से मिलकर उनका मन बदलती है, समझाती है, बच्चों का जीवन सँवारने की बात करती है। पढ़-लिखकर, सिर उठाकर सम्मान के साथ जीने की प्रेरणा देती है। बच्चों को भी प्रोत्साहित करती हैं तब जाकर माँ-बाप बच्चों को स्कूल भेजने पर राजी होते हैं। इनकी टीम अब तक करीब 700 बच्चों को स्कूल भेज चुकी हैं- ऐसा दिव्या का कहना है।

छात्रा दिव्या ने बताया कि वह घुमन्तू जाति के बच्चों को भी समय-समय पर पढ़ाती है। आवश्यकता पड़ने पर इनकी टीम बच्चों को अपने पास से पुस्तकें-कॉपियाँ, पैन-पैंसिल भी देती है। किसी कारण अन्य बच्चे भी विद्यालय नहीं जा पाते उन्हें समय निकालकर पढ़ाने का कार्य करती है। स्कूल की छुट्टी के बाद, रविवार को या अन्य छुट्टियों में ये गरीब मोहल्ले में, बस्तियों में, गाँव या शहरों में जाती है तथा बच्चों को एकत्र कर उनकी क्लास लेती है। स्वयं पढ़ते हुए समय निकालकर ऐसे बच्चों को पढ़ाना छोटी व साधारण बात नहीं है। ऐसा वह ही बच्चा कर सकता है जिसके सीने में अपने देश व समाज के लिए कुछ करने का जज्बा हो, देश को शिक्षित करने की चिंता हो तथा गरीब बच्चों के भविष्य की फिक्र हो। दिव्या ने अपने साथियों के साथ मिलकर अनेक बाल-विवाह भी रुकवाए। इनके विद्यालय के शिक्षक सर्वजीत मान ने बताया कि दिव्या में लीक से हटकर, कुछ बेहतर करने का जुनून है। वह जो करती है, उसे मन से करती है। इनके प्राचार्य व खण्ड शिक्षा अधिकारी, सुरेश शर्मा भी दिव्या के कार्य से प्रभावित हैं। जिला शिक्षा अधिकारी दयानन्द सिहाग ने कहा कि ऐसे बच्चे अन्य सभी विद्यार्थियों के लिए प्रेरणा देने का सराहनीय कार्य करते

हैं। हमें ऐसे बच्चों पर नाज है।

फतेहाबाद के गाँव दौलतपुर निवासी, सुभाष चन्द्र तथा सुनीता देवी की पुत्री दिव्या ने बताया कि उसका लक्ष्य है कोई बच्चा अनपढ़ न रहे। सभी बच्चों को पढ़-लिखकर जीने का सही तरीका आ जाए तथा वे गरीबी से लड़ना सीखें। दिव्या ने बताया कि बच्चों को प्रभावित करने, बात मनवाने के लिए उसने कई बार गुब्बारे बेचने वाले बच्चों के गुब्बारे भी बेचे ताकि वे हमारी बात मान जाएँ। दिव्या ने बताया कि 'सेव दा चिडर्न' संस्था तथा मेरी एक सहेली अंजु वर्मा से मैं प्रभावित हुई तथा ये कार्य करने का मन बनाया। मेरा व मेरी सहेली अंजु शर्मा का नौंवी कक्षा में आरोही स्कूल, बनगाँव में चुनाव हुआ तो बस में आते-जाते समय भीख माँगते बच्चों को देखते थे तो हमें दुःख होता था। वहीं से हमारे मन में ऐसे बच्चों के लिए कुछ करने का विचार आया तथा हम 'बुलन्द उड़ान' संस्था से जुड़ गए जो इस तरह का कार्य करती है। दिव्या के इस सराहनीय कार्य को देखते हुए बंगलौर की नैशनल लेवल की एक संस्था अशोका वेंचर ने बंगलौर बुलाकर दो बार सम्मानित किया तथा इस तरह के सफल कार्यों को कुशलता से करने की ट्रेनिंग दी। यह संस्था हर वर्ष देशभर में ऐसे 5-10 युवाओं को आमंत्रित करती है जो अपने-अपने राज्यों या जिलों में सकारात्मक परिवर्तन लाने का बेहतर प्रयास करते हैं। ऊर्जावान छात्रा दिव्या ने बताया कि लड़की होने के नाते मुझे अनेक तरह की दिक्कतों का भी सामना करना पड़ा, किन्तु मैं कभी भी रुकी नहीं। मेरी मम्मी व पापा मेरा साथ दे रहे हैं तो बुलंद इरादों से अपना काम कर रही हूँ।

दिव्या अपनी पढ़ाई कभी नहीं छोड़ती। यह पढ़ने में भी होशियार है। दिव्या किसी भी विषय पर भाषण भी प्रभावशाली तरीके से देती है तथा नृत्य में भी धूम मचाती है। छोटे-बड़े तथा राज्य स्तरीय कार्यक्रमों में यह छात्रा अपनी नृत्य कला का जादू बिखेर चुकी है। पेंटिंग में भी इसकी रुचि है तथा समय-समय पर पेंटिंग करती रहती है। इसके साथ-साथ दिव्या की घुमक्कड़ी में खास रुचि है। अपनी निजी यात्राओं के साथ-साथ हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर कैम्पों में भी गई है तथा अपनी कला का जादू भी दिखाया है। प्रतिभावान दिव्या को पूर्व महिला व बाल कल्याण मन्त्री कविता जैन भी सम्मानित कर चुकी हैं। अनेक बार अन्य कार्यक्रमों में भी इसे सम्मानित किया जा चुका है।

कोरोना वायरस के कारण हुए लॉकडाउन में भी दिव्या ने अपनी संस्था 'बुलन्द उड़ान' के माध्यम से जरूरतमन्द गरीबों तक आवश्यक सामग्री पहुँचाने में अपना भरपूर सहयोग दिया। समचमुच, ऐसी होनहार, ईमानदार, कर्मठ व समाज सेवी स्वभाव वाली ऊर्जावान छात्रा पर हमें गर्व करना चाहिये तथा प्रोत्साहित करना चाहिए।

कला-अध्यापक
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

विज्ञान वो नहीं

जो तूने
लाइब्रेरी की किताबों
में पढ़ा
और
जिन्हें पढ़ते-पढ़ते
तुझे नींद
आ गई
और
तुम नींद के
आगोश में स्वप्न
देखने लगे

विज्ञान वो सुंदर
तस्वीर है
जिसे
पास से देखने
के लिए
दूर की
ऐनक चाहिए।

विज्ञान की
तस्वीर के लिए
नहीं चाहियें
ये महँगी प्रयोगशालाएँ
ये किताबें
कहीं भी
किसी बाग़ में
या बाज़ार में
रसोई में
बस तार्किक
नज़र ही
काफ़ी है।

मै (विज्ञानशिक्षक) तो
आँखें देख कर
बता दूंगा कि
तुम में से
किसने किसने
विज्ञान की
वो तस्वीर
देखी है।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
राउवि समलेहरी
पंचकूला, हरियाणा।

क्या आप जानते हैं ?

आप कैसे हैं? लॉकडाउन के कारण विद्यालय बंद होने के कारण आप घरों में बंद हैं। जल्दी ही आपके विद्यालय खुलने वाले हैं। तब तक आपके शिक्षण कार्य में व्यवधान न पड़े, इसके लिए विभाग ने काफी प्रयास किए हैं, जिनका लाभ भी आपको मिल रहा होगा। फोन, व्हट्सएप्प समूहों के जरिये आप अपने अध्यापकों के भी निरंतर संपर्क में हैं और हम जानते हैं कि आपका शिक्षण कार्य काफी अच्छे ढंग से चल भी रहा है। कुछ दिक्कतें भी आ रही होंगी, लेकिन इस संकट की घड़ी में हमें उनको भी सहना है। समाचारों के माध्यम से आपको पता लग रहा है कि हमारे अपने देश में कोरोना संक्रमित व्यक्तियों की संख्या में हर रोज़ काफी वृद्धि हो रही है। हम चाहते हैं कि आप अपने आपको इस महामारी से बचाकर रखें। भले ही लॉकडाउन में काफी ढील मिल गई हो, लेकिन बिना वजह घर से न निकलें। कोरोना के लक्षण व इससे बचने की उपायों के बारे में पिछले अंक में मैंने आपको काफी विस्तार से बताया था। आशा करती हूँ कि वह जानकारी आपके लिए उपयोगी रही होगी। हमें आशा है कि संकट के ये बादल जल्दी ही जाएंगे। जल्दी ही जीवन फिर से पहले की तरह हो जाएगा। लेकिन हाँ, इतना मैं आपको जरूर बताना चाहूँगी कि कल जब भी आपके विद्यालय खुलें, तब आपको आपके अध्यापकों द्वारा इस महामारी से बचाव के कुछ अन्य दिशा-निर्देश भी दिये जाएँगे। अपनी सुरक्षा के लिए इनका आप सभी को पालन करना होगा। अच्छा, अभी के लिए केवल इतना ही। घर पर रहें, सुरक्षित रहें।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

1. किसे 'भविष्य की धातु' कहा जाता है?
उत्तर- टाइटेनियम

2. 'मंदिरों की पुण्य भूमि' भारत के किस राज्य को कहा जाता है?
उत्तर- तमिलनाडु

3. महाराष्ट्र के प्रथम मुख्यमंत्री कौन थे?
उत्तर- यशवंतराव चौहान

4. 'भारत का मैनचेस्टर' किसे कहा जाता है?
उत्तर- अहमदाबाद

5. 'बिहार का अभिशाप' किस नदी को कहा जाता है?
उत्तर- कोसी

6. पुस्तक 'वार एंड पीस' लेखक कौन हैं?
उत्तर- लियो टॉलस्टाय

7. सूर्य से सबसे नजदीक कौन सा ग्रह है?
उत्तर- बुध

8. महात्मा गाँधी जी की पत्नी का नाम क्या था?
उत्तर- कस्तूरबा गाँधी

पहेलियाँ

1. तत्वों का गुण कहो कौन-सा, हल बेहद साधारण।
कई रूपों में तत्व मिले हैं, सदा इसी के कारण।।

2. जब हाइड्रोजन और कार्बन, करते हैं संयोजन।
अधिक मात्रा में ये यौगिक, जाते तब खुद ही बन।।

3. कुछ ऐसे हैं हाइड्रोकार्बन, जिनमें एकल बन्ध रहें।
ऐसे कुछ हाइड्रोकार्बनों को, बोलो क्या हैं लोग कहें।।

4. दो या तीन बन्ध हैं रहते, हाइड्रोकार्बन ऐसे।
क्या कहलाते हैं ये बोलो, मुस्काते तुम जैसे।।

5. आण्विक सूत्र समान रहे पर, संरचना असमान।
ऐसे यौगिक क्या कहलाते, रखें नहीं अभिमान।।

6. जब-जब क्रिया ताप भंजन की, करते हैं उत्प्रेरक।
तब इसका क्या नाम बताओ, दूर हटेंगे कंटक।।

7. छोटे अणु मिल बड़े अणु का, कर लेते निर्माण।
ऐसी कौन शृंखला बोलो, करती जन-कल्याण।।

8. शक्कर के अणु छोटे अणु में, हो जाएँ तब्दील।
कौन प्रक्रिया रोल निभाती, करनी छोड़ो ढील।।

9. बिना हवा के करे कोयला, जब-जब भी हम गर्म।
कौन प्रक्रिया करे सहायता, बोलो तजकर शर्म।।

10. जब ऐल्केन गर्म हो जाते, बने हाइड्रोकार्बन।
वह प्रक्रिया क्या होती है, बूझो तो बन ठन।।

उत्तर :- - 1.अपररूपता 2.हाइड्रोकार्बन 3.संतृप्त हाइड्रोकार्बन 4. असंतृप्त हाइड्रोकार्बन 5. समावयव 6. उत्प्रेरक मंजन 7.बहुलकता 8.किण्वन 9.भंजक आसवन 10.ताप भंजन।

- डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

मच्छर फिर भी मरा नहीं

भोलू को मच्छर ने काटा
उसने गाल पे मारा चाँटा,
मच्छर फिर भी मरा नहीं था
लगता है चाँटा खरा नहीं था।

उड़कर मच्छर बैठा कान पर
भोलू ने फिर हाथ उठाया,
गदा-सा कान पे बजाया थप्पड़
मच्छर फुरफुर हाथ न आया।

अबकी बार वो नाक पे बैठा
भोलू ने फिर हाथ घुमाया,
नाक पे मारा जोर लगाकर
सूजा नाक फिर सबको दिखलाया।

कितना ढीठ है मच्छर शैतानी
भोलू से कभी वो डरा नहीं,
खुद की पिटाई उसने कर डाली
मच्छर तो फिर भी मरा नहीं।

लव कुमार 'लव'
हिन्दी अध्यापक
रामावि सम्भालवा
अम्बाला, हरियाणा

मूर्ख बातूनी कछुआ

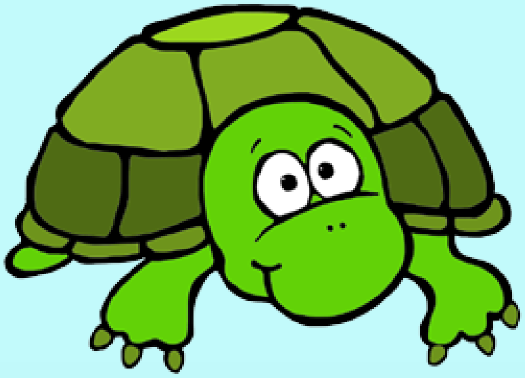

एक बार भीषण सूखा पड़ा। बरसात के मौसम में भी एक बूँद पानी नहीं बरसा। इससे तालाब का पानी सूखने लगा। प्राणी मरने लगे, मछलियाँ तो तड़प-तड़पकर मर गईं। एक समय ऐसा भी आया कि तालाब में पानी की बजाय सिर्फ कीचड़ रह गया। कछुआ बहुत संकट में पड़ गया। उसके लिए जीवन-मरण का प्रश्न खड़ा हो गया।

हंस अपने मित्र पर आए संकट को दूर करने का उपाय सोचने लगे। वे दूर-दूर तक उड़कर समस्या का हल ढूँढ़ते। एक दिन लौटकर हंसों ने कहा- मित्र, यहाँ से पचास कोस दूर एक झील है। उसमें काफ़ी पानी हैं तुम वहाँ मज़े से रहोगे। कछुआ रोनी आवाज़ में बोला,-पचास कोस? इतनी दूर जाने में मुझे महीनों लग जाएँगे। तब तक तो मैं मर जाउँगा।

कछुए की बात भी ठीक थी। हंसों ने अक्ल लगाई और एक तरीका सोच निकाला। वे एक लकड़ी उठाकर लाए और बोले- मित्र, हम दोनों अपनी चोंच में इस लकडी के सिरे पकड़कर एक साथ उड़ेंगे। तुम इस लकड़ी को बीच में से मुँह से थामे रहना। इस प्रकार हम उस झील तक तुम्हें पहुँचा देंगे। उसके बाद तुम्हें कोई चिन्ता नहीं रहेगी।

उन्होंने चेतावनी दी पर याद रखना, उड़ान के दौरान अपना मुँह न खोलना। वरना गिर पड़ोगे। कछुए ने हामी में सिर हिलाया। बस, लकड़ी पकड़कर हंस उड़ चले। उनके बीच में लकड़ी मुँह में दबाए कछुआ। वे एक कस्बे के ऊपर से उड़ रहे थे कि नीचे खड़े लोगों ने आकाश में अद्भुत नज़ारा देखा। सब एक-दूसरे को ऊपर आकाश का दृश्य दिखाने लगे। लोग दौड़-दौड़कर अपने छज्जों पर निकल आए। कुछ अपने मकानों की छतों की ओर दौड़े। बच्चे, बूढ़े, औरतें व जवान सब ऊपर देखने लगे। खूब शोर मचा। कछुए की नज़र नीचे उन लोगों पर पड़ी।

उसे आश्चर्य हुआ कि उन्हें इतने लोग देख रहे हैं। वह अपने मित्रों की चेतावनी भूल गया और चिल्लाया देखो, कितने लोग हमें देख रहे है! मुँह खोलते ही वह नीचे गिर पड़ा। नीचे उसकी हड्डी-पसली का भी पता नहीं लगा।

सीख - बेमौके मुँह खोलना बहुत महँगा पड़ता है।

-पंचतंत्र से

बाल कविताएँ

चूहों की बल्ले-बल्ले

लॉकडाउन में चूहों
की है बल्ले-बल्ले।
रोज हो रही दावत
खा रहे काजू, बादाम।।

खाकर अन्न, ड्रायफ्रूट
शान से हिला रहे पूँछ।
मूँछों पर देकर ताव
सपरिवार हो रहे खुश।।

न बिल्ली, न मालिक
का इनको है खौफ ।
बंद दुकान में बस
चल रहा इनका रौब।।

गोपाल कौशल
दुर्गा निवास, बस स्टैंड,
नागदा, जिला धार, मध्यप्रदेश

आ गयी जुलाई

मई-जून की खूब घुमाई
लो, फिर से आ गयी जुलाई।

खुलने को है अपनी शाला,
रंग जमेगा शिक्षा वाला,
कानों से स्वर पड़े सुनाई।
लो, फिर से...

नये दोस्तों से मिलना है,
नित फूलों जैसा खिलना है,
टीचर आई राम दुहाई।
लो, फिर से...

पढ़ने-लिखने से क्या डरना,
काम समय पर अपना करना,
आएगी फिर नहीं रुलाई।
लो, फिर से...

हम मम्मी को बेहद प्यारे,
पापा की आँखों के तारे,
विश्वासों की एक रुबाई।
लो, फिर से...

डाल हाथ में हाथ बढ़ेंगे,
जीवन का हम लक्ष्य गढ़ेंगे,
छोड़-छाड़ हर एक बुराई।
लो, फिर से...

डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक
शिक्षा विभाग (हरियाणा)

अपनी साँस का रखें ख्याल

आज हम उस विषय पर बात करेंगे जो है तो काफी महत्त्वपूर्ण, लेकिन उसे अधिक अहमियत नहीं दी जाती। यह विषय है हमारी साँस। जी हाँ, वहीं साँस जिसका सीधा संबंध हमारे जीवन से है। व्यक्ति चालीस दिन तक कुछ न खाये तो जिंदा रह सकता है, तीन दिनों तक पानी न पीये तो भी जीवित रह सकता है, लेकिन कुछ मिनट भी प्राणवायु न मिले तो मृत्यु निश्चित है। यह प्राणवायु ही जीवन का आधार है। क्या यह प्रश्न कभी हमारे मन में आता है कि हम ठीक से साँस ले रहे हैं या नहीं? क्या हम कभी इस बात का विचार करते हैं कि हमारे फेफड़े प्राण ऊर्जा से भरे हुए हैं या नहीं? यकीनन इसका जवाब होगा- नहीं।

हमारे शरीर को फेफड़े ऑक्सीजन प्रदान करते हैं जिस से 72,000 नाड़ियों में रक्त संचार होता है। अगर सही मात्रा में ऑक्सीजन भीतर प्रवेश न करे तो नुकसान पहुँच सकता है। कक्षा में अक्सर देखने को मिलता है कि कुछ विद्यार्थी अपनी रीढ़ की हड्डी को हमेशा झुकाकर बैठते हैं जिससे साँस की प्रक्रिया सही रूप से नहीं होती और अमाशय भी सही प्रकार से काम नहीं करता। हमें पेट की बहुत सी बीमारियाँ हो जाती हैं। हमारे फेफड़े केवल चालीस से पचास प्रतिशत ही साँस ले पाते हैं जिसके कारण हमारे ब्रेन में ब्लड सर्कुलेशन न होने के कारण मूड स्विंग होने लगते हैं। हमारा बिहेवियर सामान्य नहीं रहता। हम थके-थके रहते हैं, नींद गायब हो जाती है, हमारी याददाश्त कम होने लगती है। हमारे भीतर खुशी देने वाले हार्मोन्स कम होने लगते हैं।

गहरी साँस लेने से शरीर में ऑक्सीजन का स्तर बढ़ता है। प्राणवायु शरीर की कोशिकाओं तक सही मात्रा में पहुँचती है। पर्याप्त ऑक्सीजन मिलने से शरीर की सभी कार्यप्रणालियों की क्षमता बढ़ जाती है। आप अपने आप को अधिक एकाग्र महसूस करते हैं। ध्यान रहे कि छोटी-छोटी साँस छोड़ने का संबंध तनाव व चिंता से होता है। आपने देखा होगा कि किसी से लड़ते वक्त जब शरीर अपने आपको असुरक्षित महसूस करता है तो हमारी साँसे हल्की और छोटी हो जाती हैं। छोटी-छोटी साँसे लेने वाले व्यक्तियों को चिंता, भय और हाईपरवेंटिलेशन की समस्या होने लगती है। तो, ऐसी स्थिति से बचने का उपाय है गहरी साँस लेना।

गहरी साँस लेने से शरीर डिटॉक्स होता है। रोजाना हमारे शरीर को अनेक विषाक्त पदार्थों का सामना करना पड़ता है, जिसमें दूषित वायु, प्रदूषित वातावरण, व जहरीले रसायनों के छिड़काव वाली फल-सब्जियाँ शामिल हैं। साँस के जरिये ये विषाक्त तत्त्व बाहर निकलते हैं। यदि व्यक्ति गहरी साँस नहीं लेता तो शरीर की विषाक्त पदार्थों को बाहर करने की क्षमता कम हो जाती है। इस कारण शरीर के अन्य तंत्रों को शरीर साफ करने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है। जब आप गहरी साँस लेते और छोड़ते हैं तो कार्बन डाईऑक्साइड के साथ कई प्रकार के विषाक्त तत्त्व भी सरलता से शरीर से बाहर निकल जाते हैं।

जब हम गहरे श्वास लेते हैं तो अद्भुत बदलाव हमारे अंदर आने लगता है। ऑक्सीजन पूरी जाने से हमें थकावट नहीं होती। हम हर मिनट फील-गुड करते हैं। कुछ आवश्यक रसायन हमारा शरीर पैदा करने लगता है। इनमें से एक रसायन है-डोपामीन, जोकि हमें फील-गुड कराता है। हमारे मूड को अपलिफ्ट करता है। इसी प्रकार एक अन्य रसायन है- ऑक्सीटोसिन। इससे सद्भावना पैदा होती है। आसपास अन्य लोगों को देखकर खुशी होती है, सुकून मिलता है। तीसरा है- इंनडोरफिन जोकि पॉज़िटिविटी बढ़ाता है। अगर यह भाव मन में रहे तो व्यक्ति बड़ी से बड़ी क्षति को भी सह सकता है। चौथा है- सेरोटोनिन। अगर इसकी मात्रा कम हो तो हमें डिप्रेशन हो जाता है। हम हर बात में नकारात्मक रवैया रखते हैं और कोई अच्छा भी करता है तो भी हमें अच्छा महसूस नहीं होता।

गहरी साँस लेने से पाचन तंत्र में रक्त का संचार बढ़ता है। इस कारण आँते अपना कार्य अच्छी प्रकार से कर पाती हैं। पाचन प्रणाली सही होने से इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम और कब्ज जैसी समस्याएँ दूर होती हैं। वैसे भी आपने देखा होगा कि हमारे मूड़ का हमारे पाचन तंत्र और भूख पर गहरा प्रभाव पड़ता है। गहरी साँस जब तनाव व चिंता को दूर करेगी तो पाचन क्रिया स्वतः बेहतर बनेगी।

इन सब बातों को जानने के बाद अब अति आवश्यक है कि जब हम साँस लें तो पेट बाहर की तरफ़ आये और जब साँस छोड़ें तो पेट अंदर की तरफ़ जाए। जब कभी खाली समय हो ये अभ्यास अवश्य करें। इससे हमारा ध्यान जो अक्सर पास्ट में या फ़्यूचर में रहता है, उनसे ध्यान हट जाएगा और हम वर्तमान में जीने लगते हैं। वर्तमान में जीने की एक आसान विधि है कि हम मुस्कुराते रहें। वर्तमान में रहने से बहुत से फ़ायदे हैं, जैसे-हमारा मन और बुद्धि एकाग्रचित होती है। हमारे खेल-कूद से प्राणवायु सही मात्रा में हमारे शरीर को मिलती है। अगर हम प्राणायाम और ध्यान भी करें तो सोने पर सुहागा हो जाएगा। निश्चित तौर पर इससे स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक सुधार देखने को मिलता है। अतः अन्य चीजों के साथ-साथ अपनी साँस का भी रखें ख्याल।

इंद्रा बेनीवाल
उपनिदेशक
माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

लॉकडाउन में मुस्कराई प्रकृति

प्रकृति और मनुष्य का पुरातन काल से ही अटूट संबंध रहा है। मनुष्य जन्मजात स्वार्थी प्राणी रहा है, दूसरी ओर प्रकृति सर्वत्र सुखाय वाली अनुभूति लिए मानव जगत के लिए प्रेरणास्रोत रही है। जिसके अनेक उदाहरण सर्वत्र देखने को मिल जाएँगे, जैसे वृक्ष की छाया, फल, नदी का शीतल जल, सूर्य का प्रकाश, चाँद की शीतल किरणें तथा ठंडी हवाएँ जैसे अनेक उदाहरण समस्त प्राणी जगत के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं। लेकिन इतना होने के बाद भी मानव ने अपने स्वार्थवश धीरे-धीरे इन चीज़ों को खत्म कर दिया और प्रकृति के आश्रय में रहने वाले अनेक पशु-पक्षी धीरे-धीरे लुप्त होते गए। दिन-प्रतिदिन बढ़ते हुए अत्याचार को सहन न कर प्रकृति भी अपना विकराल रूप समस्त प्राणी जगत के सामने दिखाने लगी। कोई भी प्राकृतिक आपदा बनकर वर्षों की कमाई व तपस्या को नष्ट कर देती है। भूकंप, बाढ़, तूफान, कोई भी महामारी यह सब प्रगति का उग्र रूप हैं। लेकिन जब से जैविक वायरस कोरोना ने उत्पात मचाया है तब से प्रकृति के सुंदर मनोरम व मनमोहक दृश्य पुनः आँखों के सामने अतीत की स्मृतियों को उजागर करते हैं।

प्रकृति की लीला की बड़ी विचित्र है जो मानव अभी तक उसके रहस्य को समझ नहीं पाया। उसका न आदि है न अंत, प्रकृति का प्रत्येक फल स्वयं में अनूठी छवि सँजोए हुए है। जब से कोरोना का पदार्पण हुआ है, मानव की हाहाकार व चीत्कार कानों में सुनाई दे रही है। कहीं अकाल जैसी स्थिति तो कहीं मज़दूरों की भागमभाग, न दिन की परवाह न रात की, लगातार सड़कों पर सामान उठाए आगे जा रहे हैं। प्रशासन भी ऐसी आफत से बेचैन जो कभी सपने में भी न देखी न सुनी। मज़दूरों का पेट भी खाली, जेब भी खाली, घर से बेघर, जाएँ तो कहाँ जाएँ, बाहर जाएँ तो कोरोना यमराज रूपी फंदा लिए पग-पग पर स्वागत के लिए तैयार। वाह! क्या विचित्र स्थिति है। अनेक विकासशील देशों को आज एक सूक्ष्म वायरस के सामने घुटने टेकने को मज़बूर होना पड़ा। आज जो गुफाओं के अंदर कैद थे वे सड़कों पर नज़र आ रहे हैं। मानव ने जेल की तरह घर में बंद लॉकडाऊन की अवधि का एक-एक दिन गिनकर काटा है।

जो पक्षी अरसे से ऐसे लुप्त हो गए थे जैसे जन्मे ही न हो, अब धीरे-धीरे बाहर का शोरगुल खत्म होते ही मुँह बाहर निकालकर स्वतंत्र विचरण करते नज़र आ रहे हैं। अन्य जीव पहाड़ों/पर्वतों को चीरते हुए गाँव की सीमा तक आ गए हैं। जैसे प्रकृति के साथ-साथ वे भी मानव से बदला लेने को उतारू हैं। जंगल में मोरों का समूह, शेर, हिरण, हाथी न जाने कितने पशु-पक्षी स्वच्छ वातावरण में सुखानुभूति करते हुए मानव की करूण ध्वनि सुनने को लालायित हैं। नदी/तालाबों का पानी स्वच्छ हो गया है। नीले आकाश की नीलिमा चाँद, तारों की चमक के साथ शोभायमान प्रतीत होती है। चिड़ियों का चहकना, मुर्गे की कुकड़ूँ-कूँ तथा कोयल की मधुर कू-कू कानों में मिश्री-सी घोलती महसूस हो रही है। इतना रम्य, मनमोहक, सुंदर दृश्य प्रकृति का जो बरबस ही हर किसी को आकर्षित करता है। प्रदूषण से सड़क किनारे खड़े पेड़ों के पत्तों का रंग मिट्टी से अटा रहता था, आज वे हरे-भरे दिखाई दे रहे हैं। हरियाली से वातावरण और भी मनमोहक हो गया है। अब समझ आया कि मानव ने अपने स्वार्थवश प्रकृति को धूलित व दूषित कर रखा था, नहीं तो प्रकृति का सौंदर्य कम नहीं है।

राजेश यादव
विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

2020

जून-जुलाई माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 जून- विश्व दुग्ध दिवस
3 जून- विश्व साइकिल दिवस
5 जून- संत गुरु कबीर जयंती
7 जून- विश्व खाद्य सुरक्षा दिवस
8 जून- विश्व महासागर दिवस
12 जून- विश्व बाल श्रम विरोधी दिवस
14 जून- विश्व रक्तदाता दिवस
20 जून- विश्व शरणार्थी दिवस
21 जून- पितृ दिवस
1 जुलाई- राष्ट्रीय चिकित्सक दिवस
11 जुलाई- विश्व जनसंख्या दिवस
23 जुलाई- हरियाली तीज
26 जुलाई- कारगिल विजय दिवस
28 जुलाई- विश्व हेपेटाइटिस दिवस
29 जुलाई- विश्व बाघ दिवस
31 जुलाई- शहीद ऊधम सिंह शहीदी दिवस

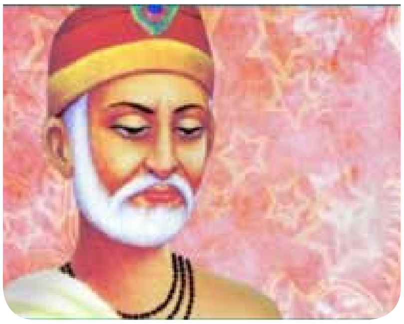

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

CoviDreams – A Vision of Imagination and Adventure

Dr. Deviyani Singh

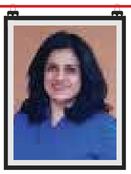

They quarantined my body but they couldn't confine my mind's eye. Every night I soar into outer-space with the stars. Run rings around Jupiter and play catch with comrade Mars. Stern Saturn chided me while Venus winked. Neptune and Pluto watched from afar. I smiled back; they were gone in a blink. Mercury was temperamental and Uranus unpredictable.

I played hopscotch with the constellations; took a big leap on the Great Bear. Tried on Orion's belt, it didn't fit. The Comets exploded with mirth at my expanding lock-down girth. Then I rode around the galactic carousel of the Milky Way on mighty Pegasus.

An astronaut floated by; his white spacesuit reminded me of the PPEs in hospitals. Frightened, I plummeted through the Firmament into Earth's Oceans. Letting the Great Barrier Reef soothe my grief. The kaleidoscopic corals lit up my monochromatic life. Psychedelic fish darted out of their marine homes; no aquarantine here.

I watched scores of Oliver Ridley turtles migrating on the ocean currents like the mélange of migrant labourers trudging miles without rest. Unlike the turtles they didn't have the empty beaches of Puri to nest. There appeared a diver; his breath rasping in and out of his aqua lungs like the ventilators of dying Covid patients. I felt I was drowning, thrashed to the surface gasping for air. Only to remember even air was unsafe.

I headed for the Poles and swam beneath the ice caps; skated with penguins and polar bears; they had not yet met Mr. Covid and had no fears. I held on to a shark's fin and surfed on the waves. Whales followed me with their tiny eyes; their sonar songs soothed my senses. Surfacing and spouting air in a big whoosh like the patients who were able to breathe at last. Their tail fins landed with loud claps flat on the water as if applauding the doctors and patients on recovery.

I flew to the mighty Himalayas and perched myself atop Everest, enjoying the sights. I saw a long line of climbers waiting to summit. Their laboured breathing from oxygen cylinders jolted me back to the scenes of overcrowded covid tents in Italy. I grabbed a pair of skis, and zigzagged at breakneck speed

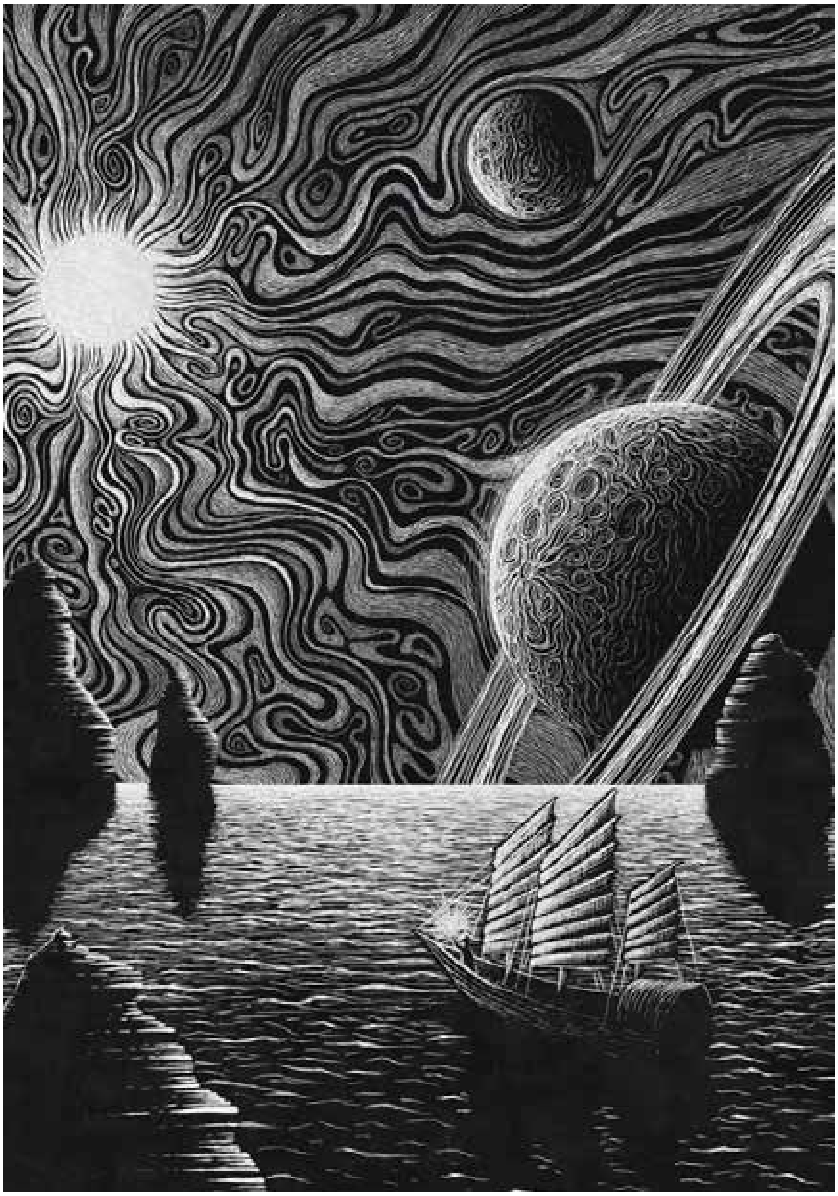

till I reached the powder slopes; leaving a mist of snow in my wake. Then I plunged into a mountain stream. The crystal clear water gurgled over boulders. I lay back arms folded, feeling like a river fairy cascading with the current. I squealed in childish delight as the roller coaster rapids tossed me around.

The river tumbled into the salty sea. The warm sun vaporised the droplets and I drifted in pristine white clouds. They turned dark and heavy, drenching the Earth in torrential rain, which alas could not cleanse the virus.

I woke to a loud clap of thunder. Purple lightning flashed across the peach palette of dawn. The dream had ended but the nightmare of dark dreary days had begun again.

Pics by Justin Estcourt
(@jetsyart, instagram)

Editor Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

The Earth is not ours; Let us together make it better

On July 21, 2015, Kofi Annan, former U.N. President had tweeted "The Earth is not ours, it is a treasure we hold in trust for our children. We must be worthy of that trust". This tweet has become more referential after the world-wide outburst of the Pandemic, COVID-19. It is the time of action now or never because if we delay more things will get worse. The havoc that mankind is playing with nature won't spare us time for setting things right if delayed in action. It's the time to change our definition of progress and prosperity. Exploiting nature for monetary gains will definitely have dangerous consequences on the lives on this Planet.

Has anyone ever thought about the Pandemic COVID-19 before its spread? No and not even in fiction or poetry could one think that our mistakes will lead us to a state where mankind will have to be locked down. Nature supports all the species on the planet, Earth but destroys the species which does not respect the laws of nature and keep spoiling it without caring for the future of our coming generations. All the species on Earth are enjoying their lives freely except human beings. We all deserve it for greedily exploiting the nature. Now when we are facing the threat of Pandemic COVID-19 worldwide, it is the time for us to redefine our priorities.

Environment protection laws should be observed strictly on the planet. The people must be made aware more concretely about the importance of nature. Unhealthy practices that make our environment polluted must be stopped by making people of the world aware or by imposing strict laws. Use of fertilizers, pesticides and even research on unhealthy projects which could be dangerous for us must be discouraged and stopped at world level. The organisations like U.N. and W.H.O. need to be more powerful. We can imagine life without gadgets of comfort but can't stay on this Earth for long with this COVID 19 type of Pandemic. What would happen if some day our drinking water or food grains get contaminated? Students in universities and even in schools should be taught in a way that they become real nature lovers. It is the time for deep introspection and to correlate ourselves with nature. Let us join hands for making a better world for ourselves and our future generations.

- Shri Bhagwan Bawwa,
Lecturer in English,
G.S.S.S, Lukhi (Rewari)

CHANGING ROLE OF MEDIA

All the news channels are covering the sufferings of migrant labour going in groups to their home states from various states of India. The hardships they are facing while on the road are drinking water, food to eat, walking barefoot in the scorching heat, restless sleep and all most essentials for survival. The labourers on the road are determined to continue their journey on barefoot, it does not matter how much they might have to cover, 1000 kilometers, or more than this distance. How many days they have to walk is not known to them. What other type of problems they will be facing, they are not aware. Some have died in accidents while walking on the road side. There are some pregnant women, they are facing difficulty in walking, suffering a lot with small children, even less than one year old. Have the government, centre or states done enough for them? Is it myth more than reality, it is not known to us. They all are Indians, and what sins they have committed, why have they been placed to bear such hardships? In such a unprecedented situation, I strongly feel that the media persons can take up an additional responsibility to do something for them. Now they can develop new media mindset in minimizing the sufferings of poor labourers. An attitude of social work can play significant role. The media has got faster access to the people they can mobilize resources from the community where ever they are. The reporters are in the field everywhere, covering and collecting the material for their channels. They can mobilize the resources from the nearby villages, should do something more of social work type to ease out the suffering. Many villages are close to the roads on which the workers are walking. The media reporters are having their conveyance along with other group members. They can go to nearby villagers and motivate them for arranging some food and water for the labour on the road. The people in the villages are good everywhere, they will come forward to help these migrants by providing simple rice and dal, etc. I know these labourers could not be provided any transport. Some people are saying so many things, but nobody is coming forward. How can people survive three months or so without any salary or labour wages. These labourers were also paying room rent for their stay in the cities of their work. Giving Rs.5000/- or so to a family per month, is difficult for anybody to manage with this amount even for a week. So, my humble request is to media agencies to do some social work by simply motivating the people to come forward to help the labour on the road. The media agencies could praise the people who do the human service for providing food, water, etc. Of course, they have been doing this very scarely. Some medical facilities should be provided at some places on road sides, say after every five kilometer or so. There are many good social organizations, which are ready to work; the media reporters should try to locate them in the village by meeting the Sarpanch or social leaders. The government officials will not be able to do everything by themselves, citizens and media must help with teamwork.

Dr. B. S. Nagi
8/59 Ramesh Nagar, New Delhi–110015

Power of Appreciation

"The deepest principle in human beings is the craving for appreciation"…

William Jones

The quote compelled me to think that I have been in teaching profession for 25 years, but:--

How many students of mine would have got their craving quenched by me?

How many people do I appreciate every day?

Do I appreciate and compliment those students and my colleagues who deserve it?

How I been liberal in extending compliments for making my students and my peers feel better and encouraged?

Do I appreciate and compliment more frequently those students, colleagues, friends of mine for whom I have a liking or I have no prejudice against and foremost? And the last but not the least;

Do I crave for appreciation?

Yes, 'I do' says my inner self. I desperately yearn for appreciation by all the time, like the children but feign composure most of time as if I don't care!!!

Yes, I have felt the impact of appreciation by some of those in my life. I do keep those 'pats on my back' close to my heart which have transformed me into 'somebody' from 'nobody'. I do vividly remember some of my mentors praising before everyone in the classroom or public place. I felt so elated!! I did know that I might have not deserved those words but still craving for them. Truly, some of those might have been lies told by my mentors. But those lies transformed my life completely. But today, I feel miserable, as I feel that I teach only English. I never thought of complimenting or appreciating my students, fellows and friends for no reason. I have been so stingy in giving something which I could have afforded easily.

Swami Vivekananda said, "Education is the manifestation of perfection already in man. Like fire in a place of flint, knowledge exists in mind. Suggestion is friction, which brings it out".

Needless to assert, a teacher's role should be to provide a mere spark to ignite the mind to inspire, to make students wonder, to raise the self esteem and self confidence of the students.

Making students realise their hidden potential should be the key idea of education. The whole world is replete with successful dropouts and stories of their lives. Many successful / renowned personalities couldn't get their elementary education. They realised their potential had great success stories.

A teacher is not merely a teacher. He is a mentor, guide and friend. He should not only teach his subject but also go beyond the classroom to make them creative thinkers and self-driven individuals. "A teacher himself an institution of excellence"….

Success of a teacher lies in the success of his students. As Guru Dronacharya is known through Arjuna and Acharya Chankya is known through Chandragupta Maurya. They used the tool of appreciation to make them excellent.

I envisage that we can inculcate the values of tolerance, fair play, compassion, integrity and fortitude among the students by appreciating their tiny achievements.

Every teacher must learn the art of fabricating 'appreciation' to get the best out of his students. There lies an inherent craving of appreciation in all of us. Let's appreciate each other to kindle the lateral fire in each one of us to transform lives.

"Appreciate the doer if you want to get anything done"…

Surender Kumar Sharma
Lecturer in English
GSSS Kairu
(Bhiwani)

I MISS MY SCHOOL

I Miss my school,
I Miss my school,
And all my students' smiles.

Their way of saying,"Good Morning,"
And the way of " Ma'am Bye-Bye."

I missed morning assembly with them,
Where they never make a straight line.
We start with rhymes and prayer,
Where they never close their eyes.

Now, I'am missing my class sessions,
Where my student's talk inaudible.
And where I start scolding and enquire
They never admit amidst whispering expressions.

I wish I could hear the class noises.
And wish to see their naughtiness in school recess time

I'am missing their word of applause for me.
"Ma'am you are looking so good today."
No doubt! It is their favourite line.

I'am missing the hooting of all my student's,
When I say, "No class today."
And they ask me to play with them,
And we go to the ground.

Oh! That's was such a lovely time,
With all my student's all around.
Covid-19 made us all in Isolation phase
I'am missing my school every time.

Jasleen Kaur
TGT Science
G.S.S. School, Sector-19
Panchkula

The School Comes Homes

Forgetting our past routine,
Experiencing new and enjoying our teens,
Coming to a world which we'd never seen,
Where our digital teachers are making us keen.

'No movies in theatres ', 'No cusine in hotels', 'No kids in the park', 'Nothing flying in the sky' but schools are going on. The favorite phase of a student's school day is the time when the bell rings and he or she rushes out of the busy place to his or her home. This used to be very common couple of months ago but after the widespread of the hazardous pandemic COVID – 19 worldwide, things changed. Firstly our home became school and then school came home like Hulk in the Avengers.

Things have changed at the 360 degrees as uniforms converted to casual wears, heavy bags changed to portable tabs and amazing virtual teachers replaced our live teachers.

In this whole scenario the things that students miss are tapping and clapping of classroom, assurance in their teacher's eyes, infinite thoughts for a single question and what not, on the other hand, the list of things and activities they don't miss need to be googled. In this unpredictable period, students also lose the three 'C's that are very important for education that include – Conversation, Creativity and Critical thinking. Students miss the most exciting aspect of their day that is their games or activity period where they learn and practice motor skills and understand the actual meaning of team work that pay emphasis on enhancing their leadership qualities along with their emotional and sensory development.

The aim of education is not to promote just learning but to spread experiential and naturalistic learning that prepares a morally upright, environmentally sensitive and socially responsible citizen. Compassion for the community and respect for mankind are the major qualities of an educated person and not merely a literate person.

Apart from that, today if students are capable of managing their work at home, then the credit goes to e-learning by which teachers have become just a click away from their students. Also, this concept of e – learning will reset India's education system as in face - to - face teaching at school, children just memorize, replicate and then forget when the exam is over. Teaching at home will make children forget the exam fever.

A very advantageous fact of learning at home is that one has a lot of time to think about a particular question or a topic and respond to the teacher in a favorable time which students might not find in campus learning because in face – to – face learning at times, when a question is put by the educator and a student wants some time to think, often he or she gets caught in a situation in which the tutor wants him or her to answer the question and the student is left with nothing but to stand still.

Spread of education in this lockdown has increased the responsibilities of each stakeholder. The increase in responsibilities of teachers has reached miles as they are trying their best to prepare classes for their students that are appropriate for them by verbal and non – verbal means that include all gestures and hidden ideas keeping in mind that their lesson plans prove to be productive and are easily accessible to each child.

For making their lesson plans reliable to each child, the problems faced

by teachers go unseen. Every teacher does not possess the facilities provided by their school available at home but as we all know that there is always a flip side of a coin. These teachers don't let these issues like non – availability of resources or improper environment become a barrier in their efforts of spreading education. Many teachers don't possess any medium like black or white boards present at their homes for teaching. To get over this problem many are using objects like white tiles, pasting chart papers and some of them are making their home walls a writing medium to teach their children.

The major problem that threatens both the teachers and students in this phase of e – learning is internet connectivity. A UNESCO report states that almost 70.6 crore students around the world are restrained from e – learning due to no internet or WI – FI connectivity at home.

Teachers are replying to their students till late hours. Their chat boxes and mails are full of queries. Not only in academics but teachers are also making their children smart at their physical growth by preparing a number of yoga and dance sessions that they can easily practice at their respective places which reduces their boredom, as in lockdown, there are limited entertainment resources. Many are appreciating their great efforts while some of them are making fun of them by troubling them calling at late hours.

Undoubtedly 'School at Home' is a sustainable approach. It conserves a lot of resources. It has improved the technical knowledge of both teachers and students. There is negligible peer pressure on students that helps them do the things they feel right without any interference. Also, children develop skills that they may not have been introduced to in our traditional teaching system.

One of the major pros of learning at home for students is that children can login anytime they want. Though it disturbs their maintained routine it comes out be productive as they won't have to miss any lecture in between as they can pause and resume any time. Also, they can always rewind and see the part of the video or lecture which seems to be difficult to them.

On the other side of the coin, students have become indisciplined by their disturbed time table; moreover, paying much time to screen makes them physically recessive. There are also many predictable but non – fruitful consequences of this remote learning like introduction of an extremely wide gap between the possessors and non – possessors of online education, between the rich and the poor and as a result between low – income countries and high – income countries.

So, there are both pros and cons on each side of the coin. School at home proves to be productive and difficult at the same time. Virtual reality does not show the true mirror of drawbacks in a student's life though it is much beneficial. It's focus of students and motivation of teachers that actually transforms an ordinary citizen into a successful person who not only surpasses but also excels the barricades that create a hindrance in their path of achieving excellence.

Pihu Agrawal
St.Kabir's School Class 9
agrawalsmita726@yahoo.in

Confinement for Betterment 2020

It was the 30th of December when my ears picked up this argument,
Year 2019 and 2020 expressing their pent-up sentiments.
2019 was sad upon its oncoming demise,
2020 said everyone was in for a huge surprise!
The world was all excited about the start of a new decade,
Busy making sure that their ambitious plans would be obeyed,
While in a lab in Wuhan there was some danger brewing,
Something that would be the year's undoing.
Not long after people far and near
Had toasted to 2020 and with great cheer;
The Corona virus entered the world.
"Confined to our homes!", people cried "This is absurd!"
Governments across the globe declared a quarantine,
Suddenly all everyone had was time and more time!
After reluctantly accepting that it was near illegal to sneeze,
And fervently washing our hands out of fear of the disease.
Everyone decided to make most of what the situation would bring,
While Mother Nature went in for a bit of well-deserved pampering.
Soon the Earth healed and the skies cleared,
What felt like a feeling of peace neared.
"With those nasty humans stowed away," Mother Nature mused,
"Destruction could be kept well at bay!"
And those nasty humans cooped up at home,
Did great amounts of introspection and soon it was known.
That they had learnt how to live better,
Find joy at the slightest, maybe compliment the weather.
And when this pandemic would end,
There would be a thousand prayers to send.
To those who had lost a loved one to the vicious virus,
But all together so that the sadness would not overwhelm us.
A brand-new world would emerge slowly.
With people who had learnt the art of living completely.
All I wish is that next time (I pray for none) it shouldn't take a virus to see,
How our world is actually supposed to be.

Anushka Barua
Study centre 11
The Assam Valley School
Balipara
Tezpur Assam

Compendium of Academic Courses After +2

Central Board of Secondary Education India

ARTIFICIAL INTELLIGENCE AND MACHINE LEARNING

Introduction

Artificial Intelligence belongs to a field of science and engineering in which studies and research aim to develop intelligent computer machines that can perform tasks with human intelligence. It includes speech recognition, visual perception,

logic and decision, multi-language translation and more. Digital bits of data is interpreted and turned into significant experiences and outcomes with aid / assistance of robotics, automation and sophisticated computer software and programs.

Courses

1. Machine Learning (Intermediate Level)- Prerequisites Probability and Statistics (or equivalent course). Some background in linear algebra and optimization. (IISc Bangalore)
2. Advanced Certification in Artificial Intelligence & Machine Learning (From IIIT-H)
3. B. Tech Computer Science & Engineering with specialization in AI & Machine Learning
4. B. Tech CS or IT/ECE/ME/IN or M.Sc. degree in CS/IT graphic design, information technology, health informatics, or equivalent.

Eligibility

- 10+2 Science
- After, B Tech, valid GATE scores is required for M.
- Tech. CS/AI/IT, IC Technology and Bioinformatics

Institutes/ Universities

1. IISc Bangalore
2. IIT Bombay
3. IIT Kharagpur
4. IIIT Hyderabad, Allahabad
5. IIT Madras
6. University of Hyderabad

ASTRONOMY AND ASTROPHYSICS

Introduction

Astronomy is a combination of physics, chemistry and mathematical principles/rules. Astrophysics can be called its offshoot. It deals with detailed study of the physical, chemical and dynamic properties of celestial objects. It also deals with the phenomena over and above Earth's atmosphere. There is associated study of calculations of orbits, gravitational forces, satellites, meteors, galaxies, comets, stars, planetary objects, planets, satellites etc. In Astrophysics, we explore and ensure properties/nature of the astronomical objects with the help of laws of physics and chemistry. There is also the field of Cosmology which studies the origin and evolution of the universe.

Courses

1. M.Sc. /M. Phil PhD (Physics)
2. M.Sc. Astronomy,
3. M.Sc. – Astrophysics
4. Integrated M. Tech- Ph. D (Tech.) programme in Astronomical Instrumentation (Eligibility-B. Tech / BE degree in Electrical/ Instrumentation/ Electronics and Communications /Computer Science/Mechanical Engineering or M. Sc degree in Physics / Electronic Science / Astrophysics/ Applied Mathematics / Applied Physics
are also eligible to apply)
5. Ph. D Astrophysics/Astronomy

Eligibility

» 10 +2 with PCM
» Entrance Tests (PhD from IUCAA):
1. IUCAA-NCRA Admission Test (INAT) Link Details: http://inat.ncra.tifr.res.in/inat
2. Joint Entrance Screening Test (JEST) Details: http://www.jest.org.in/
3. CSIR-UGC NET for JRF (Physics)

Institutes/ Universities

1. University of Delhi, Delhi
2. Indian Institute of Astrophysics, Bangalore
3. Indian Institute of Science, Bangalore
4. Raman Research Institute, Bangalore
5. Inter-University Centre for Astronomy and Astrophysics (IUCAA) – Pune
6. National Centre for Radio Astronomy - Tata Fundamental Research Institute – Pune.
7. Aryabhatta Research Institute of Observational Sciences (ARIES), Nainital
8. Harish-Chandra Research Institute (HRI), Allahabad
9. Osmania University, Hyderabad
10. Madras University, Chennai

AUTOMOBILE ENGINEERING

Introduction

The study of automotive engineering is to design, develop, fabricate, and test vehicles or vehicle components from the concept stage to production stage by incorporating various elements of engineering such as mechanical, electrical, electronic, software and safety engineering.

Courses

1. B. Tech in Automobile Engineering
2. Dual Courses
3. M. Tech in Automobile Engineering

Eligibility

» 10 + 2 with Science for B. Tech / B.E courses
» percentage of marks in Science subjects as specified is required to qualify engineering competitive exam.

Institutes/ Universities

1. University of Calicut, Malappuram,

Kerala.
2. Maulana Abul Kalam Azad University of Technology, West Bengal.
3. Rajasthan Technical University, Kota, Rajasthan

BIO MEDICAL ENGINEERING

Introduction

Biomedical engineering is the study of engineering as applied in the medical sector such as manufacturing prostheses, medical equipment, diagnostic devices and drugs. Professionals in this field are known as biomedical engineers. The biomedical engineers utilize the engineering methods and theories to enhance health care. Orthopaedic and rehabilitation engineering, molecular, cellular and tissue engineering are also a part of this discipline.

Courses

1. B.Sc. in Bio medical Science
2. B Tech in Biomedical Engineering
3. Dual Degree programmes
4. Ph. D programme in Bio medical science

Eligibility

» (10+2) examination with biology, maths and chemistry.
» For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration for the course is 4 years.

Institutes/ Universities

1. All India Institute of Medical Sciences New Delhi
2. Dr. B.R. Ambedkar Centre of Biomedical Research, University of Delhi,
3. Indian Institute of Technology (BHU) Varanasi
4. Department of Biomedical Engineering, (University College of Engineering) Osmania University, Hyderabad
5. Govt. Model Engineering College, Kochi, Kerala

BIO TECHNOLOGY ENGINEERING

Introduction

Biotechnology engineering is a branch of engineering where technology is combined with biology for research and development. Biotechnology involves wide range of subjects such as engineering, genetics, biochemistry, microbiology and chemistry.

There are various applications of biotechnology in fields such as animal husbandry, growth of vaccines and medicines, agriculture, pollution control, energy production and conservation, healing of prolonged disease and ecological conservation such as

1. Gene therapy
2. Tissue culture
3. Immune technologies
4. Genetic Engineering
5. drug design
6. Stem cell techniques
7. New DNA technologies
8. Photosynthetic efficiency
9. Enzyme engineering and technology

Courses

1. Diploma in Biotechnology Engineering
2. Bachelor of Engineering in Biotechnology
3. Bachelor of Technology in Bioprocess Technology

4. Bachelor of Technology in Biotechnology and Biochemical Engineering
5. Bachelor of Technology in Biotechnology
6. Master of Engineering in Biotechnology
7. Master of Technology in Biotechnology

Eligibility

» (10+2) examination with biology, maths and chemistry. For IITs, It is mandatory to qualify in the Joint Entrance Examinations (J.E.E). The duration for the course is 4 years.

Institutes/ Universities

1. IITs
2. Aarupadai Veedu Institute of Technology (AVIT), Chennai, Tamil Nadu.
3. Acharya Nagarjuna University (ANU), Guntur, Guntur, Andhra Pradesh.
4. Alagappa University, Karaikudi, Karaikudi, Tamil Nadu.

Amazing Facts

1. **The Popsicle was invented by 11 year-old Frank Epperson in 1905. He left his drink outside with a stir stick in it and he noticed that it had frozen. He applied for a patent in 1923 and named it "Epsicle." The name was later changed to Popsicle**
2. An earthquake on Dec. 16, 1811 caused parts of the Mississippi River to flow backwards.
3. The highest point in Pennsylvania is lower than the lowest point in Colorado.
4. There are only four words in the English language which end in"-dous": tremendous, horrendous, stupendous, and hazardous.
5. One pound of maple syrup can make eight pounds of candy or sugar.
6. Uranus is the only planet that rotates on its side.7. The peanut is not a nut, it is actually a legume.
8. A colony of bees have to fly almost fifty-five thousand miles and tap two million flowers to make one pound of honey.
9. Popped popcorn should be stored in the freezer or refrigerator as this way it can stay crunchy for up to three weeks.
10. In Czechoslovakia, there is a church that has a chandelier made out of human bones.
11. The first fruit eaten on the moon was a peach.
12. The name "Lego" came from the Danish word LEg Godt, which means "play well."
13. Female and male black bears cannot tolerate being around each other except when they breed.
14. Twelve men have landed on and explored the moon
15. Unlike a frog a toad cannot jump.
16. The average weight of a newborn baby is 7 lbs. 6 oz. For a triplet baby it is 3 lbs. 12 oz.
17. Baseball was the first sport to be pictured on the cover of Sports Illustrated.
18. A group of tigers is called a streak.
19. Hippos drink as much as 250 litres of water in any given 24 hour period.
20. 850 peanuts are needed to make an 18 oz. jar of peanut butter.
21. The Beatles have sold more records than anyone else with over a billion worldwide.
22. After the "Popeye" comic strip was launched in 1931, spinach consumption went up by thirty-three percent in the United States.
23. The largest type of penguin is the Emperor Penguin which can stand to be almost 3.5 feet tall and weigh more than 90 pounds.
24. Over 175 million cubic yards of earth was removed for the creation of the Panama Canal.
25. 7-Eleven was the first convenience store to have television advertising. The animated commercial ran in 1949 and had a singing rooster and owl.
26. A honey bee strokes its wings about 11,500 times a minute.
27. Sharks are so powerful that their bite can generate a force of up to 18 tons per square inch.
28. The designated instrument for the city of Detroit is the accordion.
29. Venus is the only planet that rotates clockwise.
30. There are approximately 2,700 different species of mosquitoes.

www.greatfacts.com/

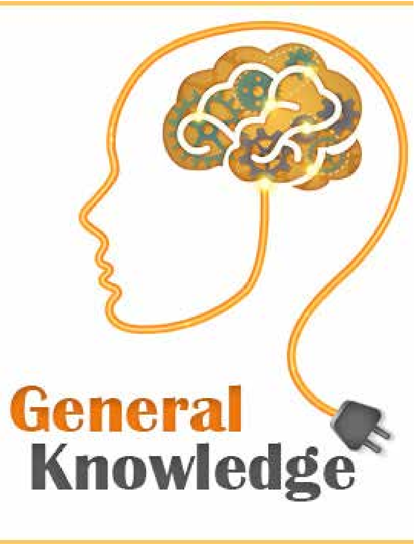

1. What word for a meeting or way of exchanging ideas was originally an Ancient Roman public square? **Forum**
2. Name the centrist French President elected in 2017? **Emmanuel Macron**
3. What is the cube root of 8? **2** (2 x 2 x 2 = 8)
4. The internet abbreviation TLD (eg .com and .net and .de) stands for what? **Top Level Domain**
5. What is the name of the popular MIT children's HTML programming website: Batch; Snatch; Scratch; or Catch? **Scratch**
6. 'Tesekkur ederim' means 'thank you' in which major language connecting Europe and Asia? **Turkish**
7. Ashkenazi are a people of which ethnicity: Indian; Mexican; Jewish; or Nordic? **Jewish**
8. An 'angle grinder' tool typically has a: Rocking saw; Spinning disc; Oscillating file; or Electric laser? **Spinning disc**
9. A traditional type of Turkish Delight confectionery is: Orchid; Tulip; Rose; or Dandelion? **Rose**
10. In 2016-17 which nation pursued tax fraud investigations against soccer personalities including Cristiano Ronaldo and José Mourinho? **Spain**
11. What is the title of a seaport professional who takes temporary command to dock a ship: Admiral; Commodore; Navigator; or Pilot? **Pilot**
12. Associated with magic, what is the ancient Norse alphabet of 2nd-14th centuries: Sanskrit; Runic; Turkik; or Wookiee? **Runic**
13. Which three of these must be present for rust to form: Iron; Water; Algae; Heat; or Oxygen? **Iron, Water, Oxygen**
14. Having a high value-to-weight ratio and now mostly virtual, what fundamental concept reputedly first emerged in Lydia (now Asian Turkey) in the 7th century BC? **Money**
15. What combat sport has a weapon with parts called a button, foible, forte, guard and pommel? **Fencing** (the sword)
16. Name the Italian film director Federico Fellini's 1960 movie, and popular expression, which translates to 'The Good Life' or 'The Sweet Life'? **La Dolce Vita**
17. At 2017 the world's largest container ship, 'OOCL Hong-Kong', holds how many 20ft containers: 2,140; 5,141; 8,012; or 21,413? **21,413**
18. Combining two major sciences, what is the study of the chemical composition of living organisms? **Biochemistry**
19. Roughly how many species of birds exist: 2,750; 8,600; 37,000; or 96,000? **8,600**
20. What is the traditional religious/ Greek name (meaning 'thanksgiving') for the Christian Holy Communion or Lord's Supper? **Eucharist**
21. The last Emperor of Russia, executed in 1918 by the Bolsheviks, was: Peter I; Nicholas II; Vladimir III; or Sergei IV? **Nicholas II**
22. What Mexican corn tortilla dish is named from the local meaning 'seasoned with chile pepper'? **Enchilada**
23. In summer 2017 Mattel launched fifteen new versions of which companion character including 'corn rows' and 'man bun'? **Ken** (Barbie's boyfriend)
24. What is the modern equivalent of Royal Navy's 1914-18 code: Queenie, Robert, Sugar, Tommy, Uncle, Vinegar, William, Xerxes, Yellow, Zebra? Quebec, Romeo, Sierra, Tango, Uniform, Victor, Whiskey, X-Ray, Yankee, Zulu **(the international phonetic alphabet, Q-Z)**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-267-general-knowledge/

Shiksha Saarthi Class Room

Lecture-1

Almost all the literature text books for students are a store of wisely chosen stories, articles, essays or interviews. Each text book has some pre decided objectives. Due to COVID-19 all the schools of country are closed for months now. Efforts are being made to keep students busy and safe at home. Online teaching learning programmes are going on country wide.

This article is also meant for learning. The main characters and theme of the N.C.E.R.T. English text book, Flamingo for class twelfth are being precisely discussed here. The first four lessons are here-

The last lesson by Alphonse Daudet: This is an interesting story which tells us the importance of one's mother tongue. French teacher, M.Hamel and his student Franz are the main characters in the story. Prussian army defeated French army and two districts of France, Alsace and Lorraine passed in to Prussian hands. Prussian rulers banned teaching of French in the schools of these two districts. M.Hamel has to leave the school.

Lost spring by Anees Jung: This story has two parts which describe the miserable condition of poor children. The first part of the story under sub heading, The Ragpickers describes the plight of the families who live in slums. Saheb e Alam and the writer Anees Jung are the main characters of this lesson. The second part of the story, The Bangle Makers takes us to Ferozabad where we meet a boy named Mukesh who is engaged in the work of bangle making but he wants to be a motor mechanic. Mukesh, his sister in law, his elder brother and his father are main characters of the story.

Deep Water by William Douglas This story is narrated by the writer himself, William Douglas. He tells us about an accident of childhood that how he was almost drowned in a pool. Though he was saved a fear of water stuck to him. Ultimately how did he overcome his fear of water?

*The Rattrap written by Selma La-

gerlof* The story The Rattrap shows that how our greed can get us caught in a Rattrap. The protagonist of the story symbolises the human predicament and keeps saying that the whole world was like a big rattrap; some have already been caught in this trap and others are circling around the bait. The main characters in the story are the Rattrap Peddler, The Crofter, The ironmaster and his daughter Edla.

Lecturer-2

In our series of The Shiksha Saarthi class room, we shall discuss the main theme and main characters of the first four lessons of book Vistas prescribed for class 10+2.

The first lesson of Vistas is *The Third Level written by Jack Finney.* The main character of the story is Charley. He lives somewhere around New York Central. He often goes to his work through the subway of Grand central station. The station has only two levels but one day Charley found the third level of the station which took him to the past period. Charlie shared his experience with his psychiatrist friend, Sam. Sam said that it was just his day dreaming. The story successfuly depicts the modern era which is full of fear and fantasy.

The second lesson is *The tiger king written by Kalki.* which is based on a prediction. An astrologer foretold on the birth of a royal child that he would be killed by a tiger. If the prince could kill one hundred tigers he might be saved. This prince became the king of Pratibimbpuram and because of his hunting of many tigers, he was popularly known as Tiger king. He did his best to kill one hundred tigers and killed ninety nine tigers, but the hundredth tiger became a cause of his death. The writer has successfully shown how cruel human beings are towards animals.

Chapter third of the book is *Journey to the end of Earth by Tisani Doshi*. It describes the writer's journey to Antarctica with 52 students under the leadership of a Canadian, Geoff Green. The writer wants to tell us that we should visit Antarctica for knowing the present, past and future of the Earth. She also warns about the climatic changes due to our behaviour. She talks of global warming and its possible effects on the lives on the Earth.

The fourth lesson of Vistas is *The Enemy written by Pearl S. Buck.* This story is about a Japanese doctor named Dr. Sadao who save the life of a soldier of the enemy country's army since he finds it his duty as a doctor is to save lives. Sadao could be behind the bars for his act of saving an enemy but he chooses the way of humanity and saves the life of the enemy soldier. This story teaches one to be a world citizen. The main characters of the story are doctor Sadao, his wife, Hana, the maid at the doctor's house and the soldier of the enemy's army.

Shri Bhagwan Bawwa
Lecturer in English
Govt.Sr.Sec.School, Lukhi,
Rewari

आदरणीय संपादक जी,
सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक पढ़ने का अवसर मिला। कोरोना काल में जब सब कुछ लॉकडाउन के कारण बंद था, तो ऐसे वक्त में पत्रिका का एक-एक शब्द पढ़ डाला। विश्व महामारी के हालात में प्रदेश में शिक्षण कार्य किस प्रकार से दूरवर्ती शिक्षा कार्यक्रम से हो रहा है, इसकी विशद जानकारी पत्रिका से मिली। मज़दूरों की व्यथा को उकेरती डॉ.महावीर सिंह की कविता 'मजबूर हालात' मन को छू गई। 'विश्व धरोहर दिवस' के अवसर पर पत्रिका में प्रकाशित प्रमोद दीक्षित 'मलय' का लेख 'काल के भाल पर संस्कृति का किरीट है विरासत' बहुत पसंद आया। एक सफल पत्रिका के लिए विभाग को बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. सुमन कादयान
बी-180, मार्बल सिटी, बरवाला रोड़
हिसार, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय,
सप्रेम नमस्कार।

कोरोना जन्य आपदा में प्रदेश का विद्यालय शिक्षा विभाग किस प्रकार से दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षित करने का प्रयास कर रहा है, इसी जानकारी पत्रिका ने पूरे विस्तार से दी। मुखपृष्ठ पर छपी तस्वीर से लेकर संपादकीय तथा अन्य लेखों में इस संकट काल में न केवल शिक्षक की भूमिका की सशक्त झांकी मिली, वहीं प्रदेश सरकार, विभाग के उच्चाधिकारियों की कर्मशीलता भी दिखाई दी।

आदरणीय अतिरिक्त मुख्य सचिव महोदय की कविता 'मजबूर हालात' कोरोना संकट काल का कटु सत्य बयां करती, पाठक के अन्तःकरण को झकझोरती है जो हमारी सामाजिक व्यवस्था का यथार्थ है। भारत के मेहनतकश वर्ग, किंतु मजबूर मजदूर वर्ग ने जो इन दिनों भुगता, सहा उसे देखकर ही डॉ.महावीर जी का हृदय इतना व्याकुल हुआ कि उनकी वेदना को उनके कवि हृदय ने काव्य रूप दे दिया। इस मर्मस्पर्शी रचना के लिए उन्हें साधुवाद।

'बाल सारथी' हमेशा की भाँति बच्चों के लिए ज्ञान-विज्ञान एवं मनोरंजन की सामग्री से भरपूर था। दर्शन बवेजा अपने लेख में जिन गतिविधियों का जिक्र करते हैं वे सब बच्चे अपने घर पर ही सरलता से कर सकते हैं। कुल मिलाकर एक सफल अंक के लिए पत्रिका के संपादक मंडल को बधाई।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय एमपी रोही
फतेहाबाद, हरियाणा

प्यारी तितली

सुन तितली, ओ प्यारी तितली
तू फिरती उड़ती-उड़ती
रंग-बिरंगे पंख तेरे
ललचाए, जिसकी भी नज़र पड़ी
हुए पकड़ने को लालायित
क्या बच्चे, क्या उम्रदराज़
निःशब्द विचरती उपवन-उपवन
नहीं सुनी तेरी आवाज़
है तुझमें ये उमंग भरी
या फिर जी लेने का जुनून
खोज रही हर पल्लव-प्रसून
दीर्घायु का मंत्र मजमून
फूलों-फूलों चलकर
करती बातें अंतहीन
जीवन रस लेने से पहले
हो जाती तू कहाँ विलीन
तेरी सुन्दरता पर रीझे हम ऐसे
इतना भी तो नहीं विचारा
सबको खुशदिल करने वाली
तेरा जीवन सिर्फ इक पखवाड़ा।

-धीरा खंडेलवाल

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

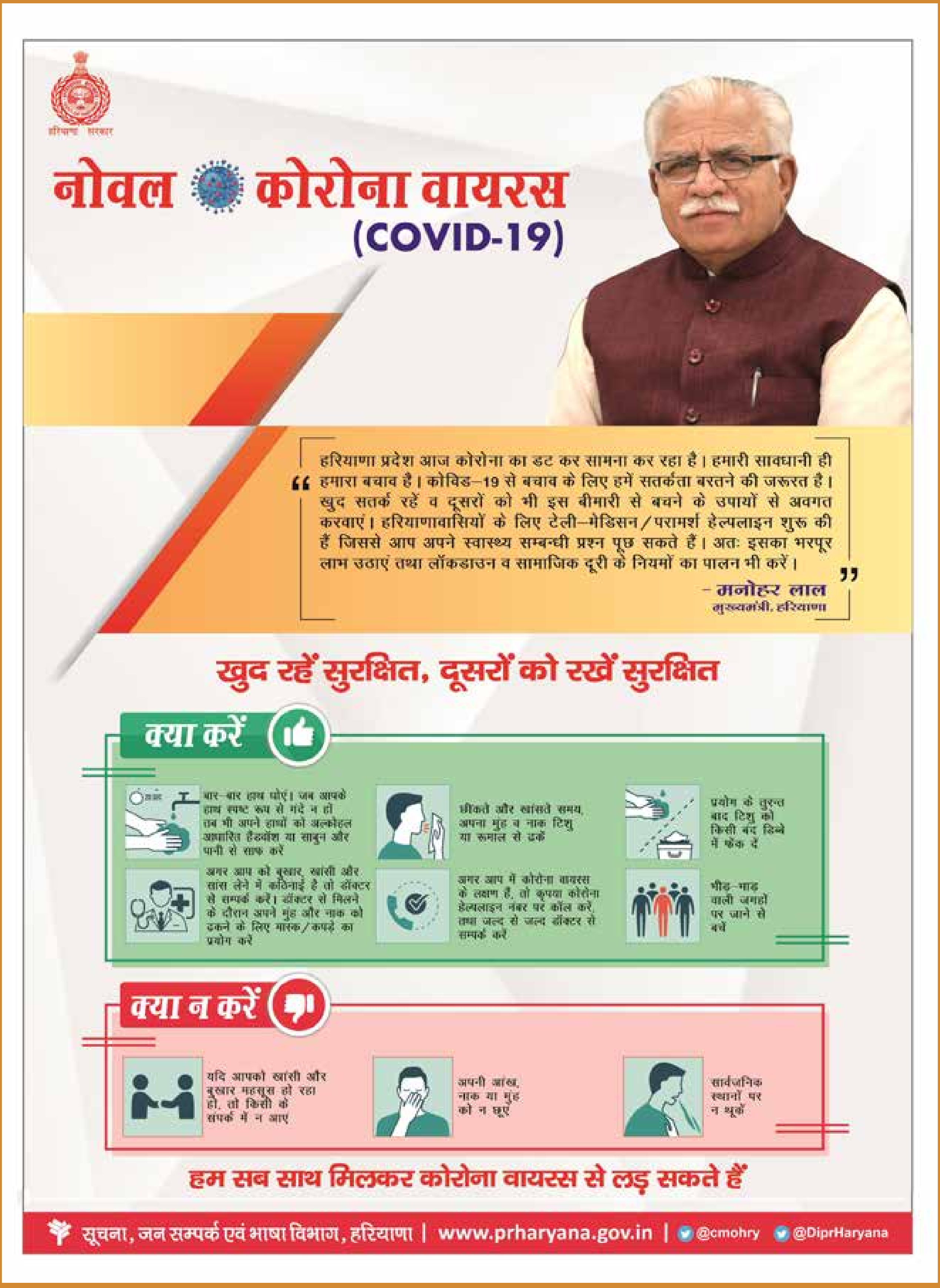

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114